वर्ष 47 अंक: 6 28.12.2024 शनिवार (नंवबर-दिसंबर) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

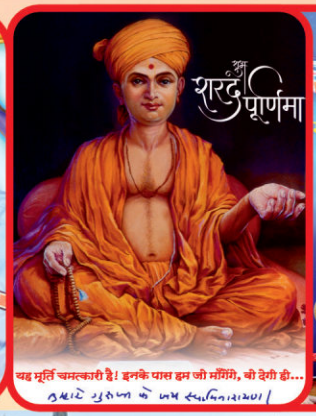

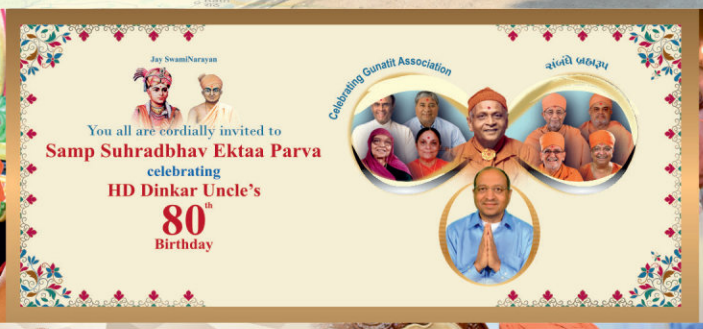

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

1 दिसंबर – छविया तीर्थधाम आगमन...

चरण सरोज तुम्हारे वंदु कर जोड़ी... जय जय सद्गुरु स्वामी!

घनश्याम महाराज की आरती के दर्शनार्थ...

सेवा, भक्ति और माहात्म्य से भरपूर छविया तीर्थधाम यात्रा...

गुणातीत स्वरूपों के निरामय स्वास्थ्य हेतु
घनश्याम महाराज के प्राकट्य स्थल पर धुन-प्रार्थना...

पटेश्वर महादेव मंदिर—घनश्याम महाराज अपने परिवार सहित महाशिवरात्रि के मंगलकारी दिन यहाँ जलाभिषेक करने तथा मेला देखने पधारे थे।

महादेव के हृदय में घनश्याम महाराज से मिलने की इच्छा जागी, तो वे भेष बदलकर उनके समक्ष आए। घनश्याम महाराज ने तुरंत ही शिवशंभु को पहचान लिया और उनसे अपने मूलस्वरूप में दर्शन देने की प्रार्थना की। तब अपने वास्तविक स्वरूप में घनश्याम महाराज को **आलिंगन** देकर महादेव अदृश्य हो गए।

गौ घाट—घनश्याम महाराज 3 वर्ष की आयु में यहाँ गाय चराने आते थे। एक दिन वे अपने मित्र मंडल सहित **गौरी, कपिला** व **गोमती** गाय को चराने लेकर आए। घास चरते-चरते गोमती गाय को प्यास लगी। सखाओं ने घनश्याम महाराज से पानी की व्यवस्था करने के लिए कहा। घनश्याम महाराज ने नज़दीक ही बहती विश्वामित्री नदी की ओर इशारा किया, लेकिन सखाओं ने तो वहीं पर जल स्रोत उत्पन्न करने के लिए कहा। तब यहाँ घनश्याम महाराज ने अपने दाहिने पांव के अंगूठे से धरती को दबा कर जल की धारा उत्पन्न की।

भूतिया कुआँ—**घनश्याम महाराज** अपनी माँ **भक्तिमाता** के साथ **चंदन मौसी** के घर गए थे। वहाँ एक श्रापित कुआँ था, जिसमें भूत निवास करते थे। एक दिन भक्तिमाता कुएँ से पानी भरने गईं, तो भूतों ने उनकी बाल्टी नीचे खींच ली। भक्तिमाता भयभीत हो गईं और इस घटना की सूचना घनश्याम महाराज को दी। अगले दिन घनश्याम महाराज अपने सखाओं के साथ कुएँ के पास गए और उसमें कूदने की इच्छा व्यक्त की। मित्रगण ने मना किया, पर घनश्याम महाराज ने तो उसमें छलांग लगा दी। तब सारे भूत कूएँ से बाहर आ गए और घनश्याम महाराज के समक्ष हाथ जोड़ कर 'प्रेत योनि' से मुक्त कराने की प्रार्थना की। घनश्याम महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देकर 'ब्रह्रिकाश्रम' में भेज दिया।

खांपा तलावडी—यहाँ पर **घनश्याम महाराज** पेड़ से नीचे उतर रहे थे कि तभी नूकीली डाल से उनकी जांघ पर चोट लग गई और खून बहने लगा। घनश्याम महाराज को पीड़ा में देख कर साक्षात् **वैद्यराज अश्विनीजी** प्रगट हुए और उनका उपचार किया। घनश्याम महाराज के परिवार वाले इस घटना के पता चलने पर अत्यंत दुःखी हो गए। घर पहुँच कर घनश्याम महाराज ने पट्टी खोल कर सबको दिखाया, तो वहाँ कोई ज़ख्म नहीं था केवल चोट का निशान था।

इस प्रसंग का वर्णन **भगवान स्वामिनारायण** ने **वचनामृत गढडा प्रथम 37 – 'देशवासना और ग्यारह पदवी'** में स्वयं किया है—

*अपनी जांघ पर चोट के निशान को जब भी देखता हूँ, तो **छपिया** के पेड़ और तालाब इत्यादि की स्मृति हो जाती है। जन्मभूमि और अपने सगे-संबंधियों को अंतर में से विस्मृत करना बहुत कठिन है...*

श्री घनश्याम महाराज की प्रसादी का कुआँ

श्री घनश्याम महाराज के पैतृक घर का कुआँ, जहाँ बचपन में वे स्नान करते थे।

मीन सरोवर—घनश्याम महाराज ने इस सरोवर की मछलियों को मछुआरे के जाल से मुक्त करके उन्हें पुनः जीवित किया था और... मछुआरे को नरक का दर्शन करा कर कहा—

भगवान ने जीवों को बनाया है, उनके जीवन पर भगवान का ही अधिकार है।

तुम मछलियों को ज़िंदा नहीं कर सकते, तो मारने का भी अधिकार नहीं है। हिंसा पाप है व प्राणियों पर दया करना पुण्य है।

जंगलेश्वर महादेव मंदिर, लोहगजरी

घनश्याम महाराज के समय इस स्थान पर बगीचा था। **भोलेनाथ** के इस मंदिर के मुख्य पुजारी **संध्यागिरीजी महाराज** थे। बगीचे में नागों के वास और उनके आतंक के कारण मंदिर में कोई आ नहीं पाता था, केवल पुजारीजी ही पूजा करने आते थे। घनश्याम महाराज के पिता **धर्मदेवजी** पुजारीजी के मित्र थे।

एक दिन वे धर्मदेवजी से निवेदन करने गए कि घनश्याम महाराज को बगीचे में लाकर नागों के आतंक से मुक्ति दिलाएँ। घनश्याम महाराज यहाँ पधारे और **गरूड़ देवजी** का आवाहन किया।

तब गरूड़ देवजी के साक्षात् प्रकट होने पर नागों ने भय से पाताल लोक की ओर प्रस्थान किया।

श्रवण तालाब—यह वही स्थान है जहाँ शब्दभेदी बाण द्वारा **राजा दशरथ** के हाथों भूल से **श्रवण कुमार** का वध हुआ था। यहाँ आँखों के एक वैद्य थे, जो केवल धनवान लोगों का ही उपचार करते थे। कुछ असहाय व निर्धन लोग उनके पास इलाज करवाने के लिए आते, तो वे उन्हें मना कर देते। एक दिन **घनश्याम महाराज** परिवार सहित यहाँ मेला देखने पधारे। निर्धन पीड़ितों ने घनश्याम महाराज से प्रार्थना की। तब अपनी दिव्य दृष्टि से उन्होंने सभी को नेत्रज्योति प्रदान की और लालची वैद्य की नेत्रज्योति क्षीण हो गई। वैद्य को अंतर्दृष्टि हुई कि उसके दुष्कर्मों व लालच के कारण ही उसकी यह दशा हुई है। घनश्याम महाराज के पास जाकर उसने क्षमायाचना की। प्रार्थना स्वीकार करके घनश्याम महाराज ने उसकी नेत्रज्योति लौटा दी।

कल्याण सागर — **घनश्याम महाराज** के समय 'नरैचा' गांव के **राजा सम्मानसिंह** की बेटी की शादी थी। चारों ओर खुशी का माहौल था। आतिशबाज़ी हो रही थी और राजा के सिपाही हवा में गोलियाँ चला रहे थे। दुर्घटना वश एक सिपाही के हाथ से बंदूक छूट गई और दो लोगों की मृत्यु हो गई। खुशी का माहौल मातम में तबदील दो गया। राजा व गांववासी घनश्याम महाराज की शरण में गए।

घनश्याम महाराज बोले— *'कोई भी व्यक्ति तुरंत ही नहीं मरता, कुछ क्षण तक उसकी देह में प्राण शेष रहते हैं। दोनो व्यक्तियों को तालाब में सुला दो...'*

गांव वालों ने आज्ञा अनुसार दोनों को इस तालाब में लिटा दिया। फिर घनश्याम महाराज यहाँ पधारे और एक पत्थर पर खड़े होकर दोनों व्यक्तियों को उनके नाम से संबोधित करते हुए कहा— ***'हे पृथ्वीपात-गदाधर!** तुम तालाब में क्यों सो रहे हो, बाहर आओ...'*

घनश्याम महाराज की आवाज़ सुन कर, दोनों जीवित होकर तालाब में से बाहर आए। पृथ्वीपात व गदाधर का यहाँ कल्याण हुआ था, इसलिए यह स्थान **'कल्याण सागर'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

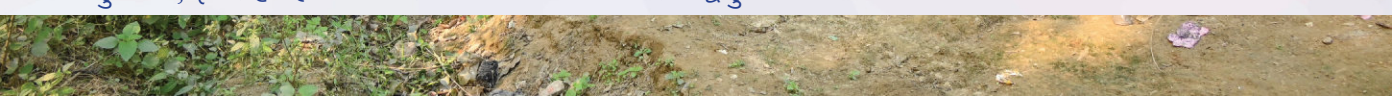

श्री राम जन्मभूमि – अयोध्या की सरयू नदी के 'गुप्तार घाट' पर...

सरयू नदी में नौका विहार...

नारायण सरोवर पर सत्संग सभा...

पू. बिनोदभाई शाह को उनके 75वें जन्मदिन निमित्त शाल अर्पण...

नारायण सरोवर पर 'स्वामिनारायण' मंत्र जाप सहित प्रदक्षिणा...

पू. भानूप्रतापजी के घर पधरावनी...

छपिया मंदिर की स्मृतियाँ...

सेवा, भक्ति और माहात्म्य से भरपूर छपिया तीर्थधाम यात्रा

3 अप्रैल 1781 को उत्तर प्रदेश के **'छपिया'** गाँव में **श्री धर्मदेव-भक्तिमाता** के घर **घनश्याम पांडे** के रूप में **स्वामिनारायण भगवान** का प्रादुर्भाव हुआ था। माता-पिता के देहत्याग के बाद, वर्ष 1792 में 11 वर्ष की आयु में उन्होंने भारत वर्ष में सात साल की तीर्थ यात्रा आरंभ की। इस यात्रा के दौरान, **नीलकंठ वर्णी** के रूप में उन्होंने अनेकों का कल्याण किया। 9 वर्ष और 11 महीने की यात्रा करने के बाद सन् 1799 में गुजरात प्रांत के **'लोज'** गाँव में पधारे। मनुष्य के जीवन में गुरु का क्या महत्त्व है, वह समझाने हेतु गुरु रामानंदस्वामीजी के शिष्य बने। **28 अक्तुबर 1800** को **गुरु रामानंदस्वामी** ने उन्हें अपने उद्धव संप्रदाय में शामिल करते हुए, भागवती दीक्षा देकर **'सहजानंदस्वामी'** नाम और **'ब्रह्महं कृष्णदासोऽस्मि'** मंत्र दिया। जिसका अर्थ है **'मैं ब्रह्म हूँ, पर भगवान का सेवक।'** गुरु रामानंदस्वामी ने अपने देहत्याग से पहले ही श्री सहजानंदस्वामी को उद्धव संप्रदाय का नेतृत्व सौंप दिया था। 1801 में संप्रदाय के आध्यात्मिक प्रमुख के रूप में गुरु रामानंदस्वामी का स्थान लेने के उपरांत, श्री सहजानंदस्वामी ने दिनाँक 31 दिसंबर 1801 को गुजरात के **'फरेणी'** गाँव में एक सार्वजनिक सभा के दौरान स्वयं अपने मुख से **षडाक्षरी महामंत्र 'स्वामिनारायण'** का उद्घोष किया। गुरु रामानंदस्वामी के शिष्य शीतलदासजी 'स्वामिनारायण' मंत्र का उच्चारण करने पर अर्धचेतन अवस्था में चले गए। जब वे समाधि से बाहर आए, तो उन्होंने सभा के अन्य लोगों को अपना दिव्य अनुभव बताया। तब अन्यों ने भी सहजानंदस्वामी से अनुरोध किया कि वे उन्हें भी वह अनुभव कराएँ। सहजानंदस्वामी ने सभी को 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करने का निर्देश दिया और पूरी सभा ने दिव्य अनुभूति की। इसके बाद, सहजानंदस्वामी ने अपने सभी अनुयायियों को अपनी दैनिक पूजा में स्वामिनारायण महामंत्र का जाप करने का आदेश दिया और आशीर्वाद दिया कि जो कोई भी इसका जाप करेगा, वह अपने सभी आध्यात्मिक व व्यावहारिक लक्ष्यों को प्राप्त करेगा। सो, स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रित भक्तजन पूजा करने, संकट दूर करने, दूसरों के कल्याण के लिए प्रार्थना करने और जीवन के अंत समय में स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते हैं।

स्वामिनारायण मंत्र दो शब्दों का मिश्रण है, स्वामी (एक दीक्षित साधु) और नारायण अर्थात् परब्रह्म पुरुषोत्तम। 'स्वामी' नारायण के विशेषण को दर्शाता है, जिस रूप में भगवान ने अवतार लिया। 'नारायण' पुरुषोत्तम या भगवान को दर्शाता है, जिसे सहजानंदस्वामी माना जाता है। वे **'भगवान स्वामिनारायण'** के रूप में पूजे जाते हैं।

1992, 1996 और 2006—तीन बार प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों को साथ लेकर, छपिया तीर्थ धाम का दर्शन करने गए थे। बाद में कई नए मुक्त भी मंदिर से जुड़े हैं, तो

संतों-सेवकों ने विचार किया कि **1 से 5 दिसंबर 2024 प.पू. गुरुजी** के सान्निध्य में भगवान स्वामिनारायण के प्राकट्य स्थल छपिया और उनके प्रासादिक स्थलों का दर्शन करके धन्य हों और स्वरूपों के निरामय स्वास्थ्य हेतु धुन-भजन करें। अतः सबके रहने-खाने इत्यादि की व्यवस्था हेतु अगस्त महीने में पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी के साथ कुछ मुक्त अयोध्या-छपिया का सर्वेक्षण करने गए। प.पू. गुरुजी व भक्तों के लिए आवश्यक सुविधाओं का निरीक्षण करने के बाद, प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पू. राकेशभाई शाह ने छपिया धाम का माहात्म्य बता कर यात्रा की ज़रूरी सूचनाएँ दीं। अक्तुबर तक दिल्ली, हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश के करीब 200 मुक्तों ने नाम लिखवा कर, Flight, train व Bus से जाने के लिए booking करवा ली। **प.पू. दिनकर अंकल** एवं **प.पू. वशीभाई** ने भी साथ में आने की योजना बनाई।

10 नवंबर को 'पप्पाजी फार्म' पर गुरुहरि पप्पाजी के 108वें प्राकट्य पर्व में शामिल होने के बाद, इन मुक्तों के साथ छपिया जाने की प.पू. गुरुजी को बहुत उमंग थी... परंतु, 14 नंवबर को pacemaker लगाने के कारण डाक्टर्स ने उन्हें आराम करने की सलाह दी। सबने सोचा कि छपिया यात्रा का क्या करें? फिर तय हुआ कि प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु श्री घनश्याम महाराज से प्रार्थना करने **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** के साथ छपिया जाना है। **प.पू. गुरुजी एवं भक्तों के प्रति अपनी भक्ति अदा करने हेतु प.पू. दीदी ने भी साथ में चलने के लिए कहा। जबकि तीन महीने पहले ही उनकी hip replacement की major surgery हुई थी। पर, हमेशा की तरह अपनी देह की बजाय उन्होंने सेवा-भक्ति को प्राथमिकता दी। प.पू. दिनकर अंकल** भी **पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. संकेतभाई** व **पू. एन्जी बहन** के साथ छपिया आने के लिए तैयार हुए। शिबिर दौरान पहनने के लिए **पू. आशीष शाह** ने श्री घनश्याम महाराज, छपिया मंदिर एवं प.पू. गुरुजी के प्रतिमा लगा कर विशिष्ट badge बनाया। उस पर **प.पू. गुरुजी** ने प्रार्थना रूप निम्न सूत्र लिखवाया—

गुणातीतभाव प्रगटा कर महाराज को धरा पर अखंड रखें...

छपिया जाने के लिए **29 नवंबर** की सुबह 7:00 बजे advance team दो गाड़ियों से रवाना होकर सायं 6:00 बजे तक छपिया पहुँची। Bus से जाने वाले मुक्त **1 दिसंबर** की सुबह 7:00 बजे तक मंदिर पहुँच गए। सबको दर्शन देने के लिए प.पू. गुरुजी 'जेतलपुर' cabin में विराजमान रहे। यह पहली बार ऐसा हुआ कि प.पू. गुरुजी की अनुपस्थिति में इतने सारे हरिभक्त जा रहे थे। सो, सहज ही अंतर से सब मायूस भी थे, लेकिन मन में भावना भी थी कि प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य अच्छा रहे, उसके लिए भजन-प्रार्थना करनी है—सच्ची भक्ति है। छपिया धाम यात्रा का संचालन कर रहे **पू. राकेशभाई शाह** ने रवाना होने से पूर्व **प.पू. गुरुजी** से प्रार्थना की—

हम पहली बार इतने बड़े ग्रुप को साथ ले जा रहे हैं, लेकिन आप हमारे साथ नहीं हैं। तो, ***आप हमारे साथ रह कर हमें guide करते रहना*** *और किसी भी हरिभक्त को कोई तकलीफ़ न हो, सब आनंद में रहते हुए बहुत अच्छी स्मृतियाँ लेकर आएँ...*

प.पू. गुरुजी ने तुरंत ही कहा—***काकाजी करवा देंगे...***

वाक़ई, गुरुहरि काकाजी के आशीर्वाद से **प.पू. दिनकर अंकल, पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** व **प.पू दीदी** के द्वारा **प.पू. गुरुजी** इस यात्रा में साथ ही थे, ऐसी सबको प्रतीति होती रही।

1 दिसंबर को **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी-पू. सरयूविहारीस्वामी** कुछ मुक्तों तथा **प.पू. दीदी,** कुछ बहनों के साथ flight से अयोध्या Airport पहुँच कर, सायं 5:00 बजे तक छपिया पहुँचे। सायं करीब 7:00 बजे **प.पू. दिनकर अंकल** का आगमन हुआ। **संतभगवंत साहेबजी** से खूब घनिष्ठता से जुड़े छपिया के स्थानीय हरिभक्त **पू. भानुप्रतापजी** अपने परिवार के साथ आए थे। उन्होंने **प.पू. दिनकर अंकल, पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** को एवं उनकी पत्नी **पू. आकांक्षा** ने **प.पू. दीदी** को हार अर्पण करके अभिवादन किया। सुबह 7:30 बजे दिल्ली मंदिर से चली 'अक्षरा' और 'आनंदी'—दो बसें रात को करीब 11:30 बजे छपिया मंदिर पहुँचीं। इन सबकी राह देखते हुए प.पू. दीदी भी जगी हुई थीं और इनके प्रसाद लेने के बाद ही वे आराम में गईं।

अगले दिन—**2 दिसंबर** को सुबह 5:30 बजे मंगला आरती और फिर 7:15 बजे शृंगार आरती के दर्शन करके सबने नाश्ता किया। तत्पश्चात् 9:00 से 12:30 बजे तक कुछ मुक्त पाँच-छः स्थानीय गाड़ियों से श्री घनश्याम महाराज के प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने गए। इस दौरान प्राकट्य स्थल के नज़दीक कुछ हरिभक्तों-प.पू. दीदी, बहनों-भाभियों के साथ बैठे **प.पू. दिनकर अंकल** ने सहज ही भगवान स्वामिनारायण के प्राकट्य स्थल, प्रगट संत तथा भक्तों के माहात्म्य की बातें करते हुए निम्न आशीर्वाद दिया—

...हम कितने भाग्यशाली है कि इस जगह पर आए। इतने बड़े भगवान इतनी छोटी जगह में प्रकटे! 11 साल की उम्र में गृह त्याग करके निकल गए। न पाँव में जूते न सिर पर टोपी; सिर्फ एक कोपिन भर देह से हिमालय जाकर तप किया। भगवान ने जो तप किया, उसका प्रताप पूरे विश्व में नज़र आता है। हम जितनी उसकी महिमा समझेंगे, उतना हमें फ़ायदा होगा।

तत्पश्चात् प.पू. दिनकर अंकल की आज्ञा से **प.पू. दीदी** ने प्रगट की महिमा बताते हुए प्रार्थना की—

...दिनकर दादा ने छपिया की महिमा बढ़ाई है। हम कल रात को यहाँ आए और आज दिनकर दादा से सुनी माहात्म्यभरी बातों से प्रसादी के स्थानों का दर्शन करने की हमारी दृष्टि ही अलग हो जाएगी। दृष्टि को दिव्यता में बदलने का कार्य सत्पुरुष करते हैं...

गुरुजी ने हमें सत्पुरुष की महिमा बताई है। इस बार तबीयत के कारण गुरुजी का आना नहीं हुआ। दिनकर अंकल चाहते तो वे भी आने के लिए मना कर सकते थे, लेकिन हमारे लिए ख़ास आए... जो महाराज और स्वामी—अक्षरपुरुषोत्तम धरती पर आए, वे ही हमें प्रत्यक्ष स्वरूपों के रूप में मिले हैं—इस प्रकार हम निहारेंगे, तो कई गुणा फ़ायदा होगा...

इस छोटी सभा के उपरांत प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. दीदी एवं उनके साथ कुछ मुक्त भी प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने गए। तब पू. भानुप्रतापजी ने सभी स्थलों की महिमा बहुत अच्छी तरह समझाई। करीब दोपहर के दो-ढाई बजे तक प्रासादिक स्थलों का दर्शन करके, छपिया मंदिर पहुँच कर प्रसाद लेने के बाद कुछ मुक्त विश्राम में गए, कुछ मंदिर के सामने नारायण सरोवर पर भजन एवं प्रदक्षिणा करने गए। सायं 4:00 बजे अल्पाहार लेने के बाद कई मुक्त दोनों मंदिरों में धुन करने गए। संध्या और शयन आरती के बाद सब भोजन स्थल पर एकत्र हुए। प्रसाद लेने के बाद **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** की निश्रा में सभा का आयोजन हुआ। **पू. शैलेषभाई आचार्य, पू. ऋषभ गोयल** एवं **पू. अमित शुक्ला** ने भगवान स्वामिनारायण के जीवन पर आधारित भजन गाकर मानो प्रभु की दिव्य हाज़िरी का एहसास करा दिया। तत्पश्चात् **पू. पुनीत गोयलजी** व **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** ने प्रगट प्रभु के संबंध का माहात्म्यगान किया। इसी दौरान **पू. भानुप्रतापजी के घर प.पू. दिनकर अंकल** व **प.पू. दीदी कुछ मुक्तों के साथ पधरावनी करने गए हुए थे।** वहाँ पू. भानुप्रतापजी एवं उनके परिवार ने आत्मीयता से स्वागत-सत्कार किया। किस प्रकार **संतभगवंत साहेबजी** का प्रथम दर्शन पू. भानुप्रतापजी के परिवार को हुआ, आज उनके जीवन में संतभगवंत साहेबजी का क्या स्थान है, किस प्रकार वे सुखी हो गए, उसका वर्णन किया। पू. भानुप्रतापजी के परिवार का भाव ग्रहण करके प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. दीदी एवं साथ गए मुक्त मंदिर लौटे और प्रसाद लेकर विश्राम करने गए।

अगले दिन **3 दिसंबर** की सुबह मंगला व शृंगार आरती का दर्शन करके, नाश्ता करने के बाद नौ बजे अयोध्या के लिए रवाना हुए। श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर में **'श्री राम लला'** की सौम्य मूर्ति की जो प्राण प्रतिष्ठा हुई, उस पवित्र स्थल का दर्शन करने सभी करीब सुबह 11:00 बजे पहुँचे। दर्शन करने के पश्चात् वहाँ के Arundhati Parking Area में बने **'अरुन्धती'** रेस्तरां में श्री ठाकुरजी का थाल करके सबने प्रसाद लिया। संयोगवश रेस्तरां के मालिक **पू. विनयभाई पटेल** मूलतः करमसद-गुजरात के हैं, लेकिन कई पीढ़ियों से अयोध्या में रहते हैं। प्रथम परिचय होने के बावजूद भी बहुत अच्छी व्यवस्था करवा कर उन्होंने अपने संस्कारों का परिचय दिया।

अयोध्या में सरयू नदी के किनारे बने 51 घाटों में से **'गुप्तार घाट'** का सबसे ज्यादा महत्व

है। **प्रभु श्री राम की लीलाओं में से अंतिम लीला भगवान ने यहीं की थी। यहाँ उन्होंने 'जल समाधि' ली थी।** सो, प्रसाद लेने के बाद सभी करीब 4:00 बजे वहाँ पहुँचे। **अयोध्या निवासी पू. शैलेन्द्र विक्रम सिंहजी** जो प.पू. गुरुजी के दर्शन से प्रभावित होकर सत्संग से जुड़ गए हैं, उन्होंने बहुत अपनेपन से 'गुप्तार घाट' पर भक्तों के लिए व्यवस्था की थी। यहाँ धुन करके नौका विहार और अल्पाहार किया। पू. शैलेन्द्रजी के मित्र **श्री भूपेश पान्डेजी**; जो दिल्ली में रहते हैं, वे किसी काम से लखनऊ आए थे। वे भी संतों का दर्शन करने के लिए घाट पर पधारे। सायं 6:00 बजे सरयू नदी की संध्या आरती करने के पश्चात् रात को 8:00 बजे छपिया लौटे और प्रसाद लेकर विश्राम में गए।

4 दिसंबर को श्री घनश्याम महाराज के प्रासादिक **'नारायण सरोवर'** पर भगवान स्वामिनारायण की स्मृति करते हुए **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीर्वाद दिया, **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, पू. गुरुबक्शसिंहजी** (लुधियाना), **पू. राजेश खन्नाजी** (दिल्ली) ने स्वरूपों के स्मृति प्रसंग कह कर प्रार्थना की। प.पू. दिनकर अंकल की निश्रा में स्वामिनारायण धुन करते हुए सरोवर की तीन प्रदक्षिणा की। इसी दिन दोपहर की flight से **प.पू. दीदी** दिल्ली गए और **प.पू. दिनकर अंकल** अमदावाद गए और वहाँ से पवई मंदिर से जुड़े मुक्तों के साथ शिविर के लिए **कच्छ-भुज** गए। मुक्तों को भगवान स्वामिनारायण की निष्ठा दृढ़ कराने के लिए, **80 वर्षीय प.पू. दिनकर अंकल** दिन-रात जो परिश्रम करते हैं, वह देख कर हमारा दिल नतमस्तक हो उठता है और प्रार्थना होती है कि हे प्रभु, हे काकाजी... आपको धरती पर जीवंत रखने के लिए हमें मिले स्वरूप खूब ज़हमत उठाते हैं, तो उनका स्वास्थ्य सदैव निरामय रहे और वे वर्षों तक प्रभु के सुख से हमें सुखी करते रहें। 4 दिसंबर की रात को प्रसाद लेने के बाद बहनों-भाभियों ने मिल कर आनंद किया और वे सब काफ़ी नज़दीक आए।

5 दिसंबर की सुबह मंगला-शृंगार आरती का दर्शन और नाश्ता करके 8:30 बजे के करीब Bus तथा गाड़ियों से अधिकांश मुक्त दिल्ली के लिए रवाना हो गए। दोपहर की Train से कुछ दिल्ली, तो कुछ पंजाब के लिए रवाना हुए और **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी-पू. आनंदस्वरूपस्वामी** सहित कुछ मुक्त flight से शाम तक दिल्ली पँहुच गए।

प.पू. गुरुजी की दिव्य हाज़िरी से भरपूर छपिया तीर्थधाम यात्रा आनंदमय इसलिए बनी कि सिर्फ प.पू. गुरुजी को राज़ी करने और मुक्तों में उन्हें ही निहारने की भावना से स्वयंसेवकों ने आयोजन ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक बन कर सेवा की। अतः यह सेवा, भक्ति और माहात्म्य की यात्रा थी।

गुरुहरि पप्पाजी के 108वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

10 नवंबर 2024—चिरंजीव स्वरूप गुरुहरि पप्पाजी के 108वें प्राकट्योत्सव निमित्त सभा...

'गुरुहरि पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व' पर अभिवादन...

‘गुरुहरि पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व’ निमित्त बहनों द्वारा भावार्पण...

अमदावाद के मुक्तों के घर पधरावनी...

पू. शैलेशभाई शाह

पू. भाविनभाई ठक्कर

पू. अशोकभाई ठक्कर

पू. हरेशभाई ठक्कर

पू. राजेशभाई तन्ना

प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. कपिलभाई के घर आनंदोब्रह्म...

चिरंजीव स्वरूप गुरुहरि पप्पाजी का दिव्य प्रकाश पर्व...

28 मई 2006 को **गुरुहरि पप्पाजी** के अंतर्धान होने के उपरांत उनकी स्मृति सभा के समय **प.पू. गुरुजी** की आज्ञा एवं सुझाव से **पू. राकेशभाई शाह** ने भजन बनाया था—

पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं, पुकार करें हम प्रत्यक्ष वो होंगे...

इसका स्पष्ट दर्शन **8-10 नवंबर 2024** तक आयोजित **'गुरुहरि पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व'** यानि उनके **108वें प्राकट्य दिन** के महाउत्सव के रूप में हुआ। क्योंकि आज भी गुरुहरि पप्पाजी गुणातीत ज्योत के चैतन्य माध्यमों द्वारा अपने आश्रितों की हर प्रकार से परवरिश कर रहे हैं और जीवों की वैसी ही घड़ाई कर रहे हैं।

प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में **पू. सुहृदस्वामीजी**, संतों-सेवकों, कुछ हरिभक्तों तथा **प.पू. आनंदी दीदी** के संग अधिकांश बहनों का इस पर्व में जाना तय हुआ। **7 नवंबर** की दोपहर तक दो flights से सभी अमदावाद airport पहुँच गए। गुरुहरि काकाजी महाराज के समय के सत्संगी **अक्षरनिवासी पू. रमणभाई पकाई** की **धर्मपत्नी पू. दमयंती बहन** जो अब करीब 92 वर्ष की हैं, उन्हें प.पू. गुरुजी के दर्शन करने की आंतरिक इच्छा रहती है। सो, उनकी भावना के वश airport से प.पू. गुरुजी, संतों-सेवकों, प.पू. दीदी एवं सभी भक्तों को साथ लेकर, उनके दामाद **पू. शैलेषभाई शाह (हीपोलीन)**- बेटी **पू. मयूरी बहन** के घर धुन-भजन करने गए।

अमदावाद में इस बार दुबई निवासी **पू. कपिलभाई ठक्कर** के नए Flat में प.पू. गुरुजी के ठहरने की व्यवस्था की थी। अतः पू. शैलेषभाई के घर अल्पाहार करके, पू. कपिलभाई के Flat पर सब पहुँचे। रंगोली एवं फूलों की सजावट के साथ-साथ ढोल बजवा कर उन्होंने सबका स्वागत किया। पू. कपिलभाई के परिवारजन तो पहले से वहाँ मौजूद थे, परंतु **प.पू. गुरुजी के दर्शन और खुद उनका स्वागत-सत्कार करने की भावना से पू. कपिलभाई एक ही दिन के लिए दुबई से ख़ास अमदावाद आए।** सायं प.पू. गुरुजी की निश्रा में अमदावाद के सत्संगियों तथा पू. कपिलभाई के सगे-संबंधियों ने धुन-भजन व आशीर्वाद का लाभ और प्रसाद लिया।

8 नवंबर की सुबह पू. कपिलभाई के घर नाश्ता करने के बाद, प.पू. गुरुजी एवं उनके साथ दिल्ली से गए सभी मुक्त पू. कपिलभाई के चचेरे भाई **पू. हरेशभाई-पू. हेतल बहन ठक्कर** के घर गए। उनके पिताजी बहुत समय से काफ़ी बीमार थे, इसलिए धाम में जाने के लिए प्रार्थना

कर रहे थे। प.पू. गुरुजी ने उनके लिए धुन करवाई। यहाँ से पू. दिलीपभाई ठक्कर की बहन की बेटी **पू. मनीषा**-दामाद **पू. भाविनभाई ठक्कर** के घर गए। दोपहर को श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया। प्रसाद लेने के बाद पू. कपिलभाई के घर गए और थोड़ी देर आराम करने के बाद, पू. कपिलभाई की पत्नी पू. हेमा भाभी की सहेली **पू. हंसा बहन-पू. राजेशभाई तन्ना** के घर पधरावनी करते हुए पू. कपिलभाई के साढू भाई **पू. अशोकभाई-पू. विपुला बहन ठक्कर** के घर गए। यहाँ धुन-भजन एवं श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया। अगले दिन यानि **9 नवंबर** की सुबह **'पप्पाजी तीर्थ'** पर **'पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व'** के उपलक्ष्य में **बहनों की सभा** का आयोजन था, सो प्रसाद लेने के बाद **प.पू. दीदी** व बहनें रात को **अनुपम मिशन-मोगरी** चली गईं और रात को वहीं ठहरीं। परंतु, प.पू. गुरुजी, संत एवं सेवक-हरिभक्त अमदावाद में पू. कपिलभाई के घर ही रुके। वे अगले दिन शाम को मोगरी पधारने वाले थे।

'पप्पाजी प्रकाश पर्व 108-आनंद यात्रा' करके **'बहनों की प्रथम सभा' 8 नवंबर** की सुबह आयोजित हुई थी। जिसमें विडियो द्वारा **गुरुहरि पप्पाजी महाराज, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. तारा बहन, प.पू. देवी बहन** तथा **प.पू. जसु बहन** के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त किए। गुरुहरि पप्पाजी महाराज के कई आश्रितों ने माहात्म्यगान करके भक्ति अदा की।

9 नवंबर की सुबह साढ़े नौ बजे सभा मंडप के प्रवेश द्वार पर, **प.पू. हंसा दीदी** की निश्रा में गुणातीत समाज के केन्द्रों की बड़ी बहनों ने मिल कर रंग-बिरंगे गुब्बारों को आकाश में उड़ा कर **'बहनों की द्वितीय सभा'** का प्रारंभ किया। हंसाकार रथ पर विराजमान गुरुहरि पप्पाजी की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियाँ, गुणातीत ज्योत की स्वरूप बहनों की मूर्तियों के साथ दर्शन देती हुई सभा मंडप में प्रविष्ट हुईं। सभा का संचालन करते हुए **पू. डॉ. नीलम बहन** ने सबका स्वागत किया। केन्द्रों के प्रतिनिधियों एवं आश्रित जनों ने मंच पर विराजमान गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को हार अर्पण करके भाव व्यक्त किया। गुरुहरि पप्पाजी एवं उनके द्वारा तैयार हुए चैतन्य माध्यम अलग-अलग प्रांतों से जुड़े मुक्तों का खूब जतन कर रहे हैं। सो, गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा बनाए एवं गाए भजनों पर, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, पंजाबी इत्यादि प्रांतों के नृत्यों द्वारा मुक्तों ने अपना भाव प्रकट किया। **लंदन गुणातीत ज्योत** की बहनों ने **'The Divine Guiding Light'** पुस्तक प्रकाशित करके भक्ति अदा की, जिसका उद्घाटन **प.पू. हंसा दीदी** के वरद् हस्तों से हुआ। **पू. इला बहन वाघेला** ने **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा रचित गुजराती भजन **'आ ते केवी वातु...'** एवं पवई मंदिर की ओर से **पू. उर्मिला बहन** ने **पू. हेमंतभाई मर्चंट** द्वारा रचित गुजराती भजन **'प्रगट्या तमे, हती दिव्य घटना...'** प्रस्तुत करके गुरुहरि पप्पाजी के प्रति

भक्ति अदा की। गुणातीत ज्योत की स्वरूप बहनों एवं केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने माहात्म्य दर्शन द्वारा भक्ति अदा की। अंत में प.पू. हंसा दीदी, प.पू. बेन, प.पू. सोनाबा, गुरुहरि पप्पाजी के आशीर्वाद के बाद विसर्जन गान से सभा का समापन हुआ और दोपहर को सबने प्रसाद लिया।

सायं 7:00 बजे प्रसाद लेने के पश्चात् सभी सभा मंडप में एकत्र हुए। गुरुहरि पप्पाजी महाराज के माहात्म्य के स्मरण के साथ **पू. स्मृति बहन दवे** द्वारा रचित अंतर आरतगान के साथ समूह आरती हुई। तत्पश्चात् **'युगपुरुष पप्पाजी महाराज: मनके-मनके स्मृति नजराणुं...'** multimedia show द्वारा उनके कार्य और उनके द्वारा तैयार किए चैतन्य माध्यमों द्वारा वर्तमान समय में हो रहे सत्संग के दिव्य कार्य का दर्शन किया।

10 नवंबर की सुबह साढ़े नौ बजे सभा मंडप में गुरुहरि पप्पाजी के अनन्य सेवक **पू. हेमंतभाई मोदी** ने मुख्य व अंतिम सभा का संचालन करते हुए सबसे पहले सबका स्वागत-सत्कार किया। साथ ही प.पू. हंसा दीदी द्वारा प्रेरित एवं संचालित 'पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व' मनाने का हेतु उन्हीं की ओर से बताया कि **एकांतिक धर्म सिद्ध करना है।** तो, श्रीजी महाराज द्वारा ऐसे संकल्प की पूर्णाहुति कराने की भावना से, **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा रचित संवाद नाटिका—**'अक्षरधाम के तख़्त से...'** का दर्शन सभी ने किया। तत्पश्चात् हंसाकार रथ पर मूर्ति के रूप में विराजमान गुरुहरि पप्पाजी का आगमन हुआ। मुक्तों ने गुणातीत समाज का ध्वज लहरा कर उनका स्वागत किया। इसी दौरान प्रगट स्वरूपों ने भी मंच पर आसन ग्रहण किया। प.पू. गुरुजी **9 नवंबर की रात्रि को मोगरी आ जाने वाले थे, लेकिन उन्हें कान में अचानक दर्द हुआ।** सो, दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े अमदावाद के **पू. डॉ. परिमलभाई देसाई** (नेत्र विशेषज्ञ) को संपर्क किया। वे तुरंत ही अपनी पहचान के **डॉ. बंकिमचंद्र सी. शाह** (ENT) को पू. कपिलभाई के घर पर ही ले आए। डॉक्टर ने जाँच करने के पश्चात् प.पू. गुरुजी को आराम करने के लिए कहा। अतः **प.पू. गुरुजी का 'पप्पाजी तीर्थ' पर आना रद्द हुआ।** लेकिन, उनकी ओर से **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, पू. शीतलदासस्वामी** कुछ मुक्तों के साथ अमदावाद से उत्सव में आए। **प.पू. गुरुजी की आज्ञा से गुरुहरि पप्पाजी के 108वें प्राकट्य पर्व निमित्त बनाया भजन—'अनेक जीवों का कल्याण करने पप्पाजी रूप पधारे हरि...' पू. राकेशभाई शाह ने प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।** गुरुहरि पप्पाजी ने अपने संबंध वाले मुक्तों के जीवन में किस प्रकार परिवर्तन किया या किस प्रकार उनकी रक्षा करी, ऐसे कई स्वानुभवों से भक्तों ने सभा को अवगत कराया। **'हे आवडो शाने सस्तो थयो नाथ...'** भजन पर सत्संग के युवकों ने रास करके भाव व्यक्त किया। सभा दौरान अंतराल पर केन्द्रों के मुक्तों एवं भक्तों ने गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को हार अर्पण

किए। गुणातीत प्रकाश के भाइयों ने **गुरुहरि पप्पाजी के निवास स्थान तीर्थधाम 'प्रभुकृपा'** की कलाकृति प्रगट गुणातीत स्वरूपों एवं केन्द्रों के प्रतिनिधियों को स्मृति भेंट के रूप में अर्पण की। इस विधि के पश्चात् गुणातीत ज्योत से आत्मीयता से जुड़े पू. डॉ. कोटियाला साहेब ने अपना वक्तव्य शुरू ही किया था कि तभी **प.पू. गुरुजी ने surprise देते हुए गाड़ी द्वारा सभा मंडप में प्रवेश किया। पंडाल में सभी ने खड़े होकर हर्ष के अश्रुओं और तालियों से उनका स्वागत किया। साथ ही अतंर ने उनकी गुरुहरि पप्पाजी के प्रति भक्ति को नमन भी किया कि नादुरस्त तबीयत और 87 वर्ष की आयु होने के बावजूद एक युवा चेतना से वे डेढ़ घंटे का सफ़र करके दर्शन देने आ गए। इतना ही नहीं, करीब एक घंटा सभा में बैठ कर गुणातीत ज्योत द्वारा नवप्रकाशित पुस्तक 'चिरंजीव श्रुतिगीता' का अनावरण करके आशीष वर्षा भी की। इसी प्रकार, संतभगवंत साहेबजी ने 'आ चरण अहीं अवनीए' और 'परमकृपा' भजन संग्रह की पेन ड्राईव का उद्घाटन करके आशीर्दान दिया।** 'पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व' की पूर्णाहुति सभा में प्रगट गुणातीत स्वरूपों तथा अंत में विडियो द्वारा गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी से आशीर्वाद प्राप्त करके सभी निहाल हुए।

'पप्पाजी तीर्थ' से प्रस्थान करके **संतभगवंत साहेबजी** के साथ **प.पू. गुरुजी** 'अनुपम मिशन' गए। वहाँ हरिद्वार से **विश्ववंदनीय प.पू. रामदेवजी महाराज** आए हुए थे। उनसे भी मिल कर और प्रसाद लेकर सायं 4:00 बजे अमदावाद जाने निकल गए। डेढ़ घंटे में पू. कपिलभाई के घर पहुँच कर आराम में गए। सायं 7:00 बजे आराम पूरा करके, सहज ही उनके हॉल में सोफे पर बैठे। दस मिनिट बाद ही मुक्तों के साथ बात करते-करते अचानक एक मिनिट के लिए उन्हें बेहोशी-सी आई। सो, डॉ. परिमलभाई देसाई की सलाह पर **Zydus Hospital** में तुरंत लेकर गए। उस दिन रविवार था, लेकिन **डॉ. परिमलभाई** की पहचान से **डॉ. पी. दिलीप** ने बहुत अपनेपन से प.पू. गुरुजी का check up किया और रातभर observation में रखने के लिए कहा। इस दौरान प.पू. दीदी एवं पू. राकेशभाई ने संतभगंवत साहेबजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई-प.पू. वशीभाई, प.पू. हंसा दीदी सबको प.पू. गुरुजी की तबियत के बारे में सूचना दी। प.पू. हंसा दीदी ने तो रात को ही **डॉ. वीणा बहन** को विद्यानगर से अमदावाद आने के लिए रवाना कर दिया।

अगले दिन **11 नवंबर** की सुबह कुछ test एवं सलाह-मशवरा करने के उपरांत डॉक्टर्स ने **प.पू. गुरुजी** को **pacemaker** लगाने की सलाह दी। चूँकि दिल्ली में **संतभगवंत साहेबजी** से अनन्यभाव से जुड़े **डॉ. कैलाश सिंहजी** तथा **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** इत्यादि प.पू. गुरुजी की

health के बारे में सब देखते हैं, इसलिए दिल्ली जाकर पुनः उनकी सलाह से चिकित्सा के बारे विचार करते हुए, अमदावाद के डॉक्टर्स की मंजूरी से सायं की flight से दिल्ली जाने का तय हुआ।

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी की ओर से प.पू. अश्विनभाई, प.पू. दिनकर अंकल, पू. वीरेनभाई (गुणातीत प्रकाश) इत्यादि प.पू. गुरुजी से मिलने अस्पताल पहुँच गए थे। कितने दिनों से लगातार चल रहे **'पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व'** में अतिशय व्यस्त, थके हुए होने के बावजूद और देश-विदेश से आए भक्तों को अनदेखा करके भी **88 वर्ष की आयु में प.पू. हंसा दीदी** विद्यानगर से सुबह अमदावाद अस्पताल पहुँच गए। इतना ही नहीं, airport तक छोड़ने आकर उन्होंने मानो आत्मीयता की गंगोत्री ताड़देव में गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी तथा प.पू. बा की निश्रा में संबंध वाले मुक्तों के साथ बिताए सुनहरे पलों को पुनः जाग्रत कर दिया।

अमदावाद से दिल्ली लौट कर डॉक्टर्स की सलाह पर **14 नवंबर** की सुबह Medanta Hospital गए। **28 अप्रैल 2022** को यहीं पर **डॉ. प्रवीणचंद्रजी** ने प.पू. गुरुजी को heart में stent लगाए थे। सो, उन्हीं की निगरानी में angiography करने के बाद, **डॉ. कार्तिकेय भार्गव** ने सायं तक प.पू. गुरुजी को **pacemaker** लगाया।

रातभर observation में रहने के बाद **15 नवंबर—देव दीवाली** के शुभ दिन **सायं 6:00** बजे के करीब प.पू. गुरुजी मंदिर सकुशल लौटे। फूलों के गलीचे एवं दीयों से उनके निरामय स्वास्थ्य की कामना करते हुए संतों, सेवकों, बहनों और हरिभक्तों ने स्वागत तो किया, पर मन ही मन अपने जीवन आधार गुरुजी के श्रीचरणों में प्रार्थना करी —

हे प्रभु! अब हम हमारे 'स्व'—मन के चंगुल में से बाहर निकल कर सही अर्थ में आपकी मरज़ी के अनुसार ही जीने लगें, ताकि हमारे प्रारब्धों के पोटले अपने सिर पर लेकर, आपको देह का कष्ट न झेलना पड़े... करना माफ़, करना माफ़, करना माफ़ प्रभु हमें!!!

संयोगवश इन दिनों **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** पंजाब-लुधियाना आए हुए थे। इसी दिन वे दिल्ली आए और प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ मंदिर आकर मुक्तों को अपने दर्शन, सेवा-समागम का लाभ दिया।

*(**'पप्पाजी दिव्य प्रकाश पर्व'** दौरान कई मुक्तों ने गुजराती भाषा में जो **उद्‌बोधन** किया तथा **गुणातीत स्वरूपों** ने **आशीर्वाद** प्रदान किया, उससे हिन्दीभाषी मुक्त लाभांवित हो सकें, इस हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं...)*

11 नवंबर 2024
अमदावाद के Zydus Hospital में
'आत्मीयता के सूत्रों से बंधे'
स्वरूप एवं मुक्त
प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य हेतु
भजन करने पहुँचे...

Pacemaker को निमित्त बना कर Medanta Hospital के Doctors को सेवा दी...

डॉ. प्रवीणचंद्रजी

डॉ. कार्तिकेय भार्गवजी

डॉ. अंकित सिंहजी

अम काजे अक्षरथी आव्या अहो !
आप तो अनंतने निरामय करो
ती शाने आमय आप तन पर ग्रहो
स्वामी उरे सूर एक ज वहे
निरामय तन तमारुं रहे ...
WELCOME

ओ स्वामी! उरे सुर एक ज वहे निरामय तन तमारुं रहे...

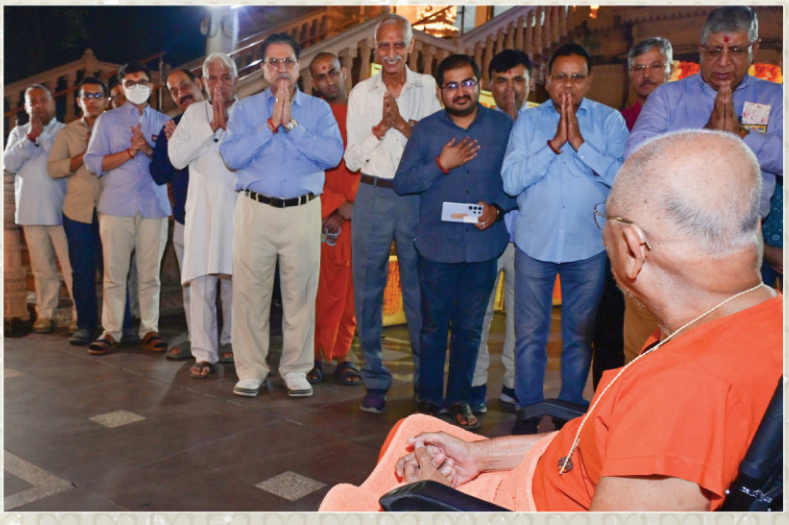

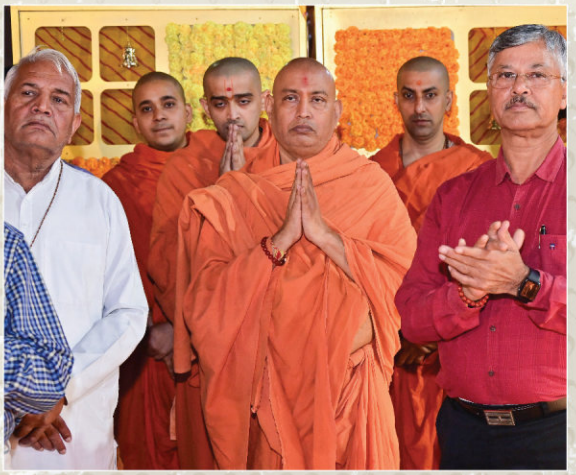

प.पू. गुरुजी के दर्शनार्थ प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का आगमन...

अहो! काकाश्री के प्यारे लाड़ले मुकुंदस्वामी
लाखों-लाखों वंदन करूं स्वीकारो आराधन
सौ-सौ शरद जीयो योगीजी के जंगम...

#LONG LIVE GURUJI

9 नवंबर, 2024 – प्रातः

पू. नीलेशभाई (गुणातीत प्रकाश)

...पप्पाजी के room में english में एक आर्टिकल लिखा है कि जब तक मैं सक्रिय हूँ, तब तक मैं negative और positive pole को इक्कठे करके नज़दीक लाऊँगा। वे तो हमेशा ही active रहने वाले ही हैं। वे कहना चाहते थे कि spark-friction होगा और मैं उस process को supervise करूँगा और जब तक दोनों neutral न हो जायें, एक-दूजे का स्वीकार करके भगवान की electricity प्रसार न करने लगे, तब तक मैं वो process जारी रखूँगा।

हम पिछले 8 महीने से इस उत्सव की तैयारियों में लगे हैं। इतने साल में पहली बार अवसर मिला कि भाइयों और बहनों ने मिल कर सक्रियता से काम किया। ***हर department में आपस में घर्षण होता ही होगा। पर, एक भी ऐसा incidence नहीं बना कि किसी ने आवाज़ ऊँची की हो – केवल हांजी, काम बने या बिगड़े वो बाद की बात है। ये सुहृदभाव ही success है।***

दीदी ने एक बार पप्पाजी से पूछा कि मैं सोच रही हूँ कि ये चीज़ ऐसे करें। पर, वो कह रहा है कि नहीं, ऐसे करो। पर अगर वैसे करेंगे, तो कुछ दिक्कत आयेगी। तो क्या करें? तब ***पप्पाजी बोले – दिक्कत आए, वही सर्वोपरि। महाराज को वो मान्य है, पर मनभेद मान्य नहीं और ultimately तो मैं सब संभाल ही लूँगा, कर्ता-हर्ता प्रभु हैं।***

इस आयु में भी दीदी की स्मृतियाँ-memory ज़बरदस्त है। अभी पीछे ही ***पप्पाजी*** *का सूत्र पढ़ा –*

'बीती हुए पल भूल जाओ, आने वाली की चिंता न करो। इस पल को अक्षरधाम रूप बनाओ।'

हमने सोचा इसमें क्या बड़ी बात है। फिर दीदी ने प्रसंग बताया कि 1962 में हॉल बनाने के लिये बापा ने सबसे पैसे इकट्ठे किए। उसके लिये वे suburb में जाकर पारायण करते और पप्पाजी को कहते कि इन भक्तों की सेवा लिख लो। कइयों को पत्र द्वारा बताया कि बाबुभाई को इतनी सेवा भेजना। पप्पाजी तो स्वधर्म के राजा। उन्होंने बापा से कहा कि रसीद नहीं देंगे, तो ग़लत होगा। लोग बातें बनायेंगे कि पैसे ऐंठते हैं। तब ***बापा बोले – सच्चाई में तो सब पक्ष रखते हैं, पर ग़लत में पक्ष रखो तो मानें।*** *पप्पाजी समझ गये कि बापा कुछ समझाना चाहते हैं। फिर ऐसा ही हुआ कि कमेटी वालों ने मिलकर इसी बात पर काकाजी-पप्पाजी का खूब अपमान किया। अनाप-शनाप कहा कि भक्तों के पैसों से ये गाड़ियों में घूमते हैं। तो, जैसे कि देवी बेन ने बताया था कि* ***महंतस्वामी का सूत्र है कि बचाव करना भी मान है।*** *तो, पप्पाजी ने*

कुछ जवाब नहीं दिया। घनश्यामभाई और महेंद्रभाई ने घर जाकर बात की कि आज काकाजी-पप्पाजी के साथ ऐसा हुआ। तब पता लगा, ***वर्ना ऐसे तो कितने ही प्रसंग बने होंगे जहाँ उन्होंने सहा होगा,*** *जो हमें पता भी नहीं। अगले दिन बापा ने पप्पाजी को पारायण में बुला कर सबका पूजन करवाया और पप्पाजी ने तो खुशी से सबका पूजन किया। घर जाकर दीदी ने पप्पाजी से पूछा कि जिन्होंने आपका अपमान किया, उन्हीं का पूजन आपको करना पड़ा। अंदर में कैसा लग रहा था? पप्पाजी बोले—* ***वो तो कल थी, पूजन तो आज किया।*** *देखो, उन्होंने इस सूत्र को सही मायने में कैसे पकड़ा!* ***हम हों तो 10 साल पहले किसी ने ताना मारा हो, तो उसे भी मन में भर कर रखें।*** *तो, उनका बल लेकर प्रार्थना करें कि हम भी ऐसे जी पायें,* ***दूसरों के दोषों को भूल जायें।***

प.पू. वशीभाई (पवई)

...पप्पाजी का सूत्र है कि अखंड अक्षरधाम की समाधि में रहना है। योगीजी महाराज ने बहनों के भगवान भजने के लिए जब 'हाँ' करी, तब Women empowerment का नामोनिशान नहीं था। करोड़ों धन्यवाद काकाजी-पप्पाजी को कि बहनों को गुणातीत संत बनाया... अमीन और पटेल परिवार ने जो सहन किया, वो अपने कल्पना के बाहर की बात है। *वो तो दीदी और ज्योति बहन के बताने पर ख्याल पड़े...*

सन् 2000 में पप्पाजी मुंबई से अमेरिका जा रहे थे। हम उन्हें एयरपोर्ट पर see off करने गये। अश्विनभाई को देखकर वे बोले कि मेरा सेवक आ गया! और... अपने साथ अमेरिका ले गये। वहाँ पर अश्विनभाई का 50वाँ बर्थडे आया। तब केवल पाँच-छः जने थे, फिर भी पप्पाजी ने आशीर्वाद में लिखा—

प्रागट्य दिन का उत्सव मना रहे हैं, अमेरिका आज तीर्थधाम हो गया, आपके पप्पाजी की ओर से जय काकाजी।

उन्होंने जय स्वामिनारायण नहीं लिखा। पप्पाजी को संबंध वालों की ऐसी महिमा थी।

पप्पाजी *जब बीमार थे तो अस्पताल में हम उन्हें मिलने गये, तब उनका मौन था। हमने प्रार्थना की कि आप बीमारी की ऐसी लीलायें न करें। तभी साथ में* ***बापा*** *की छोटी-सी मूर्ति की ओर इशारा किया कि* ***मैं कुछ नहीं कर रहा, सब ये कर रहे हैं।***

एक बार ऐसे ही पप्पाजी की तबीयत देखने गये थे, तब साथ में मम्मीबा भी थी। मौन होने के बावजूद मम्मीबा को देख कर पप्पाजी इतने आनंद में आ गये कि बोल उठे कि इनके लिये ये

लाओ, वो लाओ, यहाँ बिठाओ इत्यादि। दोनों परिवारों की ऐसी आत्मीयता थी...

इस उत्सव से हम सीखें कि We live Pappaji. पप्पाजी ऐसे आशीर्वाद दें कि उनके जैसे पात्र बनें... *गुजराती में कहावत है— आरंभे शूरा। लेकिन,* ***काकाजी-पप्पाजी ने केवल कार्य जारी रखा ऐसा नहीं, बल्कि सतत जारी रखा है। पचास साल पहले Women empowerment शुरु कर दिया, यही आध्यात्मिकता है।*** *स्त्री उत्थान का असली महत्त्व दुनिया को तब पता चलेगा, जब अमेरिका में Lady President बनेगी...*

पप्पाजी तो प्रत्यक्ष हैं ही और उनकी जीवनभावना थी कि हम अक्षरधाम की समाधि में रहें, गुणातीतभाव वाले साधु बनें *— ऐसे आशीर्वाद देना।*

पू. डॉ. नीलम बहन (गुणातीत ज्योत)

...पप्पाजी ऐसे पहले गृहस्थ स्वरूप हैं कि जिन्होंने अपनी पत्नी को भी एकांतिक बनाया। सहकुटुंब भगवान को समर्पण किया। ***पप्पाजी एक आदर्श जीवन जिए। उनकी जाग्रतता और सजगता के प्रति दिल नतमस्तक हो जाता है।*** *जब उनकी पत्नी धाम में गई, तब वे लंदन थे। वहाँ से जब भारत लौटे, तो बोले— 'मैं तुम्हारे जैसा व्रतधारी बन गया।' कैसी निर्लेप अवस्था कही जाए...*

पप्पाजी ने बताया कि आश्रित जन से कोई भी अपेक्षा रखे बिना जो जतन करेगा, उसे परम भागवत संत और वारिसदार बनाऊँगा। सच, इन स्वरूपों को किसी से कोई अपेक्षा नहीं है... इनके जतन से हमारी आध्यात्मिक प्रगति हो रही है। ***हमारे संचित प्रारब्ध ख़ाक हो गए हैं और सब तीर्थधाम रूप बन गए हैं, तो प्राप्ति का क़ैफ रखें।*** *सबकी देह और घर मंदिर बन जाएँ यही प्रार्थना।*

प.पू. शोभना बहन (गुणातीत ज्योत)

...पप्पाजी, काकाजी, बा यदि न मिले होते, तो हमारा क्या होता? रोज़ ही यह विचार आता है। योगी बापा ने ऐसे स्वरूपों की भेंट दी है... पप्पाजी की छोटी-बड़ी सभी क्रियाएँ ब्रह्म की अवस्था का दर्शन करातीं। जो उनके संबंध में आए, वो ब्रह्मरूप हुए बिना रहता ही नहीं, ऐसा उनका सामर्थ्य! *जबकि बाहर से उनका जीवन खूब सादगीभरा और सहजावस्था वाला। कोई अपेक्षा या ज़रूरत नहीं। इसलिए संजीवनी मंत्र में उन्होंने लिखा कि जब जहाँ, जिस चीज़ की जितनी ज़रूरत होगी, उतनी प्रभु दे देंगे... संकल्परहित उनका जीवन था, इसलिए योगी बापा ने उन्हें जो दिया उसका सहर्ष स्वीकार किया... हम सहजता से पप्पाजी के स्मरण में रहें और*

उनसे प्राप्त करना है वह पा लें, तो चौबीस घंटे क़ैफ, आनंद में रह सकेंगे। उन्हें अंतर की आँखों से पहचानने के लिए एक माला फेरें। उन्हें प्राप्त करके इसी जन्म में जीवन को सार्थक बनाएँ। ***हे पप्पाजी! गुरु का सेवन करने की लगन, जाग्रतता और गरज़ आप रखवाना।*** *आपके भक्तों के प्रति निर्दोषबुद्धि दृढ़ करते ही जाएँ, यही प्रार्थना।*

प.पू. सौजन्य बहन (भक्ति आश्रम)

...अंतर में अहोभाव और धन्यता का भाव हो रहा है। ***शास्त्रों के सार रूप जो बातें हुई, वे खूब मननीय और जीवन में अमल करने योग्य हैं। प्रभु को कर्ता-हर्ता मानना ही सच्ची स्मृति है...*** ***3 अक्तुबर 1952*** *में पप्पाजी गोंडल में बापा के पास कांतिकाका की दोनों बहनों के भगवान भजने हेतु प्रस्ताव लेकर गए थे। तब* ***बापा ने कहा था कि बहनें भगवान भजें, उसमें क्या हर्जा है? सो, हम सबकी आत्मा का सच्चा जन्मदिन यानि 3 अक्तुबर। बापा ने ये ब्रह्मसूत्र नहीं बोला होता, तो हमारी आत्मा का क्या होता?***

जब मैं दसवीं कक्षा में थी, तब ***ज्योति बहन*** *पूर्वाश्रम के गाँव में आई थीं। प्रथम बार किसी स्त्री तत्व का मैंने साधु के कपड़ों में दर्शन किया, तो बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने धनलक्ष्मी बहन से पूछा कि बहनें भी ऐसे कपड़े पहनती हैं? मुझे भी इनके साथ रहना है।* ***जो भगवान से भरपूर हों, उनके दर्शन से आत्मा संतुष्ट हो जाती है।*** *आत्मा में मुमुक्षुता तो होती ही है, पर जैसे ज्योत से ज्योत जलती है, वैसे ही ज्योति बहन को देख कर मेरी आत्मा जाग उठी। हरिप्रसादस्वामीजी की आज्ञा से कॉलेज के चार साल पूर्ण करने के बाद, उन्हीं की आज्ञा से ज्योत की बहनों का समागम करके, ज्योति बहन से कंठी धारण करी। छुट्टियों में गुणातीत ज्योत में रहने जाते और चारु बहन सी., वसंत बहन इत्यादि के साथ सेवा करते थे। सेवा पूरी होने के बाद बहनें पप्पाजी की महिमा की बातें करतीं। स्वामी की बात में लिखा है कि* ***जीव नवधा भक्ति आदि साधन से तो शुद्ध होता ही है, पर बातों से जैसा शुद्ध होता है, वैसा नहीं होता। शब्द जैसा कोई बलवान नहीं।*** *तो, ज्योत की बहनों की संगत से मेरा जीव खूब बल को पाया। फिर 1980 में हरिधाम में बा, बेन, ज्योति बेन, तारा बेन, देवी बेन और दीदी के हाथों पार्षदी दीक्षा प्राप्त हुई। हम लगभग 17 बहनें थी, जिन्हें स्वामीजी ने काकाजी के पास भेजा। स्वामीजी बोले थे कि मैं बहनों की जिम्मेदारी नहीं लेता, अगर काकाजी लें तो आपको ये दीक्षा मिलेगी।* ***काकाजी की अनुमति से 1984 में हम 25 बहनों को भागवती दीक्षा का सौभाग्य मिला।*** *ऐसे दिव्य वातावरण में जब आत्मा दीक्षित होती है, तो मन-बुद्धि भी पवित्र हो जाते हैं। हमारे जीवन का ध्येय पक्का हो गया।*

कल आनंद यात्रा के दौरान मुझे हंसा बहन गुणातीत के साथ गाड़ी में बिठाया। उनके साथ बैठने में मुझे हिचक हो रही थी। क्योंकि वे ज्योति बहन के साथ कई बार मेरे पूर्वाश्रम के गाँव पधारी थीं। उन्हें भी हम गुरु मानते थे। सो, मैं सोच रही थी कि ***गुरु के साथ थोड़े बैठते हैं? उनके तो चरणों में बैठते हैं।*** *आज भी स्टेज पर बैठे हुए मुझे यही विचार आ रहा था कि* ***दीदी तो आत्मा की गुरु हैं, उनके हाथों से तो दीक्षा ली। उनके साथ कैसे बैठें? फिर मन में प्रार्थना हुई कि स्वामीजी और प्रेमस्वामी के जीवन का अंतिम ध्येय दासत्व भक्ति है, वो मेरे जीवन में आए। कितना भी मान-बड़प्पन मिले, पर कभी मन-बुद्धि, संकल्प या विचार से मेरा दासत्व जाए नहीं। यही अहम् के विसर्जन का ज़रिया है।*** *इसके बिना अंतर में आनंद नहीं आएगा...*

प.पू. पद्दु बहन (गुणातीत ज्योत)

... ***पप्पाजी, अपनी बताई सीख से कभी भी अलग नहीं वर्ते। विचार, वाणी, वर्तन से वे जो बोलते, वो पहले स्वयं जीकर दिखाया।*** *उनका हर पल का दर्शन ही हमारे लिए शास्त्र है। उनकी जितनी स्मृति करें, उतना ही उनकी महिमा का ख्याल पड़ेगा कि छुपे रह कर सामान्य व्यक्ति की भाँति वर्ते।* ***जिसमें दूसरों का 'स्व' टालने की अद्‌भुत सामर्थ्य हो, वो किस कक्षा पर अपना ऐश्वर्य छुपा सकते हैं, वो पप्पाजी के जीवन से पता लगता है...***

अपनी original साधना है कि केवल गुणग्राहक बनना, किसी का negative नहीं देखना। यह बात पप्पाजी ने स्वाभाविकता से सिद्ध करनी हमें सिखाई। किसी दूसरी संस्था या भक्तों के बारे में यदि हमसे कुछ हीन बोला जाए, तो वो उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था। उस बात को वे तुरंत काट देते...

सालों पहले वी.पी. हॉल में उत्सव मनाया था। स्वरूपों को पहनाए जाने वाले हारों में थोड़ा फर्क़ पड़ गया, पप्पाजी को बड़ा हार पहनाया गया और मंच पर अन्य स्वरूपों को छोटा हार पहनाया। उस समय पप्पाजी कुछ नहीं बोले। लेकिन बाद में जब विविध केन्द्रों के भक्त पप्पाजी को पहनाने आते, तो जो भी भक्त उनके पास हार लेकर आते, उससे हार लेकर मंच पर बैठे स्वरूपों—स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब इत्यादि सभी को खुद वो हार पहनाये। इससे क्या दर्शन होता था कि ***जिन्हें हार तक छोटा-बड़ा हो जाना भी पसंद नहीं आया हो, तो हमारे मुँह से किसी स्वरूप, समाज या किसी की कार्य पद्धति की थोड़ी भी अवगणना होने पर वे कैसे सहेंगे?***

इस एक ही प्रसंग का यदि हम माहात्म्य से सोचें, तो ख्याल आयेगा कि दास का दास बनने में हमारी कितनी कसर है। वे पूर्ण मिले हैं और पूर्ण करेंगे ही, ये केफ़ तो रखना ही है। पर, ***ऐसा सहज होना चाहिए कि मैं अगर इन स्वरूपों का हूँ, तो मेरा जीवन कैसा होना चाहिए?*** *इसलिए दीदी ने हमें जाग्रत करते हुए सूत्र दिया—* ***'मैं पप्पा का कार्य हूँ।'*** *तो, मेरा विचार, वाणी, वर्तन कैसा होना चाहिए?* ***अगर कोई हमारा बखान करे-हमें मान दे, तो हम मना करते रहेंगे कि ऐसा कुछ नहीं है। मगर अंदर स्वाभाविक ही हमें अच्छा लग रहा होता है और कोई अपमान या उपेक्षा करे, हमारे दोष का कुछ दर्शन कराए, तो शायद जो बड़े होंगे उन्हें हम कुछ कहेंगे नहीं, पर अंदर थोड़ी खटास आ ही जाएगी।*** *पप्पाजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी में जब-जब किसी के अभाव की बात कभी की, तो उन्होंने उसे जड़ से ही काट दी...*

एक भक्त ने उत्सव में कहा कि हमें रोज़ इतने अनुभव होते हैं कि पप्पाजी भगवान हैं और यह हमारे अंतर में दृढ़ होता जा रहा है। यह वाक्य पूरा होते ही ***पप्पाजी*** *ने उस बात को काटते हुए कहा— यह बात नहीं करो। भगवान कह कर तुम मुझे गाली दे रहे हो।* ***भगवान की पदवी बड़ी नहीं, बल्कि सच्चे साधु होने की पदवी बड़ी है। वो पदवी जब तू मुझे देगा कि ये सच्चे गुणातीत साधु हैं, तब मैं खुश होऊंगा। बाकी भगवान कह कर आप जो अलग वर्तन से जीते हो, तो ऐसा लगता है कि गाली देते हो। जिनके लिए हम समर्पित हैं; जिन्हें हम प्राणाधार मानते हैं, उन्हें ऐसी जाग्रतता रखने की ज़रूरत नहीं थी। फिर भी उन्होंने वर्त कर बताया कि कभी सपने में भी ऐसा अभिनिवेश न हो कि मेरे द्वारा कितने कार्य हो रहे हैं, मेरे ज़रिए कितनों को शांति मिल रही है। मेरा आशीर्वाद तो फलीभूत होता ही है। ग़लती से भी उस भूमिका में न चले जायें।*** *इसके लिए वे दर्शन कराते थे। अगर कोई हमें अकारण डाँटता हो, तो भी उनमें महाराज का दर्शन हो, सहज स्मित से स्वीकारें। उस भूमिका पर पहुँचना है। गहराई से सोचना कि टोकने वाले के प्रति अलगाव रखने की भूमिका में न जाऊँ। आज यहाँ हम ऐसे साधक इकट्ठे हुए हैं, जो सच में ऐसी साधुता प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं।* ***यहाँ आए; मजा आया और बढ़िया खाना खाया, ऐसा लाभ लेने वाले हम नहीं हैं। हम 'केसरिया' करने वाले हैं। सबके अंदर यही भाव है कि ये जो स्वरूप मिले हैं, तो उनके पास जो माल है वो किसी भी तरह उनसे ले लें। ये उत्सव मनाने के लिए दीदी ने हमें दिशा सूझ दी कि अब मैं पप्पा का कार्य बन गया हूँ। तो, अब मेरा कोई विचार, वाणी या वर्तन ऐसा न हो, जो उन तक न पहुँचे और वे राज़ी न हों, उनके सिद्धांत के मुताबिक़ का न हों।*** *पप्पाजी आशीर्वाद देते हुए हमेशा एक ही बात कहते कि सब मेरे जैसे*

सुखी हो जाओ। ये उनके कितने बड़े आशीष, भले ही हम जीते हैं या नहीं, उस तरफ तो उनका ध्यान ही नहीं रहता। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि उनके जैसा सुखी होना यानि क्या अवस्था होगी, किस प्रकार का वो सुख होगा? अभी तो हमारा सुख में आना-जाना होता रहता है, बीच में दुःखी भी हो जाते हैं। जबकि ***वे तो आठों प्रहर एक तान रखते थे कि संबंध में आने वाले के अंदर का कचरा निकाल कर कैसे भगवान का सुख दे दूँ! ऐसे काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब के हम हैं। जो जिस स्वरूप से जुड़ा हो, उनकी अनुवृत्ति जान के ऐसे लग पड़ें...***

बापा के आशीष से बहनों की संस्था हुई। *ये पप्पाजी तीर्थ पर भी वे साक्षात् विराजमान ही हैं। महाप्रसादी के इस स्थान पर हम घूमते हैं, सभा करते हैं, प्रसाद लेते हैं। बस अंतर में ये कैफ़ रखें कि दुनिया में हमारे जैसा नसीबदार कोई नहीं।* ***इन स्वरूपों की दृष्टि में आ गए, वही बड़ी बात हो गई। अब हर पल उन्हें प्रत्यक्ष-अंतर्यामी मान के हम जियें।*** *'अंतर्यामी' शब्द से एक प्रसंग याद आया कि एक बार निष्कपट होने की बात करते हुए* ***पप्पाजी बोले*** *कि सब अपने अंदर का लिख कर देना। किसी ने कहा कि आप तो हमारा सब जानते ही हो, क्या लिखें? तो एकदम strict-कठोर होकर बोले—* ***इस प्रकार की मन की धोखेबाज़ी में मत फँसो।*** *मन तो यही कहेगा।* ***जब तक हम अपने मन से अलग नहीं होंगे, तब तक स्वरूप से छुपाये रखना ही पसंद आएगा। अन्तर्यामी को तो दो बार बताना चाहिए। मन से आप अलग हो जाओगे, तो ही स्वरूप को सब बता पाओगे और कह डालोगे, तो स्वरूप तुम्हारा सब निर्मूल कर देंगे। किसके पास तुम बोलते हो! उनमें ऐसी ताक़त है! उन्हें तुम्हें उस दोष से मुक्त करना है, दबा कर या शासन करके नहीं निकालना। पर, आप स्वयं सामने से कहो कि मेरा ये टालो, उसके लिए निष्कपट होना है।*** *तो हम सच में उन्हें अंतर्यामी मानें। हर पल उनका चिंतन रहे, उनकी प्रत्यक्ष हाज़िरी मान कर जी सके, ऐसा बल, बुद्धि और प्रेरणा हम सबको पप्पाजी, सब स्वरूप दें।*

प.पू. हंसा दीदी (गुणातीत ज्योत)

...पप्पाजी ने बापा से याचना की कि बहनों को सुख से भगवान भजवाना। तो बापा ने कहा—सुख, शांति और आनंद से भजवाएँगे। कितने अच्छे आशीर्वाद मिले! *पप्पाजी के कहे अनुसार वचनामृत गढडा मध्य 28, 46 हमें पढ़ने हैं। वे पढ़ कर विचार करना कि हमने उन पर कितना अमल किया है? इतने बड़े उत्सव में हमें एक-दूजे के दर्शन का सुख प्राप्त हुआ, उसका बहुत आनंद है। अब वासुदेव हरे...*

10 नवंबर, 2024 – प्रातः

पू. पियुषभाई पनारा (गुणातीत प्रकाश)

'बोले श्रीहरि रे...' में श्रीजी महाराज ने अपना ऐश्वर्य-सिद्धांत बताया है। गुणातीतानंदस्वामीजी की बातों में है कि श्रीजी महाराज अपना समग्र ऐश्वर्य, पार्षद लेकर पधारे हैं... आज पप्पाजी महाराज का 108वाँ प्रागट्य पर्व मना रहे हैं। वे पल-पल योगीजी महाराज के होकर जिए। ***काकाजी, पप्पाजी और बा ने इस समाज का सर्जन किया। अनेक प्रकार से कसनी सही, इसीलिए सारे केन्द्र सुख से कार्य कर रहे हैं...***

18 वर्ष पहले पप्पाजी ने स्थूल देह का त्याग किया, लेकिन आज भी वे चैतन्यों की परवरिश करते हुए दिव्य शक्ति से कार्य कर रहे हैं, उसका अनुभव हमें होता ही है... पप्पाजी को कर्ता-हर्ता मान कर जीने का हमें खूब बल मिले यही प्रार्थना।

प.पू. वीरेनभाई (गुणातीत प्रकाश)

पप्पाजी के विविध कार्यों की अनुभूति होती है। महाराज ने जैसे परमहंस बनाए थे, वैसे ही पप्पाजी ने गुणातीत प्रकाश के भाइयों को दीक्षा दी... ***हमारी इस लोक और परलोक की उन्होंने जिम्मेदारी ली। हमारी कोई लायकता देखी नहीं... छोटे बालक से लेकर वृद्ध तक के जीवन में पप्पाजी ने स्थान लिया और सभी का कार्य कर रहे हैं...***

पप्पाजी से प्रार्थना है कि हम हमारे विचार, वाणी और वर्तन पर ध्यान दें। कर्ता-हर्ता आपको मानें और आपने जो खूब उच्च संस्कारों की पूँजी हमें दी है, उसे संभाल कर रखें। ***पप्पाजी, आपने हमें कहा है कि तुम लोग भविष्य हो, तो आपके भविष्य बन कर प्राप्ति के क़ैफ में हमेशा रह सकें यही प्रार्थना...***

प.पू. भरतभाई (पवई)

एक बार हरिप्रसादस्वामीजी ने योगीजी महाराज से पूछा कि आप तो साक्षात् दिव्य स्वरूप हैं, तो आपने क्यों इतना सहन किया? बापा ने कहा, आप सबके लिए। इसी प्रकार, पप्पाजी ने सारा जीवन हमारे लिए जिया है...

पप्पाजी के तीन सूत्र हमेशा नज़र समक्ष रहते हैं–

1. ***संबंध वालों में महाराज को देखो।***

पप्पाजी ने ऐसा स्वयं जीकर बताया। ताड़देव में किसी ने लक्ष्मण ड्राईवर की शिकायत की, तो पप्पाजी बोले, बापा के संबंध वाला है। हमें संबंध वालों में ऐसा दर्शन हो, ऐसा करना है।

2. ***गरजू होकर सेवा करो।***

पप्पाजी कहते– अहोहो! यह सेवा मुझे मिली। मुझे एक थाली साफ़ करने के लिए दोगे, तो उसके लिए मैं 10 रुपये दूँगा। सेवा का ऐसा मौका हमें लूट लेना है।

हमारे डॉ. महेंद्र मर्चंट पढ़ाई के सिलसिले में Manchester गए थे। पप्पाजी तब लंदन में ही थे। पप्पाजी को पता चला, तो वे काफ़ी दूर से travel करके उनके पास पहुँच गये। इतना ही नहीं, साथ में उनकी ज़रूरत का सामान भी लेकर गए कि तू यहाँ अकेला रहता है, तो ये तेरे लिए लाया हूँ... यह संबंध की महिमा और सेवा की गरज कही जाए।

3. ***दिव्यभाव रख कर सहन करो।***

*कोई एक सूत्र जीवन में बैठ जाए, तो काम हो जाए। पप्पाजी एकदम स्पष्टवक्ता थे। एक बार किसी ने उनसे पूछा कि यहाँ आप बैठे हैं और ऊपर आपकी मूर्ति लगी हुई है। इन दोनों में क्या फर्क़ है? पप्पाजी बोले–**मूर्ति में कभी मनुष्यभाव आएगा नहीं और मुझमें कभी दिव्यभाव रहेगा नहीं। क्योंकि मूर्ति थोड़े ही चरित्र करने वाली है...***

*पप्पाजी के जितने प्रसंग याद करें, उतने कम हैं। **पप्पाजी ने कहा है कि नीरव होकर एक माला फेरना। प्रभुमय, संकल्परहित होकर ऐसी एक माला करें और पप्पाजी को अर्घ्य अर्पण करें।***

प.पू. निर्मळस्वामीजी (समढियाला)

*आज सभा में ज्ञान का भोजन करने वाले तो बैठे ही थे, मगर परोसने वाले भी कई मिल गए। जितना परोसा गया, वो सारा यहाँ बैठे हुए भक्त ग्रहण कर गए। अब मुझे कुछ परोसने का बाकी नहीं। कइयों ने पप्पाजी की बातें की। **काकाजी को हुई समाधि का साक्षी जो कोई हो तो साधु निर्मलदास है।** तब पप्पाजी का भी दर्शन किया था। अभी हम सब पप्पा-पप्पा करते हैं। पर, सालों पहले गोंडल के चौक में पप्पाजी, काकाजी, बा बर्तन माँज रहे थे। बापा ने मुझे पूछा कि कौन बर्तन माँज रहा है? मैंने नाम बताया, तो बापा बोले– सेवाएं और भी कई हैं, पर उनसे बर्तन नहीं धुलवा सकते। पप्पाजी को बताया कि बापा ने मना किया है। वे बोले–सच्ची सेवा का मौका तो अभी हमें मिला है। बाद में मिले न मिले, पर अभी कर लेने दो। तब पप्पाजी को*

बाबुभाई कहते थे। बापा बोले इन बाबुभाई साहेब को आप पहचान लेना, रात को उनका समागम करना, कथा सुनना। ***बापा एक बार बोले थे कि अभी उनके बारे में पता नहीं चलता, मगर भविष्य में बाबुभाई भगवान के स्वरूप जैसे पूजे जाएँगे...***

बापा ने एक बार पप्पाजी को अक्षर देरी में आरती करने की सेवा सौंपी। पप्पाजी सुबह 6 बजे आरती करने गए, तब अक्षरदेरी में ज़्यादा रोशनी नहीं थी। तो, पप्पाजी जब आरती उतार रहे थे, तो अचानक पूरे मंदिर में प्रकाश हो गया। बापा को उन्होंने सारी बात बताई, तो वे बोले कि घनश्याम महराज, भगवान स्वामिनारायण में से electricity का प्रकाश निकला था, उसका वो उजाला था। बापा ने काकाजी-पप्पाजी की खूब महिमा गाई थी। हम कितना ही उनका गुणगान करें, मगर जब तक उसका सुख नहीं आयेगा तब तक अधूरा है। ऐसे ही हमारे स्वामीजी थे और आज साहेब, गुरुजी और प्रेमस्वामी हैं। हम इन्हें स्वरूप कहते हैं, पर उसके लिए हमें स्वरूपलक्षी जीवन जीना चाहिए... स्वरूप होना-भगवान होना आसान है, पर भक्त बनना बड़ा कठिन है...

साक्षात् बापा के वचन थे कि इन दोनों भाइयों के आगे-पीछे लाखों भक्त घूमेंगे, ये उनका कल्याण करेंगे। मैंने भगवा कपड़े पहने हुए हैं। काकाजी-पप्पाजी ने कहाँ पहने थे? कपड़े सफ़ेद हो या भगवा, त्यागी हो या गृहस्थ, उसका कोई फर्क़ नहीं। जो भगवान भजे उसके भगवान हैं...

यहाँ से कुछ लेकर जाना, उठने के बाद अपने कपड़े झाड़ कर मत चले जाना। *बापा ने एक बार काकाजी-पप्पाजी को अपने कमरे में बुला कर कहा था कि आपके द्वारा मुझे बड़ा काम करवाना है, भक्त आपकी राह देख कर बैठे हैं। काकाजी बोले—बहनें भगवान भजने का संकल्प करके बैठी हुई हैं। तब* ***बापा बोले—बहनों का ये कार्य आप दोनों (काकाजी-पप्पाजी) को करना है। भविष्य में ऐसी लाखों-करोड़ों बहनें तैयार होंगी। आज उस बात का पता चलता है। बापा संप, सुहृदभाव, एकता की जो बातें करते थे, उस पर हमें अमल करना है। भक्त ब्रह्म की ही मूर्ति है और ये अक्षरधाम की सभा है। यहाँ सहजानंदी सिंह बैठे हैं...***

प.पू. प्रेमस्वामीजी (हरिधाम)

...युवक प्रभुदासभाई के रूप में हरिप्रसादस्वामीजी जब बापा के पास थे, तब बापा ने उनसे कहा कि सेवा का कार्यक्रम पूरा होने के बाद ताड़देव जाया करना। ताड़देव में काकाजी-पप्पाजी का संबंध हुआ। दोनों स्वरूपों ने हमें गुणातीत स्वरूप की महिमा में डुबाया। सब स्वरूप बापा का

माहात्म्य स्वयं समझते हुए और समझाते हुए यही कहते हैं कि उनके बल से हम संबंध देख कर जीते हैं। वर्ना हमारी क्या लायकता थी कि उनके चरणारविंद धरती पर पधारें और उन्होंने हमें अपनी गोद में बिठाएँ। उनके लिये जितना भी करें, उतना कम है। सभी स्वरूप हमें आशीर्वाद दें कि हम भी उनकी भाँति स्वरूपलक्षी जीवन जीते हो जाएँ।

प्रभुदासभाई (स्वामीजी) के साथ सेवा में मैं रहता था, तब किसी ने उनका खूब मज़ाक़ उड़ाया। वह सब सुन कर मेरा दिमाग़ गर्म हो गया। पर, स्वामीजी की ओर देखा, तो अंदर सब शांत हो गया। फिर मैंने उन्हें सब बताया, तो कड़क भाषा में वे बोले कि ***हम सब में बापा को देखते कब हो जायेंगे?*** *वो मुक्त बापा का है न, तो फिर उसे किसी दूसरी नज़र से हम देख नहीं सकते।*

सभी स्वरूप आशीष दें कि हम आपकी रीति-नीति से, आपको राज़ी करने और आपके बल से जीकर स्वरूपलक्षी बनें। *स्वामीजी कहते कि हमने बापा के पास आकर कुछ नहीं किया। फिर भी उन्होंने हमें सुखी कर दिया।* ***इसी जन्म-इसी देह में हम उनके जैसे सुखी हो जाएँ, ऐसा बुद्धियोग दें*** *— यही प्रार्थना।*

प.पू. दिनकर अंकल (शिकागो)

...निर्मलस्वामीजी ने संकेत दिया कि सबने आध्यात्मिक भोजन बहुत परोस दिया... मैं भोजन खाने वालों में से हूँ। बस एक-दो प्रार्थना करनी है। पप्पाजी नौ बार अमेरिका पधारे। काकाजी-पप्पाजी का कुटुंब या हमारा अपना कुटुंब। सभी को आनंद हुआ कि हंसा दीदी के आशीर्वाद से घनश्यामभाई अमीन स्वस्थ हो गए। दो वर्ष के बाद काकाजी का भी ऐसा उत्सव आएगा, तब घनश्यामभाई उसे मनाएँगे। दीदी, आप भी 110 वर्ष तक तंदुरस्त देह से इस धरा पर रहो, ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी (दिल्ली)

मुझे कान की तकलीफ़ आई, तो मैंने सोचा कि function में नहीं आ पाऊँगा। पर, हमारे डॉ. परिमल देसाई ने दवाई दी, तो उससे राहत मिली...

रात को रोज़ की तरह धुन करके सो गया, तो काकाजी-पप्पाजी सपने में पधारे। दोनों ने मुझे कहा कि किसी भी तरह विद्यानगर पहुँच जाना, वर्ना हंसा दीदी का 'ठपका' (गिला-शिकवा) मिलेगा। मैंने सोचा कि ये उत्सव इतना बड़ा थोड़े है। पर, फिर ख्याल आया कि ***पप्पाजी का 108वाँ प्रागट्य दिन है। हम रोज़ 108 मनके फेरते हैं और अगर ऐन मौके पर ही 108 का***

आदर न करें, तो माला के मनके फेरे न फेरे बराबर है। *इसलिये मैंने तय कर लिया कि जाना ही है। सुबह उठ कर नाश्ता करके, नहा धोके यहाँ आ गये और आपके सामने बैठे हैं...*

ये सारा श्रेय दीदी को जाता है। क्योंकि वे काकाजी-पप्पाजी को अखंड धार कर, भेददृष्टि के बिना जीकर, पूरे समाज को सर्वदेशीयता की प्रेरणा देती हैं। हम सबको उस मार्ग पर जाना है। ये जो पुस्तक 'चिरंजीव श्रुतिगीता' का अनावरण किया है, उसमें पप्पाजी का दिया 'संजीवनी मंत्र' भी लिखा है। आप लोग रोज़ इन दस मुद्दों को 5 बार पढ़ कर भजन करना। सहज ही काकाजी, पप्पाजी, साहेब प्रेरणा देंगे। पूरी बात का हार्द-मर्म वे हमारे हृदय में प्रगटा देंगे। उस भजन के फलस्वरूप मैंने जो बात कही वो आपके भीतर में ठहरेगी और अंदर सब पिघला कर हमें ठंडक का अनुभव करायेगी कि सच्चा आनंद तो प्रभु मिलने का है। *साथ ही, उनके* ***ये जो स्वरूप मिले हैं, उनमें ज़रा भी कम-ज़्यादा देखे बिना सर्वदेशीयता से उनका पूजन करें। पूजन का अर्थ है कि प्रत्येक पल उन्हें कर्ता-हर्ता मान कर जिएँगे, तो सभी स्वरूप हम पर अखंड कृपा बरसायेंगे।*** *उस कृपा के हम अधिकारी बनें यही प्रार्थना। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी को याद करके इन मुद्दों को पढ़ोगे, तो इसका रहस्य स्वतः पता चलता जाएगा, यही बात करने मैं आज आया हूँ...*

संतभगवंत प.पू. साहेबजी (अनुपम मिशन)

...काकाजी को हुई समाधि के बाद ख्याल पड़ा कि प्रगट की उपासना ही अक्षरपुरुषोत्तम उपासना है।

हम महाराज के समय की ***'मछियाव की फईबा'*** *का प्रसंग जानते हैं। उन्हें भगवान की ज़बरदस्त निष्ठा थी और महाराज को भगवान मान कर उनकी आज्ञा पालती थी। पूरे गाँव को उन्होंने सत्संग करवाया। उनके पुत्र का विवाह हुआ, तो बहू भी उनके जैसी भक्ति वाली। फईबा के साथ-साथ सब उनकी बहू का भी खूब गुणगान करते। ईर्ष्या के कारण फईबा से वो सहन नहीं हुआ। एक बार महाराज उनके यहाँ पधारे, तो फईबा ने पूरे गाँव को आमंत्रित किया था। सब खाना खाने के लिए बैठे, तो महाराज ने उनसे पूछा कि आपकी बहू कहाँ है, दिख नहीं रही? एकदम बोली, उसका नाम मत लेना। महाराज बोले, सब आये हैं, तो उसे भी बुला लो। वो बोली, आप आने वाले थे इसलिये दो दिन पहले ही उसे घर से निकाल कर मायके भेज दिया। बहू का मायका 5 किलोमीटर ही दूर था। तो, महाराज बोले कि घुड़सवार भेज कर उसे बुलवा लो, यदि आपने नहीं बुलाया तो देख लेना। ऐसा सुन कर भी वह बोली,* ***आप मेरे भगवान-इष्टदेव,***

सब कुछ हो। पर आपकी यह बात तो मैं मानूँगी ही नहीं। हठ पकड़ कर वह नहीं मानी। *महाराज भी बोले– चलो, संतों हमें यहाँ भोजन नहीं करना है। महाराज और संत बिना खाये निकल गये, फिर भी वो कुछ नहीं बोली।*

महाराज में कोई खामी थी? नहीं। फईबा की निष्ठा में कुछ खामी थी? नहीं।

फिर क्यों ऐसा हुआ? तो, ***यही 'ईर्ष्या' है...***

उन्हें गुणातीतभाव वाले साधु के साथ आत्मबुद्धि-प्रीति नहीं थी, इसलिये 'ईर्ष्या' नहीं टली। यह चीज़ शास्त्रीजी महाराज ने हमें अक्षरपुरुषोत्तम उपासना द्वारा बतायी कि भगवान हमारे इष्टदेव– वो एक ही है स्वामिनारायण! पर, वे मानव रूप में प्रगट मिलने चाहिएँ। उस सत्पुरुष से आत्मबुद्धि-प्रीति होगी, तो हम हठ, मान, ईर्ष्या और काम, क्रोध, मोह से ऊपर उठकर भगवान के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अलैया खाचर भी मान के कारण सत्संग से चला गया था।

हम विद्यानगर में पढ़ते थे। तब ***1964 में बापा ने काकाजी के हाथों में मेरा हाथ देते हुए कहा कि अब दादुभाई की आज्ञा में रहना और काकाजी को कहा कि इन युवानों का कार्य आप अपने सिर पर लो। तब से बापा का स्वरूप मानकर काका के साथ रहे, उनकी आज्ञा पाली। फिर बहनों के भगवान भजने का पक्का होने पर 1966 से पप्पाजी ने प्रभुकृपा तीर्थ में निवास किया। तब काकाजी ने हमें बुलाकर कहा कि अब आप सब बाबुभाई के पास आना और उनकी आज्ञा में रहना। फिर कभी काकाजी को पूछा नहीं, पप्पाजी को बापा का स्वरूप मान कर वैसी निर्दोषबुद्धि रख कर अश्विनभाई, शांतिभाई, सनंदभाई सब लग पड़े। फलस्वरूप संसाररहित होकर प्रभु के मार्ग पर चलते हो गये।***

बहनें भी स्त्री-पुरुष भाव से ऊपर उठ कर अक्षरधाम के सुख से सुखी होने के लिये चल पड़ीं। जहाँ स्त्री है, वहाँ ईर्ष्या है तथा जहाँ पुरुष है, वहाँ मान है। और... ये दोनों जहाँ हैं, वहाँ क्लेश है, है और है ही। गुरुजी ने भी कहा कि पप्पाजी का पूर्ण सेवन करके ***हंसा दीदी*** *उनके संबंध वालों की महिमा से सेवा करती रही और* ***आज पप्पाजी स्वरूप बन गईं।*** *ये है आसान सरल साधना!*

...दिल्ली से गुरुजी अपनी कान की तकलीफ़ को न गिन कर हमारे लिये आये। ये बहनें इतनी उम्र में भी भक्तों के लिये दौड़ा भागी करती हैं। वचनामृत निरूपण का जो पप्पाजी का ग्रंथ रिलीज़ किया, ये हमारे लिये बहुत बड़ी देन है। काका-पप्पा ने जो ये गुणातीत बाग खिलाया है उसमें हम सब आनंद से मिल जुल के रहें।

सूरत में प.पू. दिनकर अंकल के 80वें प्राकट्योत्सव का शुभारंभ...

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के जतन से बन रहे 'आत्मीय संस्कार धाम' की स्मृतियाँ...

Dinkar Uncle Lives in ‘KAKAJI’

Dinkar Uncle as ‘LIVE KAKAJI’

19 अक्टूबर– प.पू. दिनकर अंकल के 80वें प्राकट्योत्सव की सभा...

प.पू. दिनकर अंकल के प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

भगवान स्वामिनारायण की प्रासादिक पाग एवं श्रीफल के दर्शनार्थ...

प.पू. गुरुजी के प्रासादिक
पैतृक स्थल के दर्शनार्थ...

सूरत में नवनिर्मित गुणातीत ज्योत में पुष्प-वृष्टि...

सूरत के मुक्तों के घर के पधरावनी...

पू. किशोरभाई देसाई

पू. पुरुषोत्तम मामा

पू. धनंजयभाई देसाई

सूरत की पावन भूमि पर प.पू. दिनकर अंकल का 80वाँ प्राकट्योत्सव

1986 में गुरुहरि काकाजी महाराज के स्थूल रूप से अंतर्धान होने के उपरांत, 1991 में दिल्ली-अशोकविहार के निर्माणाधीन मंदिर के हॉल में **गुरुहरि काकाजी महाराज** का प्राकट्योत्सव मनाया था। तब शिकागो से **प.पू. दिनकर अंकल** पधारे थे और गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रत्यक्ष होने का प्रमाण देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने कहा था—

दिनकरभाई! जिनके द्वारा आज भी काकाजी के प्राण धबक रहे हैं...

सच, गुरुहरि काकाजी महाराज से हमें भेंट स्वरूप प्राप्त हुए उनके ज्योतिर्धर— **प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई**—सभी गुरुहरि काकाजी महाराज को पल-पल धार कर ऐसा जी रहे हैं कि इनके द्वारा वे जीवंत रह कर नए-पुराने सभी मुक्तों की आध्यात्मिक उन्नति कराने के लिए सदैव तत्पर हैं।

गुरुहरि काकाजी महाराज के जंगम मंदिर प.पू. दिनकर अंकल का 1 अक्तुबर एवं शरद पूर्णिमा के अनुसार 16 अक्तुबर 2024 को 80वाँ प्राकट्य दिन होने के कारण, उनसे जुड़े शिकागो और भारत के मुक्तों के लिए यह भक्ति अदा करने का सुनहरा मौका था। परंतु, अमेरिका पहुँचने में सब असमर्थ होते, इसलिए शिकागो के स्थानिक मुक्तों ने वहाँ प्राकट्योत्सव मनाने का सोचा और... **19-20 अक्तुबर 2024** को गुजरात-सूरत की भूमि पर बड़े पैमाने पर मनाने का तय किया, ताकि भारत में निवास करते गुणातीत समाज के सभी मुक्त आसानी से इस महोत्सव का लाभ लेकर आशीर्वाद प्राप्त करें और विभिन्न सेवाओं द्वारा अपनी भावना व्यक्त कर सकें।

प.पू. गुरुजी भी दिल्ली मंदिर के अधिकांश संतों, सेवकों, **प.पू. आनंदी दीदी**, बहनों तथा दिल्ली, यू.पी., हरियाणा, पंजाब, गुजरात व मुंबई के तकरीबन 110 मुक्तों सहित इस उत्सव में जाने के लिए तैयार हुए। **18 अक्तुबर** की दोपहर 12:00 बजे मंदिर से Airport के लिए रवाना हुए। सायं 5:00 बजे flight से सूरत Airport पहुँचे। वहाँ प.पू. गुरुजी का स्वागत करने आए **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. भरतभाई-प.पू. वशी अंकल** ने उन्हें हार अर्पण किया। इसी प्रकार, **प.पू. माधुरी बहन** व **पू. जयश्री बहन** ने प.पू. दीदी को हार अर्पण किया। इसी दौरान पंजाब, गुजरात व मुंबई के मुक्त train द्वारा सूरत पहुँचे। सभी **'सीरवी समाज भवन'**

गए, जहाँ सबके ठहरने की व्यवस्था की थी। यहाँ अल्पाहार और फिर रात को प्रसाद लेने के बाद सभी आराम में गए।

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी से प्राप्त आत्मीयता के संस्कारों का सिंचन करने हेतु **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** सूरत के **'सणीया कणदे'** क्षेत्र में **'आत्मीय संस्कारधाम'** का निर्माण करवा रहे थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि प.पू. दिनकर अंकल के प्राकट्य पर्व के उपलक्ष्य में सभी स्वरूप एवं केन्द्रों के संत-मुक्त एकत्र हुए हैं, तो निर्माणाधीन मंदिर को जल्दी पूर्ण कराने हेतु सब वहाँ पधारें और धुन करें व प्रसाद लें। सो, **19 अक्तुबर** की सुबह 'सीरवी समाज भवन' से सभी वहाँ गए। **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी को ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का स्वरूप मान कर, उनकी आज्ञा में पल-पल तत्पर रहने वाले संतों, सेवकों, मुक्तों ने प्रेमपूर्वक सबकी आवभगत की।** यहाँ अल्पाहार लेने के पश्चात् सभी 'सीरवी समाज भवन' वापिस लौटे।

सायं 4:00 से 6:00 बजे तक सूरत के Apricot AC Dome में **प.पू. दिनकर अंकल** के प्रति भाव व्यक्त करने हेतु, **प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. रतिकाका (अनुपम मिशन), प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई** के सान्निध्य में **बहनों-भाइयों की सभा** का आयोजन था, जिसका संचालन शिकागो की **पू. डॉ. रचना** एवं पवई मंदिर से जुड़ी **पू. श्रीदेवी** ने किया। **'संप, सुहृदभाव, एकता पर्व'** के इस सत्र में 'संबंध से ब्रह्मरूप होना...' शीर्षक के अंतर्गत, पवई मंदिर से घनिष्ठता से जुड़ी **पू. निशिता बहन** (CA) एवं प.पू. दिनकर अंकल की सुपुत्री **पू. एमी बहन** ने गुणातीत स्वरूपों से हुए दिव्य अनुभवों को बताया। **प.पू. दिनकर अंकल** के प्रति दिल्ली मंदिर के मुक्तों की भावना-प्रार्थना **पू. नित्या दीदी** ने कविता के रूप में व्यक्त की। और... गुणातीत समाज की पूजनीय बहनों की प्रार्थना-आशीर्वाद से सभी कृतार्थ हुए—

प.पू. हंसा दीदी (विडियो दर्शन)

*...अक्षरपुरुषोत्तम का जो भव्य कार्य योगीबापा ने काका-पप्पा और बा को सौंपा था, उसकी सफलता का आज हमें दर्शन होता है। **काकाजी ने साक्षात्कार के बाद जो कार्य किये, तब उनका नाम भी 'दिनकर' ही था। उस नाम से आज हम दिनकर अंकल का प्राकट्य पर्व मना रहे हैं। काकाजी ने कृपा करके उन्हें जो निष्ठा करवाई, दिनकर अंकल ने उसे अपना कार्य माना हुआ है।** इसलिये उनके कार्य के दर्शन से खूब आनंद होता है। उनके प्रवचन के प्रारंभ में हमें सभी स्वरूपों का दर्शन होता है... हम खूब भाग्यशाली हैं कि काकाजी महाराज-पप्पाजी महाराज और बा मिले। उनका कार्य करने की सेवा हमें मिली है। ये **सेवा कैसे करनी, कैसे दासत्वभाव***

रखना और माहात्म्य समझना, उसका दर्शन दिनकर अंकल के जीवन से होता है। *आज उनका 80वाँ प्राकट्य दिन मना रहे हैं। जब पप्पाजी का 80वाँ प्रागट्य दिन था, तब हमने सोचा कि क्या नाम रखें?* ***पप्पाजी ने तो योगीबापा की आज्ञा को अपना जीवन बना कर जो 'सेवा-भक्ति' की, उसके अनुरूप 'भक्ति उत्सव' नाम दिया। इसलिये आज यह 'भक्ति उत्सव' है।*** *योगीबापा जिस संप, सुहृदभाव और एकता पर्व की बात करते थे, उसका सच्चा आनंद अपना संबंध देकर सभी स्वरूप प्रदान करें। दिनकर अंकल ने इतना कार्य किया है कि युवकों-युवतियों ने उनका स्वीकार करके केवल जीवन सफल नहीं किया, अपितु समर्पण किया। दिनकर अंकल को कोटि-कोटि धन्यवाद कि उन्होंने जिनकी प्राप्ति की, उनके कार्य को अपना मान कर, जीवन की प्रत्येक श्वास अर्पण कर दी। समस्त समाज की ओर से उन्हें खूब भावभरे जय स्वामिनारायण।*

प.पू. मधु बहन (गुणातीत ज्योत)

...हाल ही में ज्योत में एक सत्संगी आये थे। उनकी 15-16 साल की बच्ची दिनकर दादा के साथ रोज़ फोन पर बात करती है। उसके पापा जब बीमार थे, तब दिनकरभाई वहाँ रोज़ धुन करने जाते। किससे उनका संबंध है, वे कौन हैं यह कुछ भी नहीं जानते थे। बस, उन्हें इस समय ज़रूरत है, तो दिनकरभाई उनके यहाँ जाते थे। यूँ उनका परिवार इतना जुड़ गया कि फिर काकाजी-पप्पाजी शताब्दी उत्सव में उन्होंने भाग लिया था। स्वामिनारायण धर्म के प्रति इतना प्यार हो गया...

दिनकरभाई की शादी सुधा बहन से हुई, तब हम ताड़देव में रहते थे। बाद में कैंसर होने के कारण सुधा बहन अक्षरधाम चली गई। उनकी छोटी-सी बेटी एमी फ़ोन का रिसीवर लेकर कहती कि माँ तू कब आयेगी, क्यों आई नहीं? पर, ***दिनकरभाई डिगे नहीं-कैसी स्थिति! भगवान ऐसे मुक्तों को प्रभु भजने की सहूलियत कर देते हैं। रुपित और एमी अपनी मौसी कुसुम बहन के पास पले-बढ़े। दिनकरभाई को उनकी कोई चिंता नहीं थी। एक बार बच्चों के बारे में उन्हें किसी ने पूछा, तो बोले मुझे पता नहीं है। जगत की दृष्टि से देखें, तो ऐसा हो कि अपने बच्चे पर ध्यान नहीं दे सकते। पर, दिनकरभाई शुरू से ही ऐसे गुणातीत स्वरूप ही होंगे।*** *महाराज के समय का एक प्रसंग है। महेमदावाद के दुर्लभराम के बेटे हरिकृष्ण और पत्नी को महाराज के साथ बहुत प्रेम था। लेकिन दुर्लभराम शंकर भगवान को मानते थे... महाराज ने हरिकृष्ण से कहा कि मुझे तुझे साधु बनाना है, पर तेरे पिता आड़े आते हैं। सो, कुछ ही दिनों में महाराज उसे धाम में ले जाने के लिए आए। उस दिन उसके घर महाराज के लिए भोजन भेजने की बारी थी। हरिकृष्ण ने माँ से कहा— मुझे महाराज लेने आये हैं और मैं जा रहा हूँ, जय*

स्वामिनारायण और फिर वह धाम में चला गया। माँ को महाराज की प्रति खूब निष्ठा थी। अभी घर में ही बच्चे का शव रखा था, लेकिन वह अच्छे कपड़े पहन कर, थाल लेकर महाराज के पास गई। महाराज उसका भाव देखते ही रह गए और थाल में से भोजन करते ही गए, रुके ही नहीं। सेवक ने महाराज से कहा कि आपको क्या हो गया है? पूरा थाल समाप्त कर दिया और अभी भी मांगे जा रहे हैं? महाराज कुछ बोले नहीं, सिर्फ हँसे। फिर सबको सारी बात पता लगी, तो ख्याल पड़ा कि इसलिये महाराज को उसका भाव ऐसे स्वीकारना पड़ा। इसी प्रकार, सुधा बहन के धाम जाने के बाद मौसी ने उनकी परवरिश की और ***दिनकरभाई कोई चिंता न करते हुए काकाजी के होकर जीने लगे। जैसे काकाजी कहते, वैसे ही करते और उनका सेवन करके आज अमेरिका और यहाँ भी भक्तों के प्राणाधार बन गये... उन्होंने गेरुए कपड़े नहीं पहने हैं, लेकिन काकाजी ने उनका हृदय भगवा रंग दिया।*** *जब में* ***ताड़देव*** *रहती थी, तो काकाजी खूब बातें करते। एक बार वे विद्यानगर आये और हम सबसे पूछा—पप्पाजी को आप सब जानते हो? पप्पाजी यानि कौन, पहचानते हो? ऐसे स्वरूप हमें अंदर से प्रेरित करते हैं कि ये क्या हैं? मानव देह दिखता है, पर उनमें परब्रह्म शक्ति कार्य करती है, इसका अनुभव करवाते हैं।*

दिनकरभाई हर परिवार में खूब ओतप्रोत होते हैं। *एक बहन ने मुझे बताया कि दिनकरभाई हमारे परिवार में इतना ओतप्रोत होते हैं कि* ***अपना कुछ गिनते ही नहीं। जैसे काकाजी संबंध वाले के लिये पूरे मर-मिटते थे, वैसे ही दिनकरभाई हैं।*** *यूँ तो हमें उनका इतना परिचय नहीं है, मगर उनके संबंध वालों द्वारा परिचय होता है। ऐसे गुणातीत स्वरूप जिसे अपना संबंध देते हैं, उसका कल्याण ही करते हैं। उनके सुख-दुःख में भागीदार होते हैं, कितनी बड़ी बात है! उन्हें प्रार्थना है कि हम भी आप की तरह पप्पाजी का सेवन करके उन्हें राज़ी कर लें, ऐसा बल देना।*

प.पू. आनंदी दीदी (अक्षरज्योति)

...डॉ. रचना ने मेरे लिए कहा कि आशीर्वाद दें, लेकिन आज तो हमारे लिए प्रार्थना करके स्वरूपों के पास मांगने का दिन है। हम तो आशीर्वाद लेने के लिये आये हैं...

दिनकर दादा मेरे हरेक बर्थडे पर दिल्ली काफी सालों से अचूक आते हैं। मुझे अंदर से अच्छा भी नहीं लगता कि इतना भीड़ा लेकर वे आते हैं। लेकिन एक तरफ लालच रहती है कि आशीर्वाद मिल जायेंगे। हम तो बहुत छोटे सेवक कहे जायें... अभी डेढ़ महीने पहले जब मेरी सर्जरी हुई, तो मुझे ये डेट पता थी कि 19 और 20 अक्टूबर को दादा का 80वाँ बर्थडे मनाने के लिये सूरत में सब इकट्ठा होने वाले हैं। मेरे अंतर की इच्छा थी कि recovery इतनी हो जाए कि मैं दादा के बर्थडे पर सूरत पहुँच जाऊँ। काकाजी के पास आग्रह या जिद्द नहीं करी कि आप ऐसा ही कर

दो। काकाजी ने प्रार्थना सुनी और आज गुणातीत स्वरूपों के दर्शन के साथ आप सबके दर्शन का भी लाभ मिल गया।

दिनकर दादा के बारे में जैसे नित्या ने अपनी भावना में लिखा कि 'दिनकर' का अर्थ सूर्य है। ***जगत का सूर्य शाम को अस्त होता दिखाई देता है, लेकिन दिनकर दादा के रूप में काकाजी ने हमें अखंड सूर्य दिया है। जो संबंध में आने वाले सभी के चैतन्यों को प्रकाश देते ही रहते हैं।*** 2019 में दिनकर दादा का 75वाँ प्राकट्योत्सव शिकागो में मनाया था। तब गुरुजी के साथ हम सबको भी शिकागो जाने का मौका मिला था। दिनकर दादा के जीवन पर आधारित एक भजन गुरुजी बना कर ले गए थे। गुरुजी ने उस भजन में खुद कई बदलाव करवा कर, एक महीना दिव्यांग से रियाज़ करवाया। मानो पूरा एक महीने तक दिनकर दादा ही गुरुजी के माइंड पर छाए रहे होंगे। वो भजन इतना महिमा वाला है कि अगर आंखें बंद करके उसे सुनेंगे, तो जिसने भी एक बार दिनकर दादा का दर्शन किया होगा, उसे अंदर से आवाज़ आयेगी कि सचमुच दिनकर दादा का जीवन ऐसा ही है। उस समय मुझे लगा कि ***जिस ढंग से गुरुजी दिनकर दादा को निहारते हैं, उस ढंग से हमें भी स्वरूपों को निहारना चाहिये।***

दिनकर दादा का जीवन इतना सहज है कि वे हमारे level पर आ जाते हैं। वे इतनी बड़ी गुणातीत विभूति हैं, वो हम पहचान ही नहीं पाते हैं। उस भजन में भी एक लाइन है—

सोचता हूँ कि तुम इतने ऊंचे हो पर, इतने सस्ते बने हो हमारे लिये।

इसके दो मतलब थे कि एक तो दिनकर दादा का कद लंबा है और दूसरी ओर ***उनकी गुणातीत स्थिति भी खूब ऊँची है। पर, हम सबके लिये वे बहुत सस्ते बने हैं।***

दिव्य बंधुजोड़ी महोत्सव का आख़िरी उत्सव सांकरदा में मनाया था। वहाँ खाने की व्यवस्था थोड़ी दूरी पर थी। हमारी गाड़ी के आगे ही दिनकर दादा की गाड़ी खड़ी थी। हमने सोचा कि दिनकर दादा की गाड़ी के चलने के बाद हमारी गाड़ी आगे बढ़ाएँगे। तभी मैंने देखा कि तेज़ धूप में एक बहनजी छड़ी पकड़ कर धूप में खड़ी थीं। उन्हें देख कर दिनकर दादा ने अपनी गाड़ी रुकवाई। शायद उन्होंने दिनकर दादा से कहा कि उन्हें अपने ठहरने के स्थान पर जाना है और काफ़ी देर से गाड़ी का इंतज़ार कर रही हैं। दिनकर दादा तुरंत अपनी गाड़ी से उतरे और उन बहनजी को गाड़ी में बिठा दिया। खुद खड़े रह गये और हाथ जोड़ कर सेवक से कहा कि पहले इन्हें छोड़ आओ। बातचीत क्या हुई वो तो मैंने नहीं सुना, लेकिन दिनकर दादा को हाथ जोड़ते हुए देखा। ये दर्शन करके मन में एकदम विचार आया कि दिनकर दादा को मुक्तों के प्रति कैसी महिमा है

*कि वो बहनजी धूप में खड़ी न रहें। **हम जो महिमा-संबंध से देखने की बात करते हैं, वो दिनकर दादा खुद जीकर बताते हैं। उनकी पल-पल की क्रियाएँ हमें वो सिखाती हैं।***

*दो-तीन महीने पहले की ही बात है। दिल्ली मंदिर से दुबई की एक फेमिली जुड़ी है। उनकी भांजी शिकागो के downtown में रहती है। उसे fracture हो गया और कोई रिश्तेदार इत्यादि वहाँ न होने के कारण, उसने अपनी मासी (हेमा भाभी) को दुबई फोन किया कि fracture होने के कारण मैं अस्पताल में गई हूँ और मेरे पास कोई भी नहीं है। **गुरुजी ने सभी भक्तों को सर्वदेशीयता की सीख दी है कि गुणातीत समाज के सभी केन्द्र अपने हैं।** हेमा भाभी ने अपनी भांजी से कहा कि तुम घबराओ मत, दिल्ली आनंदी दीदी से बात करती हूँ। शिकागो में हमारे दिनकर दादा हैं, वे कुछ न कुछ ज़रूर करेंगे। उन्हें दादा का अधिक परिचय नहीं, तब भी कितने भरोसे से कहा कि हमारे दिनकर दादा वहाँ हैं। मेरे पास जब उनका फोन आया, तो मैंने Angie से बात की। शाम तक उसने दिनकर दादा से बात करके, उसके लिये खाना ले जाने की व्यवस्था की और सब कुछ अच्छी तरह हो गया। अगले दिन उसके कोई रिश्तेदार तो पहुँचे ही, लेकिन हर्षा बहन-पंकजभाई भी वहाँ पहुँच गये और दो-तीन दिन के बाद तो दिनकर दादा ने भी उसके पास जाकर खूब तसल्ली दी। न कोई जान-न पहचान, दिल्ली से सिर्फ एक फोन गया कि उतने में तो Angie, पंकजभाई, हर्षा बहन, दिनकर दादा खुद भी गए। वहाँ से उस समय के फोटोग्राफ्स भी मेरे पास आये। दुबई वाली बहनजी भी बहुत राज़ी हो गईं। **तो ये है संबंध की महिमा, जो दिनकर दादा या सभी गुणातीत स्वरूप अपने जीवन से सिखाते हैं।***

*सर्जरी के बाद एक महीने से मेरी physiotherapy चल रही है। Physiotherapist मुस्लिम है। Treatment करते-करते अभी वो भी जय स्वामिनारायण बोलता हो गया है। एक दिन वो आया, तब दिनकर दादा की phone call चल रही थी। मैंने दादा से सहज कहा कि physiotherapist आया है और उसे कहा कि हमारे गुरुदेव से बात करो। दादा को पता नहीं था कि वो हिन्दू है, मुस्लिम है या ईसाई है। दादा उसे बोले—जय स्वामिनारायण, शुक्रिया, शुक्रिया, शुक्रिया। Physiotherapist को दादा का इतना गुण आया और बोला कि आपके गुरुदेव बहुत अच्छे हैं, मुझे शुक्रिया-शुक्रिया बोल रहे थे। जब भी वो दिल्ली आयें, तो मुझे उनके दर्शन ज़रूर कराना। सिर्फ 2 मिनिट दादा की आवाज़ सुनने से उसे इतना गुण आया। **एक अनजान मुक्त के लिये दादा अस्पताल जा सकते हैं या एक Physiotherapist को आवाज़ से इतना स्पर्श कर सकते हैं, तो हम सबकी तो उन्होंने जिम्मेदारी ली है। वे हमारी तो कितनी care करते होंगे।***

दादा का प्रागट्य शरद पूर्णिमा के दिन हुआ है। शरद पूर्णिमा मतलब संपूर्ण चाँद। तो, हरेक के जीवन में ***जो भी सत्पुरुष हैं, उनसे पूर्णिमा के चाँद की तरह संपूर्ण प्रीति हो जाये****, ऐसी आज प्रार्थना है।*

1979 में काकाजी के सान्निध्य में कुरुक्षेत्र में एक शिविर हुई थी। वहाँ ब्रह्मसरोवर पर काकाजी ने एक वाक्य कहा था—दुनिया न माने-मानव न माने, तुम तो मानो। तो, दुनिया वाले शायद हमारी बातों या सत्संग को समझ नहीं पायेंगे। लेकिन, ***हमें तो इन गुणातीत पुरुषों ने बहुत अनुभव कराये हैं। हमारे जीवन में हमारे level पर आकर ओतप्रोत हुए हैं। तो, इनका जैसा स्वरूप है, वैसा हम पहचान लें****—आज के दिन सब प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप ऐसा आशीर्वाद दें...*

प.पू. सौजन्य बहन (भक्ति आश्रम)

...आज अक्षरधाम के सुख का अनुभव हो रहा है... ***हर एक को अपने शिष्यों की मोहब्बत होती है। हर एक को हठ, मान और ईर्ष्या परेशान करते हैं। मगर हमारे गुणातीत समाज में हम सब उससे परे हैं, इस बात का अनुभव होता है। आज जो इस सर्वदेशीय समाज के दर्शन होते हैं, वो अक्षरधाम तुल्य हैं।***

दिनकर अंकल का सबने खूब सुंदर दर्शन करवाया। उनकी क्या बात करें? प्रेमस्वामीजी की आज्ञा से हमारा शिकागो जाना हुआ। वहाँ पाटोत्सव और गुरु पूर्णिमा का उत्सव था। वातावरण के कारण प्लेन के उड़ने के समय थोड़ी गड़बड़ हो रही थी, सो New Jersey से late उड़ा। ***शिकागो एयरपोर्ट पर रात के डेढ़ बजे हम उतरे। मैं एकदम आश्चर्यचकित हो गई, कभी कल्पना नहीं थी कि दिनकर अंकल जैसे सत्पुरुष, दिव्य पुरुष, सिद्ध पुरुष, भगवान की मूर्ति में रहते पुरुष, जो अनंत शिष्यों को अध्यात्म मार्ग पर दौड़ाते हैं, वे मुझ जैसे तुच्छ सेवक को एयरपोर्ट पर लेने आयेंगे। कभी भी वो दृश्य मैं भूल नहीं पाऊँगी।***

हम जीव हैं और वे जगदीश, फिर भी भक्तों-संतों की वे जो महिमा समझते हैं, उसे कहने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं थे। बस, मन में प्रार्थना करी कि हे स्वामीजी, सभी गुणातीत स्वरूपों की महिमा में मुझे निरंतर रहना है, उसमें जल्दी से entry दे देना। ***जब तक महिमा नहीं प्रगटेगी, तब तक हम में भक्ति और पराभक्ति नहीं प्रगटेगी और सुख पाने की बात बड़ी दूर की है।*** *शिकागो के दो दिन के प्रोग्राम में मुझे वहाँ से Detroit जाना हुआ। मेरी ख़ुशनसीबी कि विभा बहन मेरी गाड़ी की चालक थी। वो ऐसी भक्त हैं, जो निरंतर दिनकर अंकल की अनुवृत्ति के अनुसार जीती हैं। गाड़ी में बातों द्वारा उन्होंने मुझे दिनकर दादा का अद्‌भुत दर्शन करवाया। साथ ही mobile द्वारा सुबह के स्वरुपयोग-प्रश्नोत्तरी का तक़रीबन डेढ़ घंटा लाभ*

लेकर बड़ा आनंद आया। **सुबह-सुबह इतना सारा समय निकाल कर दिनकर अंकल पूरे गुणातीत समाज को भगवान में जोड़ते हैं, यह कितनी बड़ी बात हैं। समागम करने वाले मुक्तों को भी धन्यवाद है। क्योंकि विदेश में तो किसी के पास समय ही नहीं होता, फिर भी सब अपने मोबाइल द्वारा जुड़ते हैं।** हमारा सफ़र तो 7 घंटे का था। तो, सभा के बाद विभा बेन ने मुझे बताया कि **दिनकर अंकल के जीवन में निर्लिप्तता का दर्शन होता है। इतने शिष्यों के बावजूद वे कभी किसी में बँधे नहीं हैं। दूसरी बात भक्त को समझ कर उसकी कक्षा पर जाकर वर्तना बड़ा कठिन है, वो चीज़ इनके जीवन में है।**

मानव जीवन का समय अपेक्षा के कारण बिगड़ता है। ये सत्पुरुष सिखाते हैं कि किसी से अगर हम किसी प्रकार की अपेक्षा न रखें, तो ही जीवन में सुखी होंगे। ऐसे स्वरूप हमारे पास हैं, वो ही हमारे जीवन की पूंजी हैं। विभा बहन से दिनकर अंकल के बारे में सुन कर मन में एक ही विचार आया कि उनका अस्तित्व रहित-अहंकार रहित, भक्तवत्सलता का जीवन है। उनके जैसा दासत्व मुझे सीखना है...

आज मैं यहाँ ब्रह्मस्वरूप काकाजी की कृपा से बैठी हूँ। सर्वप्रथम मैंने 1977 में स्वामीजी को पत्र लिखा था कि मुझे साधु होना है। तब मैं college के तीसरे साल में पढ़ रही थी। **स्वामीजी ने जवाब लिखा कि मैं किसी को निर्णय नहीं देता।** अगर काकाजी की आज्ञा और मंजूरी होगी, तो तुम्हें ज़रूर साधु बनने की सुविधा कर देंगे। तब प्रेम बहन थे, तो सुरुचि बहन और दक्षा मंदिर की बहनों को मैंने कह रखा था कि जब भी काकाश्री दक्षा मंदिर में पधारे, तो मुझे कहलवाना। मुझे साधु होना है, वे आज्ञा नहीं देंगे, तो मेरा कल्याण का मार्ग बंद हो जायेगा। जब काकाश्री मुंबई से सोखड़ा आते थे; तब हरिधाम नहीं बना था, सोखड़ा का पुराना मंदिर था। फिर काकाजी जब दक्षा मंदिर में आए, तो संदेश मिलते ही मैं वहाँ पहुँच गई और उनसे प्रार्थना की कि मुझे साधु बनना है, आप कृपा करें। **काकाजी ने खूब खुश-राज़ी होकर 'हाँ' की। मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा, मैं धन्य हो गई।** फिर काकाजी ने तुरंत सतु पप्पा को बुला कर कह दिया कि जब भी आपको स्वामीजी मिले, उनसे कहना कि मैंने इस लड़की को साधु होने की 'हाँ' की है। इस प्रकार **काकाजी ने मेरे लिए कल्याण का मार्ग खोल दिया। वर्ना आज मेरा क्या होता, पता नहीं? अगर इन स्वरूपों ने हमें ब्रह्मरुप के रास्ते पर, positivity के रास्ते पर न चलाया होता, तो अपना क्या होता?** स्वामी की बातों और वचनामृत में जो कुछ लिखा है, वो बातें सिर्फ शास्त्रों में लिख कर रह जाती। जैसे आनंदी दीदी ने कहा, ये स्वरूप खुद जी के दिखाते हैं। **जब तक जीव में दासत्व नहीं प्रगट होगा, ब्रह्मरुप नहीं हो पायेंगे।** तो, सभी स्वरूपों से

प्रार्थना है कि प्रेमस्वामीजी ने समाज को जो सूत्र दिए हैं— भूल जाना, पिघल जाना, Let go करना—ये दासत्व की ओर ले जाते हैं। जल्द से जल्द ये मेरा जीवन बने। मैं सभी स्वरूपों का नाम रोशन कर सकूँ। मेरी साधना सरल बने और भगवान की मूर्ति के सुख से सुखी होऊँ। संकल्प, क्रिया और भाव प्रभुप्रेरित, प्रभुमय, प्रभुमान्य बनें ऐसे आशीष-बल दो, संकल्प करो।

प.पू. माधुरी बहन (पवई)

...आज का दिन बहुत बढ़िया कि सब स्वरूपों का हमें लाभ मिला। सब स्वरूपों से अच्छे प्रसंग सुने और स्मृति हो गई। ***दिनकरभाई सभी स्वरूपों के लाड़ले हैं...*** *संत परम हितकारी ऐसे सब स्वरूप बैठे हैं, जो हमारे हित के लिये सब कार्य कर रहे हैं। हम भगवान में अखंड रहकर, मूर्ति में रहकर सब कार्य करें, उसके लिये इतने सारे प्रसंग बताते हैं। दिनकरभाई रोज़ zoom पर सभा में मार्गदर्शन देते हैं—उसमें साहेब दादा, गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई की भी clips आती हैं।* ***साहेब दादा भी हमें यही मार्गदर्शन देते हैं कि किसी का मत देखो। ये स्वरूप हमें सबसे पहली और बड़ी यही बात हमें जीवन में लागू करना सिखाते हैं कि गाओ, तो हमेशा गुण गाओ। ऐसे ही दिनकरभाई हमेशा कहते हैं कि negative शब्द उनके शब्दकोश में ही नहीं है।*** *केवल संबंध वाली दृष्टि, सबको खूब बड़ा मानते हैं। सुबह जो सभा होती है, उसमें भी वे पंकजभाई, किशोरभाई मास्टर वगैरह को बोलने का लाभ देंगे। उन्हें ऐसा नहीं कि मैं बात करूँ या मैं समझाऊँ, उनका ऐसा सहज जीवन है।*

1998 में योगिनी बहन और हम शिकागो गये थे, तब काकाजी का प्रागट्य दिन था। वहाँ हमने दर्शन किया कि वॉकिगन मंदिर में रोज सुबह पूजा में पूजन वगैरह करने के बाद, दिनकरभाई सभी कमरों की मूर्तियों का पूजन करते थे। यहाँ तक कि उनकी डायरी में भी जो मूर्ति लगी होती है, उसका भी वे पूजन करेंगे। पवई मंदिर में आते हैं, तो सभी मूर्तियों के नज़दीक जाकर, हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं। मूर्ति में प्रभु सच में प्रगट हैं, ऐसा मानकर सभी मूर्तियों के समक्ष प्रार्थना करते हैं... ***उनका मोबाइल भी एक लाइब्रेरी है। उसमें वचनामृत, स्वामी की बातें, जेवा में निरख्या रे, अस्खलित मंगल कृपा धारा वगैरह सारी e-books है, तो उसमें से पढ़ कर भी वे हमें मार्गदर्शन देते हैं।*** *हमें ऐसा लगता है कि ये सब पढ़ने के लिए हमारे पास टाइम ही नहीं है, लेकिन उनके जीवन में एकदम सहज है। शिकागो में दिनकरभाई का जो प्रागट्य दिन मनाने वाले थे, उसके लिए दिनकरभाई ने सब युवकों से कहा कि आप मेरा नहीं, साहेब दादा का प्रागट्य दिन मनाओ। ये बहुत बड़ी बात है कि सब कुछ तैयारी-सजावट वगैरह होने के बाद भी भक्तों और युवकों ने तुरंत ही कोई विचार किए बिना दिनकरभाई की आज्ञा से साहेब*

*दादा के लिए तैयार कर दिया। **ऐसे बड़े पुरुष कभी अपने बारे में नहीं सोचते कि मेरी वाह-वाह हो।** वे ऐसा भी कह सकते थे कि साहेब दादा का भी साथ में मनायेंगे... दूसरी बात साहेब दादा भी बहुत प्रार्थना करने के बाद आसन पर बैठे। सब भक्त राजी हों, उसमें वे राजी हैं...*

*एक बार दिनकरभाई, भरतभाई, मास्टर और हम सब विद्यानगर से आ रहे थे। ट्रेन ज्यादा समय के लिए वहाँ ठहरती नहीं थी। तो, ट्रेन में चढ़ते हुए मेरा मोबाइल गिर गया। दिनकरभाई तुरंत बोले कुछ गिर गया। मुझे लगा कि मेरा रुमाल गिरा होगा। दिनकरभाई ने देखा तो मेरा मोबाइल गिरा था। मैंने कहा, रहने देते हैं, ट्रेन चलने का टाइम हो गया है, आप ट्रेन में चढ़ जाओ। लेकिन, दिनकरभाई ने ट्रेन का हैंडल पकड़ा था और मास्टर ने लेट कर फोन निकाल लिया। मास्टर ने बताया कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि मानो हाथ लंबा हो गया है... **बड़े पुरुष अपने ऐश्वर्य-प्रताप दिखाते नहीं हैं, पर अनुभव कराते हैं।***

*हम काकाजी के पास बैठते थे, तो वे घड़ी लेकर बैठते थे। उनका प्रभाव, ऐश्वर्य दबा कर बैठते थे, वर्ना हम उनके पास बैठ ही नहीं सकते थे। **दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, गुरुजी, साहेब दादा, अश्विन दादा, प्रेमस्वरुपस्वामी इतने बड़े पुरुष हैं और हमारे level पर आकर बात करते हैं**... सुबह फोन की सभा में किसी का प्रश्न होता है, तो वे पूछते हैं और दिनकरभाई जवाब देते ही हैं। अगर समय पूरा हो गया होगा, तो दिनकरभाई कहते हैं कि अगली सभा में जवाब देंगे। जब तक उत्तर पूरा नहीं होगा; तब तक वे बात करते रहेंगे, बीच में नहीं छोड़ते। समाधान देते ही हैं। इससे पता लगता है किस हद तक वे ख्याल करते हैं। **शिकागो में सभा में आने-जाने के लिए किसी के पास गाड़ी न हो, तो दिनकरभाई व्यवस्था करते हैं, यह भी सबसे बड़ी बात है। उनका जीवन सहज, साधुता, सरलता, समग्रभाव, साक्षीभाव वाला है। हमें ये मूर्ति मुफ़्त में मिली है।** ऐसी मूर्ति में अखंड रहने का आग्रह वे हमसे रखते हैं...*

सभा का समापन करके मंच से बहनों ने प्रस्थान किया और तुरंत ही मंच का दृश्य बदल गया, क्योंकि **प.पू. गुरुजी, प.पू प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी एवं प.पू. दासस्वामीजी** का पंडाल में आगमन हुआ। **'चौक पुराओ, माटी रंगाओ-आज मेरे गुरुजी घर आएंगे...'** वृन्दगान एवं तालियों की गड़गड़ाहट से सबने स्वागत किया। स्वरूपों के मंचस्थ होने के उपरांत पवई मंदिर के **पू. हितेनभाई** ने **प.पू. दिनकर अंकल का भजन—'छायो रंग छायो, सुहृद रंग छायो...'** गाकर इस सत्र की मंगल शुरुआत की। सभा का संचालन करते हुए शिकागो के **पू. अमितभाई** ने सर्वप्रथम **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** द्वारा गीता के पाँचवे अध्याय के 29वें निम्न श्लोक के अनुसार **प.पू. दिनकर अंकल** को **'सुहृदम्'** कह कर नवाज़ा, उसकी स्मृति की—

भोक्तारम् यज्ञ-तपसाम् सर्व-लोक-महेश्वरम्,
सुहृदम् सर्व-भूतानाम् ज्ञात्वा माम् शान्तिम् ऋच्छति।

अर्थात्—जो भक्त मुझे समस्त यज्ञों और तपस्याओं का भोक्ता, समस्त लोकों का परम भगवान और सभी प्राणियों का सच्चा हितैषी (सुहृद) समझते हैं, वे परम शांति प्राप्त करते हैं।

वाक़ई, प.पू. दिनकर अंकल भक्तों के कैसे सुहृद बने होंगे कि **पू. धीरजभाई तथा पू. सचिनभाई** Australia से 40 घंटे का सफ़र तय करके केवल 20 घंटे के लिए सूरत-भारत आए और अपने अनुभवों का लाभ देकर लौट गए।

मुक्तों का वक्तव्य पूरा होने के बाद, **प.पू. वशीभाई ने प.पू. गुरुजी द्वारा दिए जाने वाले एक surprise की ऐसी भूमिका बताई कि सभी आतुर हो उठे। वह आश्चर्य यह था कि प.पू. गुरुजी की आज्ञा से दिल्ली मंदिर से गुरुहरि काकाजी जैसी वेशभूषा तैयार करके लाए थे और... उन्हीं के पसंदीदा पात्र प.पू. दिनकर अंकल से प्रार्थना की कि वे वह पहन कर हूबहू गुरुहरि काकाजी के रूप में सबको दर्शन दें। सो, इस रूप में प.पू. दिनकर अंकल ने जैसे ही प्रवेश किया तो ऐसा लगा कि साक्षात् गुरुहरि काकाजी महाराज ही प्रत्यक्ष हाज़िर हो गए हैं। भावुक हृदय, हर्षाश्रुओं से मुक्तों ने अभिनंदन किया।** मंच के मध्य में सोफे पर **प.पू. दिनकर अंकल** के विराजमान होने के बाद **पू. अमितभाई** ने भाव व्यक्त करते हुए कहा—

पहली बार, Dinkar uncle living in Kakaji-Dinkar uncle as Kakaji sitting on the stage... It's a joyous occassion. Million and million thanks to Guruji & the whole Delhi family for doing this... कोटि-कोटि वंदन गुरुजी और सारे दिल्ली परिवार को कि ऐसा fantastic surprise सबको दिया।

ऐसी नूतन स्मृतियों के बाद **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया—

...आज अक्षरधाम में महाराज से लेकर स्वामीजी तक सभी स्वरूप खूब राज़ी होते होंगे कि धरती पर जाने का उनका परिश्रम सफल हो रहा है। *सुहृदभाव से हम सदा, सदा, सदा ऐसे ही साथ रहें, ऐसे आशीर्वाद दिनकरभाई दें।* ***गुरुजी इतनी उम्र में, इतना कष्ट सह कर यहाँ पधारे।*** *मेरा अहोभाग्य कि उनके साथ रहने का मुझे खूब मौका मिला। मुझे उनके शरीर के एक-एक सैल का पता है, इसलिए* ***ऐसे कृश देह से सबको आशीष देने पधारे, उसके लिए आपको दंडवत् प्रणाम है...***

स्वामीजी के साथ 1987 में पहली बार अमरीका जाना हुआ, तब दिनकरभाई के प्रथम दर्शन हुए। उनके जीवन में हमेशा एक चीज़ का दर्शन होता है, वो है सरलता। ***सरलता का पर्याय यानि दिनकरभाई! छोटे-बड़े प्रसंगों में केवल भगवान का ही बल लेकर जिए हैं। काकाजी से हज़ारों***

किलोमीटर दूर रह कर भी कैसा अद्‌भुत सेवन किया कि आज वे उनके हुबहू स्वरूप बने हैं। *गुणातीतभाव को पाए हुए पुरुष हैं। पर, साधक की दृष्टि से तो काकाजी ने उन्हें जो बात कही, वो आज तक उन्होंने पकड़े रखी है, बहुत बड़ी बात है। वर्ना तो* ***5-50 चेले जिसे मानते हो जाएँ, उसकी चाल ही बदल जाती है। पर, 1987 में उनका जो दर्शन किया था, वो ही आज भी उनमें हो रहा है। कई बार शिकागो गए, तो शुक्ल त्रयोदशी होने पर उन्होंने संतों का मुंडन भी किया हुआ है। ये सामान्य बात नहीं है, इससे उनकी सहजता, साधुता, दासत्व का दर्शन होता है। संसार में रहते हुए भी सवा सौ प्रतिशत अलिप्त हैं। अमेरिका की अंबरीश शिबिरों में तो स्वामीजी सबसे पहले इन्हें याद करते कि ये हम सब के आदर्श हैं...***

जैसा काकाजी की बात का स्वीकार था, वैसा ही स्वीकार उन्होंने पप्पाजी और स्वामीजी का भी किया। आज गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई के साथ उनका सखाभाव है, पर स्वीकार भी उतना ही है। यह बहुत कठिन है, फिर भी उनके जीवन में सहज है। *उन्होंने अपने जीवन में भगवान स्वामिनारायण और काकाजी को पसंद हो, केवल वो ही किया है। वे positivity का स्वरूप हैं। आप कैसे भी negative विचार लेकर जाओ, वे आपको पॉजिटिव बना के ही भेजेंगे, यह बहुत बड़ी विशेषता है।* ***महाराज और काकाजी को प्रगटाये हुए दिनकरभाई के विचार, वाणी और वर्तन में साम्यता है।*** *सोचने की बात है कि भक्तों का सिंचन करना, रोज़ सुबह डेढ़ घंटे तक टेलीफोन पर गोष्ठी करना, वचनामृत समझाना कोई सामान्य बात नहीं। इन्हें कोई स्वार्थ नहीं, बस निरपेक्षभाव है। काकाजी ने अपने जीवन में कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखी। गुणातीत पुरुष का ये बड़ा लक्षण इनके जीवन में सहज दिखता है। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब के जीवन जैसा ही दर्शन इनके जीवन से होता है... गुरुजी, निर्मळस्वामी, रतिकाका, भरतभाई, वशीभाई सब हमें आशीष दें कि स्वरूपों के दिखाए पथ को जैसे दिनकरभाई ने पकड़ कर रखा है, वैसा हम पकड़े रखें। उनके ढंग से, उन्हें राज़ी करने, उनके बल से जियें। प्रसंग बनने पर दिनकरभाई ने खूब भजन किया और कराया, जो बापा और काकाजी की रीति थी। दिनकरभाई Abbott Laboratories में बड़े officer थे, उनके नीचे कितने सारे फिरंगी काम करते थे। लेकिन office में भी ठाकुरजी विराजमान किए थे। सुबह वहाँ जाकर सबसे पहले रोज़ पूजा करते। अपने ओहदे का तनिक भी एहसास नहीं, यह खूब कठिन बात है। कंपनी में उनकी सुवास भी ऐसी कि जब भी छुट्टी चाहिए होती, तो मिल जाती। वो इसलिए कि वे महाराज और काकाजी के प्रति वफ़ादारी से जीते थे।* ***प्रभु के ऊपर ही अपना सारा भार डाल कर वे जिए हैं।*** *काकाजी का जीवनमंत्र था—संप, सुहृदभाव और एकता और सभी के प्रति एक सरीखा प्रभु का भाव! ये सुहृदभाव की top कक्षा है।* ***काकाजी की रीति थी—संबंध वाली दृष्टि। उन्होंने हमेशा***

सिर्फ़ संबंध ही देखा है। दिनकरभाई भी ठीक वैसे ही संबंध देख कर तुरंत झुक जाते हैं, सरल हो जाते हैं, पिघल जाते हैं। *हम सब भी ऐसे मार्ग पर चल पाएँ...*

तत्पश्चात् **पू. मिहिरभाई** ने प्रार्थनारूपी भजनों की पंक्तियाँ गाकर भक्ति अदा की। फिर **गुरुहरि काकाजी महाराज** द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकों, उनसे प्राप्त हुई शिक्षाओं व अनुभवों के आधार पर प्रकाशित हुई पुस्तकों एवं प्रस्तुत की गईं नृत्य नाटिकाओं का संक्षिप्त में वर्णन करते हुए, **प.पू. भरतभाई** ने **गुरुहरि काकाजी महाराज** के जीवन और कार्य पर नवप्रकाशित गुजराती महाग्रंथ **'अहो! गाथा दिव्य विभुनी...'** से सबको अवगत कराते हुए निम्न आशीर्दान दिया—

...गुरुजी ने दिनकर दादा को काकाजी का dress पहना कर एक अद्‌भुत दर्शन करवा कर सबको खूब आनंद करवाया। *ऐसे प्रागट्य उत्सवों पर सब के अंदर एक अलग ही प्रकार की भावना, इच्छा, intense aspiration और प्रार्थना होती है...*

दिनकर दादा अक्सर कहते हैं कि चार प्रकार से जन्म दिन होता है। एक हमारी age, दूसरा हम कितने साल के दिखते हैं, तीसरा हमें खुद अपनी क्या उम्र feel होती है और चौथा हमारी आत्मा की उम्र; जो करोड़ों साल की है, उसकी कोई गिनती ही नहीं...

जब भी हम गुणातीत सत्पुरुष के संबंध में आते हैं, तो पहला भाव ये होता है कि वे मेरे हैं। दूसरा—मैं उनका हूँ। अब यहाँ दो बातें आ जाती है कि मैं उनका हूँ, मगर जीऊँगा अपने तरीके से, उनके ढंग से नहीं... पर ***दिनकरभाई ऐसी रुचि- सुरुचि से जीये कि काकाजी की मर्जी जान कर अपना जीवन समर्पित कर दिया।*** *27 सितंबर को उन्होंने बताया था कि काकाजी किस तरह से उन पर राज़ी हैं और जब गुरु की मर्जी जान के जीना होता है, तो गुरु के नज़दीक हों या दूर, उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इसलिये* ***काकाजी कहते थे कि दिनकरभाई मुझ से दस हज़ार मील दूर हैं मगर मेरे नज़दीक हैं और आप नज़दीक हो तो भी दूर हो। इसलिये distance का कोई सवाल नहीं, गुणातीत स्वरूप किस बात से राज़ी होंगे, यही विचार हर पल होता रहता है।*** *एक बार स्वामीजी ने दादा से सहज ही कहा—आप पर चश्मा अच्छा लगता है। तब से वे चश्मे पहनते हैं, चाहे नंबर है या नहीं। स्वामीजी को पसंद है, तो पहनना है। एक बार स्वामीजी ने बताया कि हमें रोज़ रात को चेष्टा बोलनी चाहिए। उस दिन से हर रोज़ रात को 10 बजे दिनकर दादा के फोन में घंटी बजती है। फिर वे कहीं भी हों, उनकी चेष्टा शुरू हो जाती है।* ***उनका ऐसा भाव हर स्वरूप साहेब, गुरुजी, प्रेमस्वामी के प्रति है।*** *दिनकर दादा एक बार अनुपम मिशन गये थे, तब साहेब नहीं थे। पारमिता हॉल में सभा हुई। तो, सेवकों ने उन्हें साहेब की कुर्सी पर ज़बरदस्ती बिठाया। तो, उन्होंने अपने प्रवचन में पहली लाइन बोली—आज मैं नहीं*

*बोलने वाला हूँ, मेरे द्वारा साहेब बोलेंगे। **उनकी ये positivity unique है और बड़ी मुश्किल है।** हम सोच रहे थे कि दादा को क्या अर्पण करें? जिससे ये दिन memorable हो जाये... तो, आज हम काकाजी का जीवन चरित्र लोकार्पण कर रहे हैं। हेमंत मर्चेंट ने करीब 2-3 साल मेहनत करके ये लिखा है और साहेब, गुरुजी, दासस्वामी, अश्विनभाई, दिनकर दादा, वशीभाई, हंसा दीदी, सबसे correct करवाया है... इसमें कोई त्रुटि रह गई हो, कुछ लिखना भूल गये हों, तो विनंती है कि ज़रूर बताना और सब ज़रूर लाभ लें।*

मंचस्थ स्वरूपों ने इस महाग्रंथ की बड़ी प्रतिकृति का अनावरण किया। इसका शीर्षक हरिधाम के **प.पू. यज्ञवल्लभस्वामीजी** (पू. दासस्वामीजी) ने दिया है। तत्पश्चात् मंचस्थ स्वरूपों एवं पूजनीय बहनों को हार अर्पण करके सबके हृदय के भाव व्यक्त हुए। **पवई मंदिर से संभाजी नगर का मुक्त समाज खूब आत्मीयता से जुड़ा हुआ है।** सो, वहाँ की बहनों ने धुन करते हुए 18,000 माला फेर कर करीब **100 मालाओं** से काफ़ी बड़ा हार बनाया, जिस पर उत्सव का सूत्र-**संप, सुहृदभाव, एकता** लिखा था। यह विशिष्ट हार मंचस्थ स्वरूपों को एक साथ अर्पण करके सभी कृतार्थ हुए।

अंत में कई मुक्तों ने प.पू. दिनकर अंकल को हार, शाल एवं स्मृति भेंट अर्पण की और... पू. मिहिरभाई ने जोशीले भजन गाने शुरू किए, तो वहाँ उपस्थित भक्तों ने गरबा करके पंडाल को आनंद-उमंग से भर दिया। रात्रि को प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर गए।

20 अक्तुबर की सुबह 9:00 बजे से सभा का शुभ आरंभ दिल्ली के **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने **प.पू. दिनकर अंकल** के भजन गाकर किया। पूर्णाहुति की सभा में शिकागो के **पू. केतनभाई** के बाद, गुणातीत प्रकाश के साधक **पू. पियुषभाई पनारा** ने माहात्म्य दर्शन कराया—

...काकाजी, पप्पाजी और बा ने अथाह परिश्रम करके गुणातीत समाज का सर्जन किया। 'विविधता में एकता' की जो उनकी कल्पना थी, उसके अनुसार संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों की हमारी चार पंखुड़ियाँ अद्‌भुत कार्य कर रही हैं। ऐसा ही काकाजी का सर्जन दिनकर अंकल हैं, जिनका आज 80 वाँ प्राकट्य दिन मना रहे हैं। *कल तो* ***काकाजी जैसी वेशभूषा पहन जब दिनकर अंकल आए, तो ऐसा लगा कि सच में काकाजी ही पधारे... पप्पाजी उनकी बात करते हुए कहते कि खुद स्वरूप होते हुए भी चारों पंखुड़ियों के लिए दिनकरभाई आदर्श हैं।*** *साधक की दृष्टि से देखें तो भी उनका जीवन अद्‌भुत है।*

हम सब अपने स्वरूप को राज़ी करने के लिए ही समर्पित भाव से जीते हैं। जिसे स्वरूप का सेवन करना हो, उसके लिये ये आदर्श बात है। एक बार महेन्द्र बापु के साथ दिनकर अंकल

सूरत पधारे। बापु का व्यक्तित्व तो सब जानते ही हैं। हमने दिनकरभाई से कहा कि हमें आपका नज़दीक से परिचय नहीं है, तो आप कुछ बात करो। उन्होंने बात करते हुए अंत में जो कहा, वो हम सब के लिये बड़े काम की बात है। वे बोले अभी तो वे बापु की निश्रा, आज्ञा और सान्निध्य में रहते हुए काकाजी का कार्य कर रहे हैं। ***पप्पाजी जो कहते कि भिन्न अंग वालों से मैत्री; तो दिनकर अंकल खूब ऊँची अवस्था में जीते हैं, लेकिन अपने साथी-मुक्त को भी अपने समान नहीं, बल्कि प्रभु का स्वरूप मान कर उनका सेवन किया।*** *आज भी जैसे सब वक्ताओं ने कहा, वो उनके जीवन में साकार दिखता है।*

आज पूरा गुणातीत समाज इकट्ठा हुआ है। हम सब साधक हैं, पर पप्पाजी कहते कि त्यागी-गृही में कोई भेद नहीं है। स्वरूप का सेवन ऐसे भाव से होना चाहिए कि कोई अंतर या दूरी न लगे। ***गुरुजी को काकाजी के प्रति अपार लगाव था, पर 1966 में हम जब 'विमुखनारायण' की पदवी पाये, तो काकाजी ने उन्हें अपने सान्निध्य से दूर दिल्ली भेज दिया। ऐसे ही दिनकरभाई ने भी काकाजी को हृदय में बिठा कर, हज़ारों किलोमीटर दूर रह कर उनके स्वरूप का सेवन किया।*** *ऐसे दोनों गुणातीत स्वरूपों का आज हम दर्शन कर रहे हैं...*

साथी-मुक्तों के साथ रहते हैं, भरतभाई, वशीभाई, बापु इन सबने तो साथ रह कर दिव्यभाव-निर्दोषभाव दृढ़ किया। आज सब ऐसे आशीष दें कि हम जाग्रतता से अपनी साधना की ओर, एक ध्येय पकड़ कर लग पड़ें और इन स्वरूपों का जो संकल्प है, वो अपने विचार, वाणी और वर्तन द्वारा साकार करें।

तत्पश्चात् **प.पू. वशीभाई** ने मुक्तों को आशीर्वाद दिया—

...काकाजी कहते थे कि लाखों आदमी आएँ, mercedes गाड़ियाँ आएँ, उसे मैं बहुत बड़ा उत्सव नहीं मानता हूँ। ***हमारी प्रगट और प्रत्यक्ष की निष्ठा कितनी बढ़ी, वो ही सत्संग का barometer है। बापा और काकाजी जिस संप, सुहृदभाव, एकता की बात करते थे, उस पर आज महंतस्वामीजी भी बहुत ज़ोर दे रहे हैं। ये चीज़े हमें दिनकरभाई के जीवन में दिखती हैं।*** *प्रत्यक्ष की निष्ठा की बात बताता हूँ। हम संत से कहते हैं कि मैं आपको भगवान मानता हूँ, मगर मौक़े पर मानना वो अलग बात है। अभी सूरत आने के लिए गुरुजी दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुँचे। दिल्ली मंदिर से जुड़ा सेवक जोधा गुरुजी को एयरपोर्ट छोड़ने आया। गुरुजी ने उसे कहा कि तुम भी साथ में चलो। जोधा ने कहा कि मैं तो आपको छोड़ने आया हूँ। लेकिन, गुरुजी के कहने पर तभी टिकिट लेकर बैठ गया और आज यहाँ हाज़िर है। ऐसे ही पुनीतजी को उनकी पत्नी अंजलि भाभी और बेटा ऋषभ दिल्ली मंदिर छोड़ने आए। ऋषभ तो अपने जन्मदिन निमित्त दर्शन करने आया था। गुरुजी ने उन दोनों को भी साथ चलने के लिए कहा और वे आ गए। ये प्रत्यक्ष की निष्ठा कही जाए, जो काकाजी कराना चाहते थे।*

दिनकरभाई ने 50 साल में यही कार्य किया, उसका live example देता हूँ। जो यहाँ नहीं आ पाए, उनके लिये शिकागो में दिनकर दादा का 80वाँ प्रागट्य दिन मनाया था। साहेब वहाँ आने वाले थे। उत्सव शाम को था, तो सुबह पिंटू, विजय, अमित सब दादा के पास गये, तो दादा बोले—मैं जैसा बोलूँ, ऐसा करोगे? सबने 'हाँ' की। दिनकर दादा ने कहा—मेरी जगह साहेब का प्रागट्य दिन मनाओ। बस, फिर तो शाम को 85 की बड़ी digit लगा कर और काकाजी के साथ की उनकी सारी स्मृतियाँ लगा कर साहेब का अद्‌भुत तरीके से प्राकट्य पर्व मनाया...

दिनकर दादा जिस प्रकार जीते हैं, वो एक मिसाल है। लेकिन, ***पूरे गुणातीत समाज के लिये सुहृदभाव की भावना की नींव में शास्त्रीजी महाराज हैं। शास्त्रीजी महाराज ने कांतिकाका और काकाजी को यह वाक्य बोला था कि आप दोनों भाई-भाई बनकर रहना, ब्रह्मांड डोलाओगे। कांतिकाका को इसलिये याद करता हूँ कि there is secret... हमें ऐसों को भूलना नहीं चाहिए, वो सुहृदभाव का बड़ा सिद्धांत है।*** *हंसा दीदी से बात हो रही थी तो वे बोलीं कि* ***काकाजी-पप्पाजी और कांतिकाका-बा, ये दो परिवार एक हुए, तो सुहृदभाव से जीता हुआ एक ज़बरदस्त समाज बना। आज उस संप, सुहृदभाव, एकता का celebration है। पियुषभाई पनारा को धन्यवाद कि उन्होंने बापु को याद किया, उन्हें भुलाया नहीं जा सकता।*** *काकाजी तो उन्हें बहुत डाँटते थे, लेकिन बापु को धन्यवाद है।* ***लगातार घूम कर, रात-दिन देखे बिना उन्होंने दिनकर दादा के साथ रहकर शिकागो समाज की परवरिश की है। उनका जो contribution है, उसके फलरुप पंकजभाई, केतनभाई, अमितभाई, जेसन, विकास, सपन यहाँ बैठे हैं-वे उनके भगवदी बने। इन सबके जीवन में बापु ने अद्‌भुत कार्य किया है।*** *इसलिये कांतिकाका और बापु का ज़िक्र किया। आज जो उत्सव दिखता है, उसमें behind the scene सब सेवकों और बच्चों की मेहनत है...*

प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. राकेशभाई शाह** ने **प.पू. दिनकरभाई** के प्राकट्योत्सव निमित्त **'धाम के अलगारी साधु...'** भजन बनाया था। प.पू. वशीभाई के संबोधन के बाद **पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा** ने वह प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया—

...आज दिनकर अंकल का 80वाँ प्राकट्य दिन। स्वाभाविक है कि सबने उनका गुणगान किया। हमें उसकी जुगाली करनी है, क्योंकि वो जैसा जीवन जीये वो रास्ता हम चूक न जायें। ऐसी सर्वदेशीयता, ऐसा सेवकभाव, ऐसी महिमा हम में बहती ही रहे, अखंडित रहे, ये समाज उसमें सराबोर रहे, वह इस उत्सव को मनाने की फलश्रुति!

वे कैसी विभूति होंगे, उसकी कल्पना मुझे काकाजी ने ही करवाई। वो पहली बार अमेरिका से मुंबई आने वाले थे। रात को ढाई बजे तक वे ताड़देव पहुँचने वाले थे। मैंने काकाजी से क़रीब

11 बजे पूछा कि चाय पीओगे? तो कहा, नहीं अभी दिनकरभाई आयेंगे। मैंने कहा तब दोबारा बन जायेगी। तो बोले ठीक है बना दे। मुझे तो चाय अपनी तरीके से बनानी आती है। काकाजी को कैसा टेस्ट चाहिये, इसका पूरा ख्याल नहीं था। तो, मैंने शायद रमेशभाई को चाय बनाने के लिए कहा। काकाजी ने चाय पी ली, तो मैंने उनसे कहा कि अब आप सो जाओ, वो आएँगे तो आपको जगा दूँगा। उन्होंने मना किया और कुछ पढ़ने बैठ गये। तो, मुझे ऐसा हुआ कि दिनकरभाई कैसी विभूति हैं कि काकाजी इतनी देर तक उनका इंतज़ार कर रहे हैं। फिर ***मैंने काकाजी को पूछा कि उनकी ऐसी क्या विशेषता है कि आप उनके ऊपर इतना ढले हुए हो?*** *उन्होंने कहा, देखो अगर मैं वर्णन करूँगा उससे तुझे ख्याल नहीं पड़ेगा, समझ भी नहीं पाएगा। मगर एक बात उन्होंने कही कि* ***तुम यहाँ बैठे हो और वो 5000 मील दूर हैं। फिर भी तेरे से ज़्यादा वो मेरे क़रीब है। मैंने सहज ही कहा कि ऐसा बनने के लिये क्या करना पड़े? वे बोले—अमेरिका में रहकर जैसे वो अपने पास आने वाले मुक्तों को मेरा, स्वामीजी और पप्पाजी का संबंध करवाते हैं, ऐसे सेवकभाव से वर्तना। वर्ना तो कोई हमसे जुड़ता हुआ हो, उसे किसी और को सौंप देने का विचार करना संभव नहीं। ऐसी भावना से जो सत्संग करवाते हैं, वो दिनकरभाई का विशेष गुण है।*** *विशिष्ट गुण जो किसी भी चीज़, पदार्थ या व्यक्ति का होता है, वो उसका अपना unique होता है। बाकी सारे सामान्य गुण तो हरेक में होते हैं। विशिष्ट गुण उसका अपना होता है। संभव है कि अन्यों के लिए वह संभव न हो, वे उसे हासिल न कर सके। इसका तरीका-रीति काकाजी ने बताई कि जैसे दिनकरभाई अपने संबंध में आने वालों को प्रगट स्वरूप में जोड़ देते हैं, वो उनकी रीत-करामात है। हमें भी ऐसा होता है कि ये करामात पानी-सीखनी और अपनानी है। मगर प्रसंग पर वो चीज़ हम नहीं कर पाते, एक डर रहता है। हालाँकि अब अपना समाज इतना विशाल दृष्टि-भावना वाला हो गया है। सामान्य ढंग से अगर दिनकरभाई को कोई देखे, मिले, इनके पास बैठे, इनकी बातें सुने, इनका वर्तन निहारे, तो उसे पहली impression यही पड़ेगी कि स्थितप्रज्ञ व्यक्ति हैं। पर, काकाजी ने गीता के स्थितप्रज्ञ और गुणातीत के स्थितप्रज्ञ का भेद समझाया था कि 'गुणातीत का स्थितप्रज्ञ यानि गुणों का स्थितप्रज्ञ।'* ***प्रगट का स्थितप्रज्ञ यानि प्रगट स्वरूपों में किसी भेदभाव के बिना, हर एक स्वरूप में महाराज को ही देखे और उस ढंग से वर्ते वो है प्रगट का स्थितप्रज्ञ। हम सब काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब या बड़ी बहनों से जुड़े हुए होंगे, मगर ऐसी विशालता develop करना बड़ा कठिन है। उसके लिये भी काकाजी ने कहा था कि हमें प्रत्यक्ष स्वरूपों को याद करके भजन करना चाहिए, उससे चेतना को बल मिल जाएगा कि हरेक स्वरूप के अंदर हमें परम***

चेतना सहजानंदस्वामी का दर्शन हों। *200 साल पहले के वो छोगले वाले महाराज का दर्शन उसमें होना चाहिये। काकाजी ने समाधि में वो दर्शन किया है, इसलिये जब भी वे समाधि का वर्णन करते हुए बातें करते, तब कहते थे कि मैंने असली सहजानंद को देखा है; ढाई सौ साल पहले जो सहजानंदस्वामी छपिया में प्रकट हुए, गढडा में दादाखाचर के दरबार में 30 साल तक रहे।* ***एक दिव्यभाव से लाडूबा और जीवुबा महाराज में जुड़ी-चिपकी थीं।*** *पूरा अपना तंत्र बदल कर महाराज को गढडा में अपने यहाँ रखा था। ये कोई physical या मानसिक ताक़त नहीं थी, पर एक spiritual force था, जिसने महाराज को भी हिलाकर गढडा मंदिर में रखा। हम जीवन चरित्र में पढ़ते हैं कि महाराज कहीं भी जाते थे, तो उन दोनों बहनों को पूछ कर ही जाते थे। उन्हें कोई पूछने की ज़रूरत नहीं थी, मगर वह चैत्सिक धागे का जुड़ाव था। जो सिर्फ प्रेम का नहीं, बल्कि समझदारी का था।* ***उस बंधन ने पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय का तंत्र बदला। वर्ना, इस संप्रदाय में बहनों का कोई स्थान ही नहीं था। मगर आज हम देखते हैं कि काकाजी और पप्पाजी ने वो बात पकड़ी। महाराज की वह मरज़ी जानी और समाज के प्रचंड विरोध में भी पूरा establish किया। काकाजी की वो बात अगर हम पकड़ें, तो आज हमने सही मायने में प्रागट्य दिन मनाया।*** *काकाजी जैसी विभूतियों ने जो कार्य किया, उसे ऐसे प्रागट्य दिन द्वारा हम आज भी मना रहे हैं। मैंने 'विभूतियों' शब्द इस्तेमाल किया। जैसे कि* ***काकाजी ने कहा कि अब हमें एकदेशस्थ ज्ञान में से सर्वदेशीयता में जाना है।*** *दिल्ली मंदिर में ये सूत्र भी लगाया हुआ है। तो,* ***वो सर्वदेशीयता में हम सहज रहें। वह तभी होगा जब मानसिक की बजाय सिर्फ चैत्सिक हो कि स्वरूपों में थोड़ी-सी भी अलगता के छींटे तक न रहें।***

काकाजी की ओर देखें; तो ऐसा सहज हो कि ये पप्पाजी हैं, ये मैंने स्वरूपों में देखा ही है। *मुझे ठीक से याद है कि जब काकाजी स्वधाम गये, तब मैं डेढ़-दो साल तक डूबा हुआ रहा। मंदिर का staff भी विचार में पड़ गया। तब मुझे हुआ कि मेरी तरफ अपेक्षा की दृष्टि से सब सेवक देखते हैं और मुझे ही ऐसा लाचार देखें तो इनके दिल टूट जाएँगे, काम नहीं कर पाएँगे। सो, मैं भजन किया करता था। फिर हमारा पंचतीर्थी का प्रोग्राम बना और दिल्ली से क़रीब 70-80 जने गए। सब train से गए थे और मैं flight से अमदावाद गया। वहाँ से विद्यानगर जाने का plan था।* ***पप्पाजी*** *एक दिन पहले अमदावाद आ गये थे और airport पर मुझे receive करने आए। Gate पर उन्हें देख मैं सोच में पड़ गया और मैंने पूछा कि आप अभी यहाँ? वे बोले—* ***मैं काकाजी को लेने आया हूँ।*** *बेशक़ मैंने तब उसका interpretation कुछ और ले लिया होगा। मगर* ***ये दर्शन करवाता है कि ऐसे स्वरूप भी मुक्तों में स्वरूप को ही देखते हैं। जबकि हम***

स्वरूपों को भी ठीक से स्वरूप नहीं मान पाते। अगर दिनकरभाई के बारे में खूब गहराई से सोचें, तो वे काकाजी के नम्र सेवक हैं, ऐसा बोलेंगे। मगर ये काकाजी ही हैं यह एकदम बुद्धि में बैठेगा नहीं। हमारे वर्तन में कहीं न कहीं कोई फ़र्क नज़र आ जाएगा। *काकाजी और पप्पाजी को हम बेशक़ महाराज का स्वरूप मानते थे और मानते हैं।* ***हमारा समाज इतना आगे बढ़ा कि प्रमुखस्वामीजी, महंतस्वामीजी को भी हम अपना मानते हैं, भगवान का स्वरूप मानते हैं। काकाजी ने ये हमें बहुत बड़ी achievement करवाई है। इस बात का हमें ख्याल नहीं। इसका कारण यह है कि इतने विरोध की आँधी में भी उन्हें प्रमुखस्वामीजी, महंतस्वामीजी के प्रति कभी भी अभाव नहीं आया। इतना ही नहीं, उन्होंने हमारे समाज में भी ऐसी कोई बात टिकने नहीं दी। स्वामीजी के साथ मिलकर एक ऐसे समाज का सर्जन किया, पप्पाजी के साथ मिलकर बहनों के ऐसे समाज का सृजन किया कि जहाँ उस समाज के अंदर स्वामीजी का नाम ही मुँह पर हो; बहनों के समाज में भी पप्पाजी का नाम ही मुँह पर हो, स्वयं हमेशा छुपे हुए ही रहे।*** *बेशक़* ***एक बार काकाजी मुझसे बोले थे कि आज तेरा दिल भले जल रहा है, पर भविष्य में तू देखना कि सब मुझे याद करेंगे।*** *मैंने पूछा इसका मतलब? तो उन्होंने कहा कि* ***हमसे ऐसे स्वरूप तैयार होंगे कि जो ख्याल देंगे कि ये काकाजी के प्रतीक हैं, काकाजी की मूर्ति हैं। हमें किसी को कहना नहीं पड़ेगा, वो ख़ुद ही बोलेंगे और हरेक मंदिर में, हमारी मूर्तियाँ भी बैठेंगी।*** *देखो, ये* ***उन्हें कोई अपनी मूर्ति बिठाने का लालच नहीं थी, मगर हमें एक तसल्ली देने के लिये उन्होंने ये बात करी।***

तो, ***अब हम बिलकुल भी किसी को कम आंके बिना, पुलकित हृदय से मानें कि आज दिनकरभाई की जयंती पर 12 जून ही मना रहे हैं। 12 जून यानि काकाजी का प्रागट्य दिन! ऐसी घड़ाई काकाजी ने हमारी की है कि ये बात हम सहज मान जाएँ, वो ही हमने उन्हें जीवंत रखा कहा जाए...***

फिर **प.पू. भरतभाई** ने निम्न आशीर्वाद दिया–

...काकाजी जो कराना चाहते हैं, वो रहस्यमयी बात गुरुजी ने बहुत ही खुल कर बताई...

दिनकर दादा के बारे में जितनी बातें करें, उतनी कम हैं। कई प्रसंग ऐसे हैं कि वो जिससे बात करते हैं, उसमें महाराज का-काकाजी का दर्शन करते हैं।

एक बार एक भक्त दिनकरभाई के पास आए और बोले कि आप में तो साक्षात् प्रभु हैं, आपका दर्शन करने से शांति मिल जाती है वगैरह... दिनकरभाई ने एक ही शब्द में उनको जवाब दिया कि मैं तो दर्पण हूँ। मतलब आप जो बोल रहे हो, आपके लिये वो है। कहने का तात्पर्य यह है

कि सरल बातों में ***दिनकरभाई दूसरे को आगे करने-उनका माहात्म्य बताने की बातें करते हैं।*** *एक बार स्वामीजी ने juice पीने के बाद अपनी प्रसादी का juice दिनकरभाई को दे दिया। फिर स्वामी ने सहज ही उनसे कहा कि ज्यूस ज़्यादा हो गया न? तुरंत ही दिनकर दादा ने कहा, ये ज़्यादा नहीं था, पर मैंने जो पहले पीया था वो ज़्यादा था। ऐसी* ***महिमा की दृष्टि-भाव, सूक्ष्म दृष्टि से दिनकर दादा सब निहारते हैं...***

सुधा बहन के स्वधाम जाने के बाद दिनकर दादा ने पक्का किया था कि मैं अब ताड़देव में रहूँगा। वर्ना ताड़देव के नज़दीक ही उनकी ससुराल थी। एक बार रात को 2 बजे वे अमेरिका से आए, काकाजी ने उनसे पूछा कि दिनकरभाई क्या लोगे? चाय या कॉफी? दिनकरभाई ने तुरंत कहा कि चाय लूँगा। दिनकरभाई चाय-कॉफी कुछ भी नहीं पीते। लेकिन, तुरंत चाय की 'हाँ' कह दी। फिर दिनकरभाई ने उस प्रसंग का बहुत अच्छी तरह से विश्लेषण किया कि काकाजी ने मुझे पूछा कि चाय लोगे या कॉफी? यदि मैं कहता कि मुझे कुछ नहीं चाहिये, तो zero mark मिलता। अगर मैं ऐसा बोलता कि काकाजी आप जो पिलाओ वो, तो 50 percent marks मिलते। पर, मैंने कहा कि मैं चाय लूँगा, तो 100 percent marks मिले। हमने पूछा कि ऐसा क्यों? उन्होंने बताया कि वैसे तो मैं कुछ पीता नहीं हूँ, इसलिये मुझे कुछ नहीं चाहिये? तो, मैं में ही रहा, इसलिए zero mark, मगर मुझे कुछ नहीं चाहिये पर आप जो पिलाओगे, वो पी लेंगे तो वो आपका रखने के लिये मैं बोल रहा हूँ और काकाजी चाय पीते थे और वे चाहते हैं कि तुम भी मेरे साथ चाय पीओ, तो उनकी मरज़ी जान कर मैंने कहा कि चाय पीऊंगा। तो 100 percent marks मिले। ***दिनकरभाई केवल काकाजी के प्रति नहीं, साहेब या गुरुजी के पास हों या प्रेमस्वामीजी के पास हों, तो भी उनका ऐसा ही वर्तन होता है। सिर्फ सभी स्वरूपों के पास नहीं, बल्कि छोटे-छोटे सब भक्तों के भी साथ वे इसी तरह से रहते हैं।***

ये साधना मार्ग गुणातीत संतों की कृपा और आशीर्वाद के बिना संभव है ही नहीं। दिनकर दादा की सब जो बातें करते हैं, वैसा हम जीने की कोशिश करें, तो भी नहीं जी पायेंगे। *क्योंकि* ***उनके लिये ये सहज है-divine qualities हैं, जो cultivate नहीं होती हैं, केवल grace से आती हैं और दिनकरभाई के पास काकाजी की ऐसी करुणा-grace है, वो हम देखते हैं। तो आज दिनकरभाई के चरणों में प्रार्थना कि ऐसी grace आप हम सब के ऊपर करो...*** *दासत्व भक्ति-सर्वदेशीयता, सब में प्रभु को देखने का भाव हमारे अंदर में प्रगट हो ऐसा आशीर्वाद दें, यही प्रार्थना है।*

तदोपरांत **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीष वर्षा की—

...1973 से जब तक काकाजी अमेरिका आये, तब पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, निर्मळस्वामीजी, ज्ञानस्वरूपस्वामीजी, बहनों में बा, बेन, तारा बहन, ज्योति बहन, हंसा दीदी, आनंदी बहन सबका बहुत महिमा गान करते थे। तब से ये स्वरूप हमारे अंदर-हृदय में बैठ गये और उस हिसाब से उनके अंदर काकाजी के ही दर्शन होते हैं। ये सब काकाजी का ही स्वरूप दिखते हैं।

...वशीभाई और हम दो दिन से बात कर रहे थे कि ***मुझे मेरे लिए बड़ा आसन रखवाना पसंद नहीं, क्योंकि बड़े पुरुषों को ऐसा आसन शोभा देता है। हमारे लिए सेवक की रीत से side में आसन में रहे, वो अच्छा है। मैंने दिल्ली में बहुत सालों से गुरुजी की ये रीति देखी है। जब भी गुरुजी का प्रागट्य दिन होता और पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी या अक्षरविहारीस्वामीजी आते, तो सबसे अच्छा हार जो गुरुजी को पहनाने के लिए बनाते, वो स्वरूपों को पहनाते थे...***

मेरा भाव ये है कि ये स्वरूपों के अंदर हमारे इष्टदेव-मूल गुणातीत स्वरूप का भाव लाकर हम जीयेंगे, तो बहुत आनंद आएगा... गुरुजी ने कल एक surprise दिया। मैं इधर बैठा था, तो वशीभाई ने कहा कि आप बाथरूम में आओ, मुझे कुछ काम है। वो बाथरूम के बगल में एक कमरा है, वहाँ ले गये और काकाजी के जैसे कपड़े देकर बोले कि ये गुरुजी ने दिया है, आप पहनोगे? वशीभाई जानते हैं कि मैं ऐसे स्वीकार नहीं करता हूँ, क्योंकि ***मैं काकाजी नहीं बन सकता हूँ। काकाजी का एक रोम भी नहीं बन सकता...***

भगवान के दर्शन कराने के बाद, योगीजी महाराज ने काकाजी से कहा था कि बहनें भगवान भजें उसमें क्या ग़लत है, आप उनके लिए कुछ व्यवस्था करो... तो उनके संकल्प से आज बहनों का बहुत बड़ा समाज तैयार हो गया है। तकलीफ़ें बहुत आईं, विरोध बहुत आया, लेकिन उसे negatively न देख कर, opportunity से देखा कि संस्था से ऐसे अलग न हुए होते, तो इतनी speedy progress संभव नहीं थी... *आज महंतस्वामी, बॅप्स, वड़ताल, अहमदाबाद सब एक साथ काम कर रहे हैं। गुरुजी, साहेब दादा ये सब महंतस्वामी के लाडले हैं। गुरुजी उनके दर्शन करने भी गये थे। साहेब के साथ हमारे डॉ. मनोज सोनी भी गये थे। ये पक्का हो गया है, तो अब base शुरु हो गया। तो, हम हर चीज़ positive लें; negativity से तो हमारे दिमाग़ में कचरा ही भर जाएगा।* ***काकाजी positivity के मास्टर थे, तो ऐसी आदत डालें।*** *1966 के बाद, 67 या 68 में बड़ौदा में हमारे रमणभाई गांधी के यहाँ जागास्वामी का मंडल था, वे जागास्वामी का प्रागट्य दिन मनाने वाले थे। उन्होंने भीखाकाका को आने के लिए कहा, तो वे काकाजी के साथ वहाँ गए। काकाजी ने वहाँ बहुत अच्छा प्रवचन किया। लेकिन, प्रवचन के बाद अचानक*

लोग बोलने लगे कि दादुभाई को यहाँ से निकालो, वर्ना अच्छा नहीं होगा। जिन्होंने इतनी अच्छी बातें करी, उन्हीं का अपमान। यह देख कर भीखाकाका दु:खी हो गये। पर, ***काकाजी ने कहा देखो ये हमारा शृंगार है। हमारा अपमान करने वाले लोग हमारे विरोधी नहीं हैं, वे तो हमें आगे बढ़ने के process में सहाय कर रहे हैं।*** *देखो, काकाजी का vision कैसा था? एक लाभ हुआ कि रमणभाई गांधी को बहुत गुण आ गया और वो स्वामीजी के लाड़ले सेवक बन गये।* ***हरेक process को हम positive लेंगे, तो भगवान की शक्ति काम करेगी। करोड़ों जन्मों से हमें negative सोचने की आदत है, वो कब छोड़ेंगे? आज तो ऐसा एक मौका है कि ऐसे स्वरूप हमारे सामने बैठे हैं... तो, क्यों न negativity को अपना दुश्मन मान के उसका तिरस्कार करें, उसे साथ न दें-साफ़ कर दें।*** *ऐसा करेंगे तो ये गुणातीत स्वरूप हम पर राज़ी हो जायेंगे, उसका बहुत फ़ायदा होगा। मुझे कई लोग कहते हैं कि हम करना तो चाहते हैं, मगर होता नहीं है। कई लोग आज ऐसा सोचते हैं कि हमें अंबानी जैसा Billionaire बनना है, मगर बनने की ताक़त तो है नहीं। पर, स्वामी की बात है और काकाजी भी कहते कि आप मुकेश अंबानी के adopted son-बेटा बन जाओ, तो, ये सब मिलकत आपकी होगी। वैसे ही* ***इन स्वरूपों के हम adopted बेटा-बेटी बन जायें। तो, जो quality हममें नहीं आ पा रही, वो आ जाएगी।*** *काकाजी कहते थे कि अगर तुम बोलोगे कि मैं बनना चाहता हूँ, तो एक सवाल पूछूंगा कि आप किसके हो? तुम कहोगे कि मैं पहले पत्नी और बच्चों का हूँ, फिर प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य का हूँ और लास्ट में गुणातीत स्वरूप होऊँगा। तब वे कहते कि ऐसे काम नहीं होगा। फिर काकाजी कहते कि उसकी भी tecnique सिखाता हूँ, उल्टा कर दोगे तो last वाला first हो जाएगा यानि number one गुणातीत स्वरूप हो जाएँगे। यदि ऐसा करने की तैयारी है, तो सब काम हो सकता है। ऐसा करने का बल भी इस सत्संग से ही मिलेगा।* ***महाविष्णुरूप, ब्रह्मरूप से भी बड़ा ब्रह्मस्वरूप सत्संग हमें मिला है। मेरा गुरुजी के साथ काफ़ी पुराना संबंध है। प्रथम दर्शन से ही मैं सोचता कि ये काकाजी के लड़के हैं, तो ये मेरे गुरु हैं। उनमें से जो आये वो मुझे स्वीकार करना है। 2003 में गुरुजी ने हमें साहेबजी जैसा ड्रेस दिया, फिर badge भी दिया। आज इस उत्सव में भी उन्होंने आकर मुझे काकाजी की वेशभूषा पहनाई।*** *उनके चरणों में प्रार्थना कि उनका 90वीं birthday यहाँ सूरत में मनाने की हमारी भावना है...*

गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति करते हुए प.पू. दिनकर अंकल थोड़ा भावुक हो उठे... उन्होंने दिल्ली से प.पू. गुरुजी के साथ गए **पू. भीखूभाई झोंसा** को बात करने के लिए कहा। इनके वक्तव्य के बाद प.पू. दिनकर अंकल ने पुनः थोड़ी बात करके अपनी वाणी को विराम

दिया। तत्पश्चात् संतभगवंत साहेबजी का प्रतिनिधित्व करने आए **प.पू. रतिभाई** ने आशीर्वाद प्रदान किया—

...दिनकरभाई का ननिहाल साँवली गाँव है। वहाँ पर उनके परदादा के घर श्रीजी महाराज स्वयं पधारे थे। आज atomic energy का युग है, तो उसके radiations की असर कितने सालों तक रहती है। ठीक उसी प्रकार जहाँ स्वयं भगवान पधारे हों, उस घर में जिसने जन्म धारण किया, वह खुद प्रभु के स्वरुप के बिना और क्या हो सकता है!

*इनका दयालु स्वभाव है। वे जब कंपनी में काम करते थे, तब manager ने उनका increment रोक लिया था। उन्होंने यह बात मन पर नहीं ली। फिर जब काकाजी आये, तो कुसुम बहन ने उन्हें सब बात कही कि इन्हें काम में खूब दौड़ा-भागी होती है, अगर manager बन जायें, तो स्थायी रूप से काम करना आसान हो जायेगा। काकाजी बोले हम धुन करते हैं और ऐसा ही हो जायेगा। हफ़्तेभर में manager के लिये इश्तेहार निकला। 15 उम्मीदवार उसमें हाज़िर हुए। दिनकरभाई भी गये थे, पर किसी और जने का selection हो गया। जिस दिन से उसे join करना था, उस दिन उसका फोन आया कि मुझे और कहीं पर इससे अच्छी job मिल गई है, इसलिये नहीं आऊँगा। दिनकरभाई ने भी यह समाचार notice board पर पढ़ा। पर, अभी भी दूसरे 14 उम्मीदवार तो थे ही। काकाजी ने कहा कोई बात नहीं, वो भी हो जायेगा। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि car parking वाली जगह पर उनका manager अपनी गाड़ी park कर रहा था। दोनों ने एक-दूसरे को wave किया और manager उनसे मिलने आया। शाम को चार बजे दोनों मिले, बातचीत हुई और दिनकर अंकल को manager की job मिल गई। अब हुआ ये कि उनका जो head था, उसे ऐसा हुआ कि हम इतने सालों से काम कर रहे हैं। मगर annual report में हम में से किसी के department का नाम नहीं आता। तो, हम कोई बड़ा project करें ताकि हमारा भी नाम आये। उसने बड़े project का प्रस्ताव रखा, जिसके लिये company ने four million dollar दिए। Estimate निकलवाया, तो six million हुआ। अब दिक्कत आ गई। साल के आख़िर में पता लगा कि उनका जो head था, वो four million ठीक से ख़र्च नहीं कर पाया और उसे degrade होना पड़ा। वह बड़ा depress और बेचैन हो गया कि अब मुझे इस उम्र में कौन नौकरी पर रखेगा? दिनकर अंकल ने काकाजी को सब बताया। वे बोले कि **भगवान के भक्त के जो आड़े आता है, उसे कभी माफ़ी नहीं मिलती।** दिनकर अंकल बोले, नहीं! उन्होंने ही तो मुझे manager बनाया था, उस पर दया करो। फिर काकाजी ने*

'पंचयज्ञ' नाम की किताब उसे भिजवाई और पढ़ने के लिए कहा। उसने कुछ दिन पढ़ने के बाद कहा कि मुझे तो इसमें कुछ समझ में नहीं आ रहा। ऐसे शब्द लिखे हुए हैं—आत्मीयता, सुहृदभाव वगैरह, पर मैंने पढ़ी तो है। काकाजी को यह बताया तो बोले—चलो, अब उसकी प्रगति होगी। एक ही हफ़्ते के अंदर उसे promotion मिला और फिर से company का अच्छा boss बन गया। उसे दिनकरभाई के प्रति बहुत भाव हो गया था। इस तरह ***काकाजी ने हम भाइयों के जीवन में भी अद्‌भुत कार्य किया है।***

किसी रिश्तेदार की शादी के लिये दिनकरभाई मुंबई आये हुए थे। बापु भी साथ जाने वाले थे। काकाजी से पूछा, तो वे उदास होकर बोले— जाने की क्या ज़रूरत है? बापु ने थोड़ा आग्रह किया और काकाजी मान गये। ट्रेन को छूटने में तक़रीबन एक घंटे की देर थी। दिनकरभाई स्टेशन पहुँच तो गये, पर अंतर्दृष्टि करी कि मैं जा रहा हूँ पर काकाजी की इच्छा तो नहीं है। 15 मिनट बाद बापु से बोले—चलो लौट जाते हैं, programme cancel. बापु ने कहा—अरे! अब क्या हो गया? टिकट भी ले चुके हैं और ट्रेन आने ही वाली है। कल तो वापिस ही आ जायेंगे। तब ***दिनकरभाई बोले—महाराज मना कर रहे हैं, मेरा मन नहीं मानता। काकाजी की इच्छा नहीं थी, इसलिये मैं तो जाऊँगा ही नहीं। यूँ वे वापिस आ गये। इस तरह वे हर पल अंतर्दृष्टि और प्रभु के साथ के connection से जी रहे हैं।***

हम उनके चरणों में प्रार्थना करें कि हम साधक काकाजी, पप्पाजी और बा के वचन से साहेब को राज़ी करने लगे हुए हैं, तो हम इसमें सफल हो पाएँ।

तदोपरांत पू. अमितभाई ने **संतभगवंत साहेबजी** द्वारा भेजा गया निम्न आशीष पत्र पढ़ा—

...सबसे पहले तो दिनकरभाई का स्वास्थ्य हर प्रकार से निरामय रहे यही प्रार्थना। ***ब्रह्मस्वरूप काकाश्री के साथ लगाव हो गया, वो अपनी आत्मा माने गये, तो अपना स्वयं का भाव टाल कर भगवान के संतों, भक्तों के अखंड गुण गाते-गाते परम पूज्य काकाजी के मानस पुत्र बन गए। आपके अखंड माहात्म्ययुक्त सिंचन द्वारा विश्वभर में भक्त भगवान से जुड़े। योगीबापा का संकल्प था कि भगवा वस्त्र नहीं, बल्कि भगवा हृदय वाले साधु बनें। ऐसा दर्शन आपके जीवन में करके बड़ा आनंद होता है।*** *हम सब में अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची उपासना की स्थापना हो और गुणातीत समाज के सभी एक होकर, गुरुहरि योगी बापा के सूत्र संप, सुहृदभाव और एकता के नियम से जीवन जीते हो जाएँ, यही प्रार्थना।*

अंत में विडियो द्वारा **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** का दर्शन करके निम्न आशीर्वाद लिया—

*...**दिनकरभाई को देखता हूँ, तो बड़ा आनंद होता है।** Absolutely zero before the supreme. मैं उन्हें सहज ही याद करता रहता हूँ। **हम सबको उनके जैसा होना है। अपना कोई भाव ही नहीं, दिखावा नहीं, अपना अस्तित्व ही नहीं** we must be absolutely zero before the supreme. **हमें प्रभु का बालक बनना है, बस इतना संकल्प करो। प्रभु का बालक, दास का दास और सरल जीवन बने, ताकि हम पर सब अधिकार कर सकें। हम भूलकुं बनने आये हैं, दिनकरभाई भूलकुं हैं।** उन्हें कोई अपेक्षा नहीं कि मुझे mike दो या न दो, कभी कोई संकल्प नहीं, एकदम विनम्र। **हम में जितनी विनम्रता आएगी, उतना हम में अक्षरब्रह्म का तेज बढ़ेगा। उसी से अक्षरब्रह्म का शरीर बँधेगा...** याद रखना, कोई भी चौधरी नहीं बनना। **आप जितने शून्य बनोगे, उतना वे राज़ी ही होते हैं।** दिनकरभाई को देखता हूँ, तो मुझे गुणातीतानंदस्वामी बहुत याद आते हैं। हम सबको इनके जैसा बनना है...*

उत्सव के समापन में गुणातीत समाज के केन्द्रों के प्रतिनिधियों को स्मृति भेंट दी गई। हार व कई भेंट के रूप में मुक्तों ने **प.पू. दिनकर अंकल** के प्रति भाव अर्पण किया। सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया।

उत्सव पूरा होने के बाद, **प.पू. गुरुजी, प.पू दिनकर अंकल, प.पू भरतभाई, प.पू. वशीभाई** के साथ दिल्ली मंदिर से गए संत, युवक, बहनें एवं हरिभक्त, सूरत में सैयदपुरा पम्पींग स्टेशन के नज़दीक 7/1940-A, कोतवाल वाडी गए।

विचरण करते हुए एक बार भगवान स्वामिनारायण सूरत पधारे थे। तत्कालीन **पारसी अरदेशर कोतवाल** की सेवा से अतिशय प्रसन्न होकर, **श्रीजी महाराज** ने **संवत् 1881** के **मगशर सुद तृतीया** को **'रूस्तम बाग'** में उन्हें **श्रीफल और अपनी पगड़ी दी थी।** सैयदपुरा इलाके में रहने वाले **'वाडिया परिवार'** ने प्रसादी की इस पगड़ी व श्रीफल को लकड़ी के showcase में आज भी संभाल कर रखा है। रोज़ उसकी पूजा होती है और स्वामिनारायण भगवान के आश्रितों को हर वर्ष भाईदूज के दिन पगड़ी के दर्शन करवाए जाते हैं। परंतु, गुणातीत स्वरूपों का सम्मान करते हुए उन्होंने दर्शन करने की अनुमति दे दी। दर्शन करके वहाँ आरती और धुन की।

यहाँ से सभी **'वाडी फणिया'** क्षेत्र की **'स्टोर शेरी'** में गए। **वर्षों पहले प.पू. गुरुजी के पूर्वज पू. करसनजी देसाई यहाँ रहते थे।** बचपन में स्कूल की छुट्टियों में प.पू. गुरुजी अपने परिवार जनों के साथ यहाँ आकर रहते भी थे। **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के उपदेशों की पुस्तक **'स्वामी की बात'** के 5वें प्रकरण की 65वीं बात में पू. करसनजी देसाई का जिक्र भी है। संभवतः मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी इस भूमि को पावन करने भी आए होंगे। ऐसे

प्रासादिक स्थल पर स्वरूपों ने धुन कराई और सबको दंडवत् करने के लिए कहा।

तत्पश्चात् सभी सायं करीब 5:00 बजे पवई मंदिर से जुड़े संतसेवा निष्ठ **पू. पुरुषोत्तम मामा** के घर पहुँचे और धुन-भजन करके अल्पाहार लिया। सायं 6:30 बजे प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों को साथ लेकर उनकी पूर्वाश्रम की बुआ के बेटे-बहू **पू. किशोरभाई देसाई-पू. रागिनी भाभी** के घर गए। पू. किशोरभाई कई सालों से दिल्ली मंदिर से एक अपनेपन से जुड़े थे। काफ़ी समय से वे बीमार थे, सो प.पू. गुरुजी उन्हें दर्शन देकर धुन-भजन करने गए।

(*पू. किशोरभाई मानो प.पू. गुरुजी के दर्शन की ही राह देख रहे थे, क्योंकि 27 नवंबर को तो वे अक्षरनिवासी हो गए।*)

गुणातीत प्रकाश के साधक **पू. विरेनभाई** की प्रार्थना पर, पू. किशोरभाई के यहाँ से सूरत में पुनः निर्मित हुए **'गुणातीत ज्योत'** के नए भवन में गए। धुन करके प्रसादी के पुष्पों की वृष्टि की और icecream का प्रसाद लेकर, 'सीरवी समाज भवन' लौट कर भोजन किया। यहाँ **अक्षरनिवासी पू. काशीरामभाई राणा साहेब** के दोनों बेटे **पू. दीपकभाई-पू. विजयभाई राणा परिवार सहित** प.पू. गुरुजी का दर्शन करने आए थे।

इस पर्व पर पवई मंदिर से जुड़े भक्तों ने सराहनीय-प्रेरणादायी सेवा करके भक्ति अदा की। अधिकतर गुजरात के स्थानिक एवं महाराष्ट्र के मुक्त सुबह ही अपने-अपने स्थान पर जाने के लिए निकल गए थे। सो, प.पू. गुरुजी के साथ उत्तर भारत से गए मुक्त ही शेष रह गए थे। फिर भी थके होने के बावजूद **प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं प.पू. राजुभाई ठक्कर** कुछ सेवकों के साथ आख़िर तक रुके, उससे केवल प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी प्रीति ही नहीं, बल्कि भक्तों के प्रति उनकी भक्ति का भी दर्शन हुआ और अंतर से प्रार्थना हुई कि हम भी ऐसा अनुसरण कर पाएँ।

21 अक्तुबर की दोपहर 2:00 बजे तक भोजन करके, प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों को लेकर **पू. धनंजयभाई देसाई-पू. भावना बहन** के घर पधरावनी करके airport पहुँचे। अन्य सभी नई 'गुणातीत ज्योत' में दर्शन एवं icecream का प्रसाद लेकर, airport तथा railway station गए। Flight वाले मुक्त सायं 7:30 बजे दिल्ली पहुँचे और train से सफ़र करने वाले मुक्त अगले दिन दिल्ली अथवा सीधा पंजाब अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचे। इस प्रकार, प.पू. दिनकर अंकल के 80वें प्राकट्य दिन निमित्त प.पू. गुरुजी की निश्रा में व्यतीत करे सुनहरे पलों को सबने अपने अंतर में संजो लिया।

शरद पूर्णिमा – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्राकट्योत्सव की सभा एवं आरती...

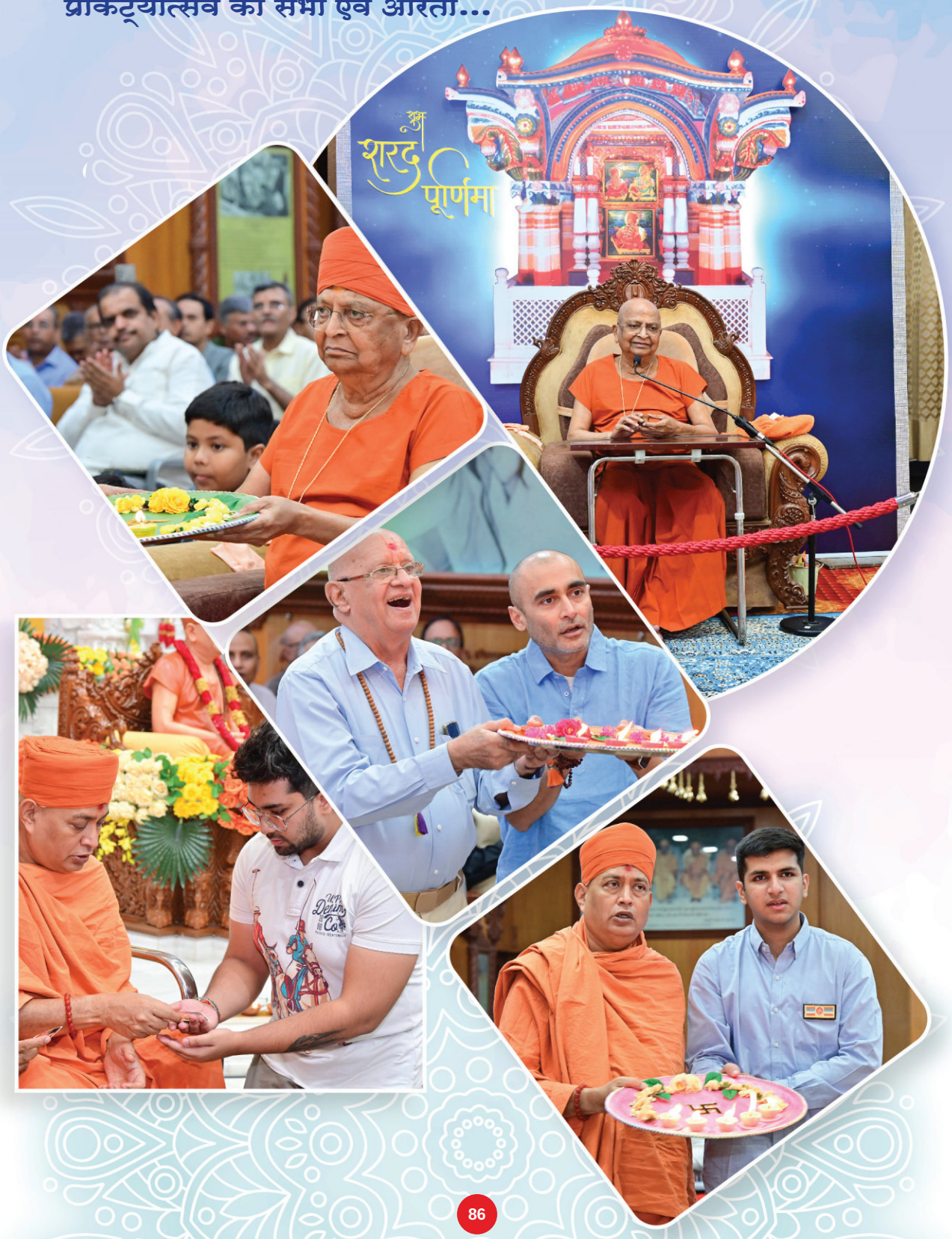

प्रगट प्रभु की निश्रा में 2024 के दीपोत्सवी कार्यक्रम

16 अक्तूबर, शरद पूर्णिमा

भगवान स्वामिनारायण के बिना जिनका अस्तित्व नहीं और जिनके बिना भगवान स्वामिनारायण स्वयं पूर्ण नहीं, ऐसे शाश्वत् गुरु **अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** का **शरद पूर्णिमा** पर प्रगटीकरण होना आश्रितों के लिये सच्ची दीपावली के समान है। भगवान स्वामिनारायण ने अपने साथ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी को अवनि पर लाकर-अपने अखंड धारक संतों की जीवंत गुरुपरंपरा से आश्रितों को सदैव सनाथ रहने का वरदान दे दिया। हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे गुणातीत स्वरूपों का सहज ही हमें योग-संबंध मिल गया।

इस वर्ष **16 अक्तुबर** को शरदपूर्णिमा का मंगलकारी दिन था। सायं आरती के पश्चात् 8:30 बजे तक **'कल्पवृक्ष'** हॉल में **श्री ठाकुरजी** के समक्ष **प.पू. दीदी** के सान्निध्य में **बहनों** व **भाभियों** ने भजनों पर **गरबा** करके भक्ति अदा की। **प.पू. गुरुजी** के आगमन के पश्चात् भाइयों ने थोड़ी देर **गरबा** किया। प्रसाद लेने के बाद रात्रि 9:15 बजे **प.पू. गुरुजी** से शरद पूर्णिमा का आशीर्वाद लेने के लिए सब पुनः कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के आसन की पृष्ठभूमि पर नीले आकाश में चंद्रमा की चाँदनी में **'अक्षर देरी'** बनाई हुई थी। जिसमें श्रीजी महाराज सहित मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की मूर्ति का दर्शन हो रहा था और **'शुभ शरद पूर्णिमा'** लिखा था।

सभा का आरंभ करते हुए **पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा, सेवक विश्वास** ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के प्रागट्य के हेतु का वर्णन करने वाले भजनों को प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के जीवन चरित्र में से **पू. आनंदस्वरुपस्वामी** ने एक प्रसंग पढ़ा, जिसका निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया–

...हाटी (गाँव) में माळिया के ठक्कर अमलशी मेघांणी गुणातीतानंदस्वामीजी के निष्ठावान भक्त थे। वो रुई का व्यापार करते थे। उस समय खांडी का भाव-चलन था। एक खांडी 1600 कौड़ी की थी, मानो 1600 रुपये के भाव पर उसने रुई खरीदी थी। रुई के भाव एकदम गिर कर 600 होने से उसे एक खांडी पर 1000 रुपये का घाटा हुआ। एक खांडी में 1000 रुपया गया, तो 16 खांडी के हिसाब से 16,000 कौड़ी का नुकसान हुआ। उस समय के 16,000 यानि आज के करोड़ों रुपये हुए। इनको जिन्हें पैसे देने थे, उन लेनदारों ने सोचा कि ये घाटे में गया है, तो

बाद में कुछ मिलेगा ही नहीं, इससे अच्छा है कि अभी जो भी इससे मिल जाए, वो ले ही लें। सो, उन सभी ने उघराई करनी शुरू कर दी। जबकि उस समय खुद अमलशी ठक्कर को एक लाख कौड़ी औरों से लेनी थी, लेकिन किसी ने उसे पैसे दिए नहीं और सोचा कि इसे घाटे में ही जाने देते हैं, हमारे अपने पैसे तो बच जायेंगे। अमलशी ठक्कर को लेनदारों के पैसे देने की इच्छा थी; पैसे दबाने नहीं थे, इसलिये उसे परेशानी हुई। उसने सोचा कि अब क्या किया जाये? तब विचार आया कि जूनागढ़ जाकर गुणातीतानंदस्वामीजी से बात करूंगा, तो ज़रूर कुछ हल निकलेगा। जूनागढ़ जाकर स्वामीश्री से पूरी बात करी कि व्यापार में घाटा होने के कारण बहुत बुरा समय आ गया है। बाज़ार, गांव और इर्द-गिर्द के गांव में मेरी आबरू नीलाम होगी। 16,000 रुपये का नुकसान हुआ है, मांगने वाले उघराई करते रहते हैं। थोड़े-थोड़े उन्हें देता रहूँगा, लेकिन इतने सारे एक साथ तो दे नहीं पाऊंगा। इसलिये महाराज मेरी लाज रखना। सुन कर स्वामीश्री ने पहले तो आशीर्वाद दिया कि महाराज को, सहजानंदस्वामी को अखंड रखे हुए संत को याद करो, सब कुछ धीरे-धीरे सुधर जाएगा और फिर स्वयं कोठार में गये। वहाँ त्रिकमदास कोठारी से सारी बात करी कि अमलशी सेठ को व्यापार में भारी नुकसान हुआ है, अपने पास कुछ पैसे हों तो इनकी मदद कर दें। यह सुन कर एक बार तो त्रिकमदास को मन में हुआ कि अगर इन्हें पैसे दिए, तो पता नहीं वापिस आएंगे या नहीं। लेकिन, ***स्वामी ने कहा कि अमलशी सेठ की इज्जत चली जायेगी और ये अपने साथ जुड़ा हुआ भगत है, इसकी लाज हम नहीं जाने देंगे। संतों को भक्तों की लाज की खूब फ़िक्र होती थी।*** *गुणातीतानंदस्वामीजी के समय चेक का system नहीं था और न ही आज की तरह नोटों का चलन था-कौड़ियों का चलन था, सो एक हज़ार रुपये की 16 थैलियाँ तैयार करवा दीं। फिर कोठारी से कहा कि* ***आप मुझाओ नहीं, ये ऐसे भगत हैं कि पैसे वापिस कर देंगे और मानो नहीं भी कर पाए, तो ऐसे भगत के लिए पैसे कुर्बान हैं। ये बात काकाजी के साथ tally होती है कि उन्हें भी जब यूरिया के व्यापार में घाटा हुआ, तब योगीजी महाराज बोले थे कि दादुभाई के लिए अक्षरदेरी भी गिरवी रखनी पड़े, तो रख देंगे। बापा के दिल में काकाजी की क्या महिमा होगी, वो यह वाक्य दर्शाता है। देखो, स्वामीश्री ने संतों को सिखाया है कि भक्तों से खाली सेवा लेने की भावना नहीं रखनी। भक्त अगर किसी कसनी में आ जाए, तो मंदिर में से निकाल कर भी ज़रूर इन्हें सहायता करें। क्योंकि हमारी कमाई तो इन्होंने जो दिया है, वही है। इन्हें ज़रूरत पड़ने पर भले वापिस ले जायें। संतों को ये समझदारी सिखाने के लिये गुणातीतानंदस्वामीजी का gesture होगा कि***

भविष्य में अगर संतों को ऐसी परिस्थिति देखने को मिले, तो बैठे न रहें। भक्तों की सहायता के लिये अपना सब कुछ, मंदिर को भी न्यौछावर कर दें।

स्वामीश्री ने अमलशी सेठ से कहा कि 16,000 कौड़ी ले जाओ, महाराज ठीक कर देंगे। स्वामीश्री की सहानुभूति देखकर सेठ की आंखों में पानी आ गया, वे गद्‌गद् हो गये। फिर जोरा भगत जो cash handle करते थे, स्वामीश्री ने उन्हें सेठ के साथ जाने के लिए कहा। इस रकम से सेठ ने लेनदारों के पैसे चुकाने की शुरुआत करी, तो सबको ख्याल आ गया कि इसे तो जूनागढ़ मंदिर से support है। जो अधीर थे उन्होंने सोचा कि अपना पैसा ले लो और कइयों की ऐसी intention भी थी कि अभी पैसे मांगने से सेठ की प्रतिष्ठा-आबरू गिर जाएगी और हम लोग ऊँचे नज़र आएँगे। लेकिन, जो समझदार थे उन्होंने सोचा कि अपने पैसे डूबने वाले नहीं हैं। तो, जल्दीबाज़ी करके ये इल्ज़ाम अपने ऊपर नहीं लें कि हमने भगत को परेशान किया और समाज की-स्वामी की नज़र में गिरें नहीं। यूँ, ऐन मौके पर स्वामीश्री ने भगत की मदद करी। जब सेठ का वक्त अच्छा आया, तो उसने मंदिर की 16,000 कौड़ी वापिस कर दी...

तत्पश्चात् रात्रि 10:10 बजे श्री ठाकुरजी की आरती करके सभा की पूर्णाहुति हुई। संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों को आज के मंगलकारी दिन की स्मृति देने के लिए एक छोटी चित्र प्रतिमा बनाई थी, जिसमें एक ओर **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** का चित्र था।

उसके नीचे **प.पू. गुरुजी** का वचन लिखा था— ***यह चमत्कारी मूर्ति है, जो मांगेंगे वो देगी...***

उसके पीछे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी जैसी पगड़ी बांधे हुए **प.पू. गुरुजी** का चित्र था, जिस पर स्वामीसेवकभाव से उनकी ओर से अंग्रेजी में यह प्रार्थना लिखी थी—

O, Swamy! You have given me physique resembling you, bless me to attain identification with you.

गुणातीत समाज के सभी स्वरूपों के स्वमुख से सुना है कि प.पू. गुरुजी का मुख मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी से बहुत मिलता है और अकसर कई मुक्त तो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की मूर्ति का दर्शन करके भ्रमित भी होते हैं कि ये गुरुजी की ही मूर्ति है। 2016 की शरदपूर्णिमा पर संतों की प्रार्थना से प.पू. गुरुजी ने थोड़ी देर के लिए मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी जैसी पगड़ी और धोती-गातरिया पहन कर दर्शन दिया था। उस समय का यह चित्र था। **पू. सुहृदस्वामीजी** ने संतों-भाइयों को तथा **पू. स्मिता दीदी** ने बहनों-भाभियों को शरदपूर्णिमा की यह स्मृति भेंट देकर आज के उत्सव का समापन किया।

धनत्रयोदशी निमित्त महापूजा...

दीपावली निमित्त शारदा पूजन...

प्रकाश का पर्व 'दीपावली'

29 अक्तूबर, धनतेरस

प्रायः समृद्धि और धन को अपने जीवन में आमंत्रित करने के लिए, **धनत्रयोदशी** के दिन घरों और व्यापारिक स्थानों को सुसज्जित करके शाम को 'लक्ष्मी पूजा' की जाती है और छोटे-छोटे मिट्टी के दीपक जला कर दीपावली की शुभ शुरुआत करते हैं। जिस प्रकार, दीपक की रोशनी से चहुँ ओर का अंधकार दूर होता है-बुराइयों की छाया दूर होती है; **इसी प्रकार, संतरूपी दीपक अपने आश्रय में आने वाले सभी के अंतर में उजियारा करके, उनके सभी प्रकार के द्वंद्वों का निवारण करते हैं। सो, जिसके घर-संसार के केन्द्र में प्रभुधारक संत का श्रेष्ठतम स्थान होता है, उसके लिए जीवन का वही सच्चा धन-समृद्धि है।**

भगवान स्वामिनारायण के आश्रितों के शुभ संकल्प की पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु स्वामिनारायण के मंदिरों में नित्य 'महापूजा' होती है। इसमें निम्न श्लोक बोला जाता है—

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

अर्थात् शरीर, वाणी, मन, इंद्रियों और बुद्धि द्वारा जो भी कार्य किए जाएँ, उन्हें भगवान नारायण को समर्पित करते हुए यह सोचें कि यह उनकी प्रसन्नता हेतु है।

अतः प्रभु प्रसन्नतार्थे दीपोत्सवी के मंगल दिनों का प्रारंभ करते हुए इस बार भी सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने महापूजा संपन्न की। जिसमें गुरुहरि काकाजी महाराज और प.पू. गुरुजी के हस्ताक्षर की प्रतिलिपि युक्त चाँदी के सिक्कों में धन, सम्पदा, शांति और समृद्धि की देवी लक्ष्मीजी का आवाहन करके पूजन किया गया। कई भक्तों ने प्रसादी के ये सिक्के बरकत के रूप में ख़रीदे। महापूजा की पूर्णाहुति के उपरांत **प.पू. गुरुजी** ने धनतेरस का सही अर्थ बताते हुए मर्मयुक्त आशीर्वाद दिया—

...आज धनतेरस के दिन बाहर जगत में और सत्संग में भी लक्ष्मी के प्रतीक रूप सिक्के का पूजन करके 'लक्ष्मी पूजन' संपन्न करते हैं। हमने भी महापूजा में प्रतीक के रूप में सिक्के के अंदर लक्ष्मीजी का आह्वान करके पूजन किया। हर साल मैं बात करता हूँ कि ***हमारी सच्ची लक्ष्मी-सच्चा धन तो प्रगट सत्पुरुष भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, प्रेमस्वामी, शास्त्रीस्वामी, विज्ञानस्वामी, भक्तवत्सलस्वामी जैसे भगवत्स्वरूप संत हैं। इनका पूजन ही हमारा लक्ष्मी पूजन***

है। माथे पर या चरणों में टीका लगाना तो प्रतीक है कि हमने लक्ष्मी पूजन किया। ***'चरणों में शीश नमामि दीनता उच्चारिये।' अपने आपको न्यून समझ कर पूजन करना, वो सच्चा लक्ष्मी पूजन है। न्यून समझना मतलब—भक्तों के पास मैं कुछ नहीं हूँ। क्योंकि ये सारे भक्त दिव्य हैं; अक्षरधाम-अनिर्देश से आये हुए हैं, इन्हें परदेसी समझना।*** *यहाँ के सत्व, रज, तम गुण से परे समझना और इनके प्रति दिव्यभाव रखना। हमें वैसे तो कोई मनुष्यभाव नहीं आता, दिव्यभाव-दिव्यभाव रहता ही है, लेकिन इनके प्रति तनिक भी मायिकभाव हमें न रहे।*

काकाजी ने मनुष्यभाव और मायिकभाव का अंतर बताया था। हमें मनुष्यभाव तो आता ही नहीं है, इसलिए कई बार बोलते ही हैं कि संत हम जैसे नहीं हैं, हमसे अलग हैं। पर, मायिकभाव में कई बार ऐसा हो जाता है कि स्वामी ने ये ठीक नहीं किया, इसके बदले ऐसा करना चाहिये था। ये भी न हो ऐसी आज के दिन ख़ास प्रार्थना करनी है कि साधु इतना ठीक करता है; इतना ठीक नहीं करता, वो मायिकभाव भी हमारे भीतर से आज टल जाए, ऐसी महाराज-गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

सहज ही प्रश्न भी उठता है कि यह कैसे टल पाएगा? तो, गुणातीत स्वरूपों को याद करके, इनकी स्मृति करके कहें कि हे संतों, हे प्रभुस्वरूप संतों, हे भगवत्स्वरूप संतों आप मेरी ऐसी रक्षा करना कि ऐसा मायिकभाव मुझ पर हावी न हो, गरजू बनकर ऐसी प्रार्थना करें। *इसके लिये आज एक मिनिट धुन करें।* ***यही आज धनत्रयोदशी की सच्ची पूजा दिल से मानें और स्वीकारें। धनतेरस की ऐसी पूजा आज ही नहीं, हम रोज़ करें।*** *रोज़ एक-दो मिनिट हम प्रार्थना कर ही सकते हैं। 24 घंटें में अगर दो मिनिट भी हमारे पास प्रभु को प्रार्थना करने का समय नहीं है, तो समझना कि हम 'प्रभु' बोलते हैं, लेकिन उनकी महिमा हमने समझी नहीं है। तो, रोज़ एक-दो मिनिट उनकी और उनके मुक्तों की भी ऐसी महिमा समझ कर-उन्हें दिव्य मान कर प्रार्थना करें कि इनके प्रति तनिक भी मायिकभाव न रहे। इसकी शुरूआत आज से ही करते हुए दो मिनिट धुन करके सभा का विसर्जन करें।*

31 अक्तूबर, दीपावली

आध्यात्मिक दृष्टि से दीपक का प्रकाश आत्मज्ञान और सत्य की विजय का प्रतीक है। अतः दीपावली का त्योहार हमें यह सिखाता है कि हमें अपने जीवन में सत्य और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित रखना चाहिए, ताकि अज्ञानता और अधर्म का अंधकार दूर हो सके। परंतु, व्यक्ति अपने बल, शक्ति या आधार पर इसे बरक़रार रखने में असमर्थ होता है। इसके लिए तो प्रभु

को प्रगटाई हुई गुणातीत विभूति का सान्निध्य अनिवार्य है, है और है ही। गुरुहरि काकाजी महाराज की उत्तर भारत के मुक्तों पर अतिशय करूणा ढली कि उन्होंने प.पू. गुरुजी द्वारा प्रेमभरी ऊष्मा प्रदान करके सबको निहाल कर दिया। इनकी सन्निधि से मुक्तों के जीवन में सभी त्योहारों का आनंद केवल बढ़ता नहीं, बल्कि दिव्यता से भरपूर होता है। इस साल भी दीपावली के महापर्व पर मंदिर का परिसर दीपकों की जगमगाहट व कृत्रिम फूलों के तोरणों से सजा था। **'अक्षरतीर्थ'** पर **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** की मूर्ति के बड़े cutout को **'अक्षर देरी'** के आकार के ढाँचे में विराजमान किया था। इसका दर्शन करके सहज ही भजन करने का मन होता।

मंदिर के आंगन को रंगोली से सजाया था और साथ ही दीपावली पर शुभाशीष देते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज की बड़ी मूर्ति का Flex लगाया था। जिस पर गुरुहरि काकाजी के स्वहस्त से लिखित निम्न आशीर्वाद अंकित थे—

जय स्वामिनारायण... जय गुरुदेव की...

आपका धंधा (व्यापार) प्रभु अत्यंत अच्छा चलावे, वो ही शुभाशीष है।

आपका दादुभाईजी-गुरुजी का जय स्वामिनारायण!

सायः 6:30 बजे के करीब कल्पवृक्ष हॉल में **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **पू. मैत्रीशीलस्वामीजी** ने शारदा पूजन निमित्त महापूजा की। महापूजा में पूजन विधि के समय भक्तों के नये साल के बही-खाते, डायरी इत्यादि पर **प.पू. गुरुजी** ने पुष्प एवं अक्षत बरसाए और **पू. सुहृदस्वामीजी** ने रोली से पूजन किया। महापूजा संपन्न होने पर दीपावली निमित्त **प.पू. गुरुजी** से निम्न आशीर्वाद प्राप्त करके, मुक्तों ने महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

...दिवाली का त्यौहार। सीताजी को रावण से छुड़वा कर, आज अवध में राम आये थे। उसकी खुशहाली में सारा अवध-सारा भारतवर्ष दिवाली मनाता है। ***दिवाली के दीप, संतरूपी सूर्य द्वारा हमारे भीतर में अखंड प्रज्वलित रहते हैं। तो, अंधकारमय जीवन से उबर कर प्रकाशमय जीवन में सतत जीते रहें।*** *सत्पुरुष की अनुवृत्ति में हम चलते रहें, जिसके फलस्वरूप सुखी रहें। घोर अंधकार की विपदा हम पर हावी न हो, महाराज, गुणातीत स्वरूपों, सभी प्रत्यक्ष-प्रगट स्वरूपों से ऐसी प्रार्थना करके काकाजी महाराज के आशीर्वाद हम प्राप्त करें। हर प्रकार के सुख से सदैव सुखी, समृद्ध और सर्वथा संपन्न रहें, यही आज के दिन महाराज के चरणों में याचना और उनके आशीर्वाद आत्मसात् करने हम काबिल बनें...*

नूतन वर्ष सभा...

जमो थाळ जीवन जाऊं वारी...

जमीने जमाळुं रे जीवन मारा...

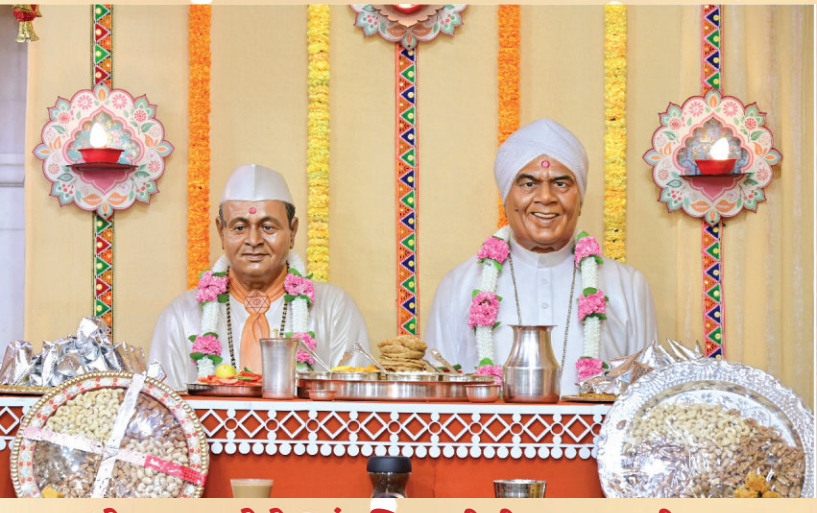

लेता जाओ रे सांवरिया बीड़ी पानन की...

अन्नकूट आरती–
चरण में शीश धरण से मिटती दुःख होरी....

2 नवंबर — अन्नकूट

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा का भारत में यह महत्व है कि पारंपरिक रूप से अब तक फसलें तैयार हो चुकी होती है और अन्न को सर्वप्रथम भगवान की प्रसन्नता हेतु अर्पण किया जाता है। द्वापर युग में श्रीकृष्ण माता यशोदा और नंद बाबा के साथ ब्रज में रह रहे थे। उन दिनों अच्छी बारिश के लिए ब्रज के लोग देवराज इंद्र का पूजन करते थे। इंद्र को इस बात की वजह से घमंड हो गया था। श्रीकृष्ण समझ गए थे कि इंद्र का अहंकार सही नहीं है। बालकृष्ण ने ब्रज के लोगों को समझाया कि वे इंद्र की नहीं, बल्कि गोवर्धन पर्वत की पूजा करें, क्योंकि ब्रज लोगों की गायों का भरण-पोषण गोवर्धन पर्वत से ही होता है और गायों के दूध से ब्रज के लोगों की आजीविका चलती है। सभी लोगों को बालकृष्ण की ये बात समझ आ गई और उन्होंने इंद्र की पूजा बंद कर दी। इससे इंद्र को गुस्सा आ गया। उन्होंने ब्रज क्षेत्र में तेज बारिश शुरू कर दी। बारिश की वजह से ब्रज में पानी-पानी हो गया था। तब सभी लोगों की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। गांव के लोग पर्वत के नीचे खड़े हो गए। लगातार सात दिनों तक बारिश होती रही, इसके बाद जब इंद्र को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उन्होंने बारिश बंद की और श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी। इस घटना के बाद से ही गोवर्धन पर्वत की पूजा करने की परंपरा शुरू हुई है। अतः **अन्न यानि अनाज, कूट यानि-पर्वत इसे 'अन्नकूट' कहा जाता है।** अन्नकूट भगवान के अद्वितीय और सर्वोच्च बल का भी प्रतीक है। दुनियाभर के मंदिरों में अत्यधिक महिमा से यह उत्सव मनाया जाता है। श्रद्धालु तरह-तरह की मिठाइयों और पकवानों से ठाकुरजी को भोग लगाते हैं। कई सारी सब्ज़ियों को एक साथ मिलाकर मिलीजुली सब्जी, कढ़ी, चावल अथवा पूड़ी आदि का प्रसाद भक्तों में बांटा जाता है। भक्तजन सालभर इसकी प्रतीक्षा करते हैं।

दीपावली पूरे देश में मनाई जाती है, पर हर जगह इसका अलग-अलग महत्व है। **गुजरात में दीपावली को नए साल-विक्रम संवत की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। गुजरात में प्रचलित पारंपरिक हिंदू कैलेंडर विक्रम संवत को महाराजा विक्रमादित्य ने ही दिया था।** इसलिए दीपावली के दिन साल का अंतिम दिन होता है और अगले दिन से गुजराती नववर्ष की शुरुआत हो जाती है। हिंदू कैलेडर के हिसाब से देखा जाए, तो यह कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की पड़वा या प्रतिपदा को आता है। परंतु, चंद्र चक्र पर आधारित भारतीय कैलेंडर के अनुसार गुजरात में कार्तिक महीना साल का पहला महीना होता है और **यही 'बेसतु वर्ष' होता है, जब सब एक-दूसरे को 'साल मुबारक' कह कर हर्ष व्यक्त करते हुए नए वर्ष का स्वागत करते हैं।** पहले व्यापारी वित्तीय नव वर्ष की शुरुआत इस दिन से करते थे।

इस बार पंचाग भेद के कारण 31 अक्तुबर को दीपावली मनाने के बाद 2 नवंबर को अन्नकूट मनाना निश्चित किया गया। 1 नवंबर की सुबह से बहनें-भाभियाँ अन्नकूट की सब्जियाँ काटने की सेवा के लिए तत्पर हो गईं। हर वर्ष की भाँति रात को 12 बजे के बाद, पूरी रात जाग कर **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, पू. योगीस्वरूपस्वामीजी** के साथ मिल कर कई मुक्तों ने कढ़ी, चावल और मिश्रित सब्जी का प्रसाद बनवाया। मंदिर से जुड़े आत्मीय हरिभक्त अपने घरों से सुबह 7:00 बजे से तरह-तरह के व्यंजन भोग के रूप में लेकर आने लगे। सबके सहयोग से व्यंजनों को कलात्मक रूप से 'कल्पवृक्ष' हॉल में श्री ठाकुरजी के समक्ष लगाना आंरभ हुआ।

मंदिर में पीछे के पार्क में बनाये गए सभा खंड की पृष्ठभूमि पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ अंकित करके भक्तों की ओर से प्रार्थना लिखी थी—

हे प्रभु ! आपके अल्प संबंधी को भी हम माथे का मुकुट मानें, ऐसी आपसे प्रार्थना...

सुबह करीब 9:30 बजे प.पू. गुरुजी की निश्रा में, **पू. डॉ. पंकज रियाज़, पू. अजय तनेजाजी, पू. राजीव शर्माजी** ने स्वामिनारायण धुन व भजनों से अन्नकूट सभा का आरंभ किया। मंदिर से नए ही संपर्क में आए **पू. अश्विनी भारद्वाजजी** ने भी स्वरचित भजन—**भक्तों का मंदिर है आजा मेरे प्यारे...** प्रस्तुत किया। **पू. सोनूजी** एवं **पू. मोहित गर्गजी** ने अन्नकूट-नूतन वर्ष निमित्त आशीष याचना की और अंत में दीवाली कार्ड में लिखित संदेश को समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीष दी—

*...दिवाली के संदेश की शुरुआत में **'स्वामिश्रीजी'** लिखा है। आप में से कइयों ने पहले देखा होगा कि कोई भी लेटर या आर्टिकल की शुरुआत करते हुए सबसे पहले **'श्री'** शब्द लिखा जाता था। पर वह अधूरा है, क्योंकि **'श्री' शब्द में एक ही विभूति 'भगवान' का ज़िक्र होता है। जबकि स्वामिश्रीजी में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी, जो श्रीजी महाराज के अनादि के सेवक हैं, जिनके द्वारा हमारी गुणातीत परंपरा शुरु हुई इतना ही नहीं, अक्षुण्य रूप से अखंडित रही, उनका उल्लेख है। इसलिये दिवाली के संदेश में सबसे पहले 'स्वामिश्रीजी' लिखा है।** 'भक्त और भगवान' का ज़िक्र किया हुआ है। **भगवान अपने हरेक भक्त के हृदय में बैठे हैं और ऐसे मुक्तों द्वारा हमारे संग विचरण भी करते हैं। ये बात समझ में आ जाये, हमारे व्यवहार में आ जाए, तो अहंकार-अभिमान ये सब टिक ही नहीं पाएगा।** यदि हमें हरेक में प्रभु नज़र आएँगे, तो अहंकार टिक ही नहीं सकता। हमारी ये भावना-समझ हमेशा बरक़रार रहे, यही आज के दिन भगवान स्वामिनारायण और गुणातीतानंदस्वामीजी के चरणों में सबसे पहली प्रार्थना। **मेरे हर लेटर में, हर आर्टिकल में जय स्वामिनारायण तो आता ही है, लेकिन अब साथ में अचूक जय भारत भी लिखा आता है, वह क्यों? तो, इसलिए कि भगवान भरतखंड में ही प्रगट रहे हुए हैं***

और आगे भी भरतखंड में ही रहेंगे। हाँ, यहाँ से फिर देश-विदेश में यात्रा के लिये ऐसे गुणातीत स्वरूपों द्वारा जाएँ और वहाँ के मुक्तों को आनंद कराएँ, निर्भयता, निश्चिंतता प्रदान करें, वो बात अलग है। पर, हम ये भूलें नहीं कि भारत में भगवान अखंड प्रगट हैं।

गुणातीतानंदस्वामीजी के समय एक भगत ने उनसे कहा कि आसुरी प्रवृत्तियाँ प्रबल होती जाती हैं। तब ***गुणातीतानंदस्वामीजी*** *ने जो उत्तर दिया है, वो दिवाली के संदेश में लिखा है। स्वामी ने कहा कि पहले से अभी परिस्थितियाँ सानुकूल हैं। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि* ***यहाँ अभी भी मैं आपके साथ हूँ। वो आसुरी वृत्तियाँ तुम पर हावी हो नहीं सकतीं...***

1981-82 में जो बजट आया था, वो थोड़ा hard था। तो, सेवकों ने काकाजी से इस बारे में सहज ही कहा। तब काकाजी ने गुणातीतानंदस्वामी की ये बात पढ़वाई। ***तब की लिखी हुई यह बात आज भी हरेक को सत्य लगती होगी। क्योंकि जैसे हमारे मोदी साहेब प्रधानमंत्री के रूप में भारत का योग्य नेतृत्व कर रहे हैं। हरेक की अपेक्षा हमेशा यही है कि आगे भी राजकीय-सामाजिक डोर मोदी साहब के हाथों में रहे, ताकि भारत safe and secured हो और महाराज ये प्रार्थना ज़रूर सुनेंगे।*** *देखो, आप सबने भी तालियाँ बजाईं, इसलिये यह किये बिना महाराज का भी छुटकारा नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी के कारण देश चीन, रूस, अमेरिका के शिकंजे में आते हुए बच गया और स्वतंत्र रूप से भारत का झंडा हर जगह लहरा रहा है। इसकी वजह प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी हैं। अरब देश में भारत का जो झंडा लहरा रहा है, उसकी वजह भी मोदी सरकार है। इसके लिए हम किसी और को धन्यवाद नहीं दे सकते, प्रभु ने ये सारे संयोग setup किये हैं।*

तो, सबसे पहला धन्यवाद भगवान, संत और सत्संगी का। ***मुक्त समाज-भक्तों के गण की प्रबल शक्ति के कारण ये सारा ऐसा gear up-ऐसा setup रहा हुआ है और इसी तरह हमेशा चलता भी रहेगा, बरक़रार रहेगा, जो भारत का झंडा आगे रखते हुए बुलंदी की सीमा पर ज़रूर ले जायेगा। इसके लिए सकारात्मकभाव-positivity रखें।*** *अरे, नहीं-नहीं ये बातें तो होती रहती हैं, ऐसा थोड़ा होता है। ऐसी negative thinking हम न आने दें।* ***प्रभु ने आशीर्वाद दिया है कि भरतखंड में मैं अखंड प्रगट रहूंगा, तो वे अचूक रहेंगे और गुणातीत परंपरा अखंडित रहेगी ये दृढ़ विश्वास, दृढ़ भरोसे के साथ हम आगे बढ़ते रहें-संतों को समर्थन देते रहें, यही आज के दिन आप सबको और समग्र भारतवर्ष को, समग्र भरतखंड को विनती है*** *कि मोदी जैसे प्रधानमंत्री को हमेशा आगे रख करके, परदेस के अंदर भी हम अपना ध्वज लहराते रहें। इनके प्रति कृतज्ञभाव-humbleness रखें। ऐसा न सोचें कि हम भी इनके जैसे हैं, इनके बराबर कोई हो नहीं सकते। क्योंकि सारा भारत का भविष्य इनके हाथों में है। भारत का भावी-उसकी सत्ता*

इनके पास है। इन्हें आगे रखते हुए हम कृतज्ञभाव व्यक्त करें, हमेशा झुकते रहें यही आज के दिन की ख़ास प्रार्थना।

निर्दोषबुद्धि और सुहृदभाव की हम जो बातें करते हैं, वो निष्ठा पक्की होने पर सिद्ध होगी। ***स्वामीजी बोलते थे कि हम प्रगट की निष्ठा पक्की कर लें, तो सुहृदभाव, निर्दोषबुद्धि और एकता सब उसके पीछे-पीछे automatic आते ही रहेंगे। उसके लिये हमें प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा। तो भक्तों के प्रति सुहृदभाव, निर्दोषभाव, आत्मीयता रखें कि ये सारा समाज मेरा है, भक्तों का सारा समूह मेरा है, हम उनके हैं इस समझदारी से हम जीयें और प्रभु के होकर रहें। दूसरों को भी ऐसी प्रेरणा मिले। कोई ग्रह-पनौती जैसी चीजों से विचलित हुए बिना, प्रगट की-प्रभु की निष्ठा पकड़ कर बेहिचक आगे बढ़ते ही रहें,*** *यही आज के दिन की प्रार्थना कह दो, काकाजी महाराज के आशीर्वाद कह दो, यही मेरा कहना है।* ***इसके लिये यह तरकीब है कि हम अपनी सोच न पकड़े रखें, बल्कि जिन्होंने प्रभु की सत्ता अपने हाथों में रखी है, ऐसे संत की मरज़ी के मुताबिक़ हम चलते रहेंगे, तो कोई चीज़ हमारे ऊपर गलत ढंग से हावी नहीं हो पाएगी।*** *इन सबसे बचने के लिये स्वामी ने ये रास्ता बताया कि भगवान, संत और सत्संगी—ये समाज की मरज़ी के मुताबिक़... मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि* ***भक्तों को खूब अपनेपन का भाव है, तो हरेक के साथ हम अपनेपन से जुड़े रहें, हरेक को अपनापन व्यक्त करें, हरेक से अपनापन लें यही करने लायक है। प्रभु एक ही चीज़ चाहते हैं कि प्रगट प्रभु को कर्ता, हर्ता और नियंता मानकर हम जीयें, ऐसी हमारी जीवनशैली बने।*** *काल, कर्म, माया का प्रभाव हम पर न रहे, सिर्फ प्रभु, संत और सत्संगियों का ही प्रभाव हम पर रहे। हम ये बोलते हैं, लेकिन प्रसंग पर भूल जाते हैं। तो अब यह न बने, हम सिर्फ प्रभु के ही बल से जीएँ, उन्हें ही आगे रख कर, उनके हो कर जीएँ, यही आज के दिन माँगना है-आशीष याचना करनी है और... प्रभु हमें यह दें, इसका विश्वास रखते हुए आगे कदम उठाना है।*

सदा सुखी, स्वस्थ और समृद्ध रहने का ये तरीका है कि प्रगट प्रभु को कर्ता-हर्ता मान कर, हमारी हरेक प्रवृत्ति उनकी स्मृति के साथ, उनके बल का आह्वान करके हम करते रहें, तो automatically सारी चीज़ें साकार हो जाएँगी। ऐसा हो, यही आज के नूतन वर्ष की प्रार्थना-आशीष याचना।

सभा पूरी होने के बाद प.पू. गुरुजी, संतगण एवं हरिभक्त कल्पवृक्ष हॉल में गए। वहाँ **पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. पंकज रियाज़जी, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा, पू. हृदय वर्मा, पू. चिराग मोन्डे, पू. ऋषभ नरुला, पू. उज्ज्वल एवं सेवक विश्वास ने थाल गाकर श्री ठाकुरजी को भोग लगाया।** इस दौरान बहनों-भाभियों ने सभा खंड में लगाई गई screen पर आरती के दिव्य दर्शन किए। तत्पश्चात् अन्नकूट का अनमोल प्रसाद लेकर सभी धन्य हुए।

प.पू. गुरुजी की निश्रा में
पू. सुहृदस्वरूपदासस्वामीजी का हीरक जन्मोत्सव...

60 हाँ जी

पूज्य
सुहृदस्वरूपस्वामीजी
हीरक जयंती...

सुहृदस्वामी कैसे निर्मानी हैं कि इनके द्वारा सारा मंदिर चलता है
लेकिन उसकी इन्हें तनिक भी consciousness नहीं है...

-प.पू. गुरुजी

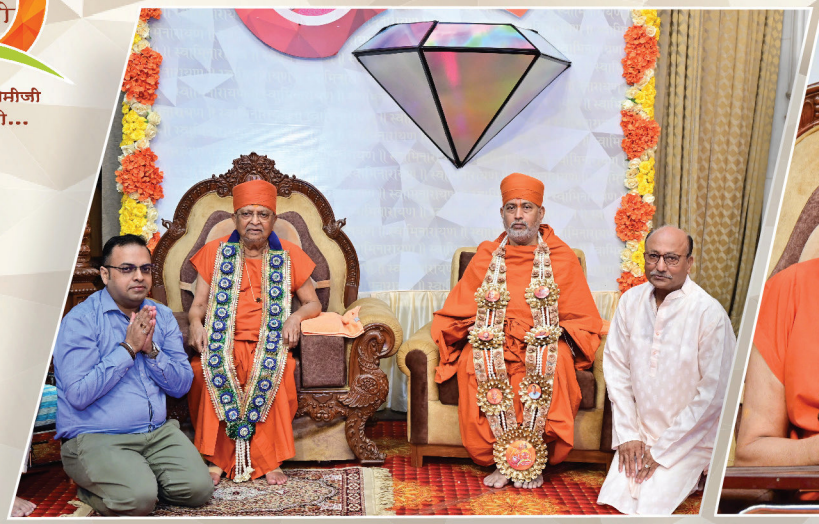

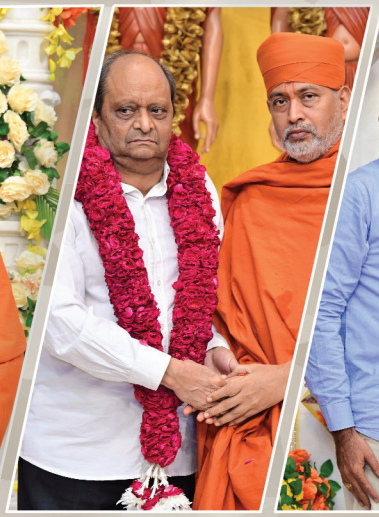

दिल से सुहृदस्वामी के जितना गुण लेंगे, उतना हमारे अंदर वो गुण आएंगे... -प.पू. गुरुजी

पू.सुहृदस्वामीजी को हार अर्पण...

हीरक जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में हरिभक्तों द्वारा स्मृति भेंट अर्पण...

पू. पूजा चावलाजी को उनके 60वें जन्मदिन निमित्त स्मृति भेंट...

12 अक्तूबर - विजयादशमी — गुणातीत स्वरूपों के कृपा पात्र पूज्य सुहृदस्वरूपदासस्वामीजी का 60वाँ जन्मदिन!

'विजयादशमी' यानि— जीत का प्रतीक! दशहरा भगवान राम की रावण पर विजय का उत्सव है, जो अच्छाई की बुराई पर जीत को दर्शाता है। दशहरा एक आनंद का पर्व है जो हमें यह याद दिलाता है कि बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हों, उन्हें सत्य और नैतिकता से पराजित किया जा सकता है। यह नवरात्रि के अंत का प्रतीक है, जो देवी दुर्गा को समर्पित नौ रातों का त्यौहार है। इस त्यौहार में घरों और सार्वजनिक स्थानों को रोशनी, फूलों और रंगोली से सजाया जाता है।

और... गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए तो **'विजयादशमी'** यानि— केवल प्रभु को ही जीवन का आधार मान कर, अपने मन-बुद्धि के मूल्यांकनों, तर्क-वितर्कों, आंतरिक व बाहरी प्रलोभनों, लौकिक-अलौकिक बड़प्पन एवं प्रशंसा-लालसा पर विजय प्राप्त करने की प्रार्थना करने का मंगलकारी दिन! तभी तो सन् **1965** में **गोंडल** में आज ही के दिन, **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** एवं उनके उत्तराधिकारी **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** को **पार्षदी दीक्षा** देकर दिव्य संकेत दिया कि उनके वरद् हस्तों से दीक्षित ऐसे प्रभुधारक समर्थ सारथी के बल, हूँफ, प्रेरणा से जो जीवन जीएँगे, उनका दर्शन करके उनकी सेवा व सेरेछाया में जो रहेंगे, वे अपने अन्तर्मन के शत्रुओं पर सरलता से 'जय' प्राप्त कर सकते हैं।

गुरुहरि काकाजी महाराज एवं सभी **गुणातीत स्वरूपों** से भागवती दीक्षा प्राप्त करके, दिल्ली मंदिर एवं **प.पू. गुरुजी** को समर्पित हुए **मृदुभाषी मूक सेवक-साधु पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** का जन्मदिन भी इसी सौभाग्यशाली दिन होता है। **इस वर्ष उन्होंने षष्ठीपूर्ति यानि 60 वर्ष पूर्ण किए।** अतः मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में प.पू. गुरुजी की निश्रा में सत्संग सभा का आयोजन था। श्री ठाकुरजी को सुंदर कृत्रिम फूलों से सजाया था। हीरक जयंती को दर्शाते हुए Diamond के आकार की लटकनें लगाई थीं। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे पूज्य सुहृदस्वामीजी की षष्ठीपूर्ति निमित्त बनाया logo लगाया था। जिसमें **60** का था, '6' के घेरे में पू. सुहृदस्वामीजी का पूजन करते हुए प.पू. गुरुजी की मूर्ति और '0' के घेरे में हाथ जोड़े हुए चित्र के आस-पास लिखा हुआ **'हाँ जी'** पू. सुहृदस्वामीजी द्वारा अपनाए **जीवनमंत्र** को दर्शाता था कि प्रत्येक संजोगों में उन्होंने प.पू. गुरुजी को हमेशा **'हाँ जी'** ही कहा है। पू. सुहृदस्वामीजी ने प.पू.

गुरुजी और संबंध वाले मुक्तों के प्रति जो भक्ति अदा की है, उसके फलस्वरूप पंजाब, मुंबई, गुजरात, यू.पी. एवं स्थानीय भक्त भक्तिभाव से उनका 60वाँ जन्मदिन मनाने सायं 7:00 बजे 'कल्पवृक्ष हॉल' में एकत्र हुए। सभा की शुरुआत में **पू. अनूप टांगरीजी (जगरांव)** ने दशहरे के उपलक्ष्य में **भगवान श्री रामचंद्रजी** का भजन—**'रामजी की निकली सवारी...'** प्रस्तुत किया।

तदोपरांत निम्न संतों-मुक्तों ने **पू. सुहृदस्वामीजी** की छुपी सेवाओं, वात्सल्य और प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी प्रीति का वर्णन करते हुए माहात्म्य दर्शन कराया।

पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी— ***सुहृदस्वामीजी दिल्ली मंदिर के नींव के साधु हैं।*** *सुहृदस्वामीजी ऐसे संत हैं, जिन्होंने सभी गुणातीत स्वरूपों को उनकी पसंद के अनुसार भोजन करवा कर, सभी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त की है। हरिप्रसादस्वामीजी जब भी दिल्ली आते थे, तो सबसे पहले रसोई में जाते थे...*

गुरुजी की आज्ञा अनुसार सुहृदस्वामीजी 40 वर्ष से भक्तों की सेवा कर रहे हैं। समुह जीवन में प्रसंग बनते ही हैं और बनेंगे भी या हमारी प्रगति कराने के लिए जब गुरुजी नाराज़गी ग्रहण करते, तब ***गुरुजी की महिमा समझा कर सुहृदस्वामी सभी को संभालते हैं व पुनः positive कर देते हैं।*** *संतों, सेवकों व भक्तों को मन की कठिन स्थिति में सुहृदस्वामी ने खूब संभाला है, यह उनका छुपा गुण है।*

गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया है कि तू भजन करेगा, तो मंदिर में किसी चीज़ की कमी नहीं होगी, यानि उनके भजन में ऐसा सामर्थ्य है कि गुरुजी उन्हें कहते हैं कि तू भजन करेगा, तो क्या नहीं हो सकता!

पू. पुनीत गोयलजी— *गुरुजी की कथा-वार्ता में अकसर सुना है कि भगवा रंग धारण करके उसे सार्थक करना है यानि* ***अपने आप को ख़ाक कर देना।*** *हमारे सुहृदस्वामीजी इस बात का symbol हैं। जिस तरह गुरुजी ने गुणातीत परंपरा की legacy को अखंड रखा है, उसी तरह काकाजी और गुरुजी की legacy को सुहृदस्वामीजी ने रखा है।*

पू. अनिल शर्माजी— *पू. सुहृदस्वामीजी ने गुरुजी की अल्प से अल्प आज्ञा में कभी अपनी बुद्धि नहीं लगाई। केवल* ***'हाँ जी'*** *कहना ही अपने जीवन का सिद्धांत बनाया।*

पू. प्रमोदभाई— *हमारा सौभाग्य है कि वडोदरा के सोखड़ा गाँव में जहाँ स्वामिनारायण मंदिर है, वहाँ के हम निवासी हैं। संतों और हरिभक्तों की सेवा का हमें मौका मिलता है और संत भी*

गाँव वालों को कभी कोई दिक्कत आने पर उसे दूर करने में कभी पीछे नहीं रहे...

पू. पवन शर्माजी (जगरांव)— *सुहृदस्वामीजी 'माँ' जैसे साधु हैं।* *कोविड महामारी के दौरान, सुहृदस्वामी सभी भक्तों के साथ निरंतर touch में रहे। हफ़्ते में दो बार फोन करके तबीयत की जानकारी लेते थे और कुछ चाहिए यह भी पूछते थे। यह सुहृदस्वामीजी के प्रेम व माँ जैसी ममता को दर्शाता है। गुरुजी ने एक बार सभा में यह बात करी थी, जिस प्रकार वैष्णो देवी की यात्रा तब ही संपूर्ण कही जाए, यदि भैरवनाथ मंदिर के दर्शन करे हों। इसी प्रकार मंदिर में श्री ठाकुरजी और गुरुजी के दर्शन के पश्चात् सुहृदस्वामीजी के दर्शन करके आपकी यात्रा पूर्ण कही जाए।*

प्रासंगिक उद्‌बोधन की श्रृंखला के दौरान **पू. उज्ज्वल** ने प्रार्थना रुप गुजराती भजन— **'मारे स्वामी ने राज़ी करवा ज छे...'** प्रस्तुत किया। **सेवक पू. नक्षत्र** ने काव्यात्मक शैली में **पू. सुहृदस्वामीजी** को नमन किया। **पू. सुहृदस्वामीजी** की सरलता व साधुता के गुणों का वर्णन करती कविता का पठन **पू. राकेशभाई** ने किया और पू. सुहृदस्वामीजी के लिए रचित भजन— **'संत की दीक्षा सबसे पहले, दिल्ली में ली आपने...' डॉ. पू. दिव्यांग** ने प्रस्तुत किया।

साधक के जीवन में कुछ क्षण ऐसे आते हैं कि प्रभुचरणों-गुरुचरणों में प्रार्थना करके आशीर्वाद मांगना उसका अधिकार होता है, सो **पू. सुहृदस्वामीजी** ने भी जन्मदिन निमित्त बहुत ही अल्प शब्दों में निम्न प्रार्थना की—

...गुरुजी के श्रीचरणों में यही प्रार्थना है कि आपकी व आपके भक्तों की सुहृदभाव से सहर्ष सेवा करूं, क्योंकि आपने कहा है कि हम सभी में जितना आपसी सुहृदभाव होगा, उतना आपका देह तंदुरुस्त रहेगा। आपका स्वास्थ्य हमेशा निरामय रहे, यही मेरी आरज़ू है।

और... मुंबई-पवई केन्द्र की ओर से ख़ास इस दिन के लिए आए **प.पू. राजुभाई ठक्कर** ने गुरुहरि काकाजी महाराज के साथ के अपने प्रसंग बताते हुए निम्न आशीर्वाद दिया—

पू. सुहृदस्वामीजी केवल दिल्ली मंदिर ही नहीं, बल्कि पूरे गुणातीत समाज के लिए 'कोहिनूर हीरा' हैं...

इनके संपर्क में जो आएगा, वो हीरा बन जाएगा। गुरुहरि काकाजी महाराज के सान्निध्य में हम ताड़देव में भगवान भजने आए, तो उन्होंने बातें करते हुए कुछ सूत्र दिए—

- *मेरा और पप्पाजी का संबंध कभी गिनना नहीं।*
- *मेरी और हरिप्रसादस्वामीजी की एकता में कभी अपना दिमाग नहीं लगाना।*

❖ *मुझसे अधिक कांतिकाका की सेवा करना तो, मैं आप पर ज़्यादा राज़ी।*

❖ *मुकुंद मेरा बेटा है!*

काकाजी ने अपना वारसा गुरुजी को दिया। वे काकाजी के पुत्र हैं! तो, सोचो गुरुजी के पुत्र सुहृदस्वामी कैसे होंगे! सुहृदस्वामी के जीवन से हमें यह सीखने को मिलता है कम बोलो और ज़्यादा सेवा करो। ***आपकी सेवा ही आपका प्रचार, उपदेश व दर्शन बन जाएगा...*** *सुहृदस्वामी सभी भक्तों के 'सुहृद' बने हैं, तो आज यह समाज खिला है... इससे गुरुजी के अंतर में ठंडक है।*

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने अपनी प्रसन्नता के पात्र पू. सुहृदस्वामीजी पर आशीष वर्षा की—

...सुहृदस्वामी के बारे में सभी वक्ताओं ने जो गुणानुवाद गाये, इससे ख्याल पड़ा कि मंदिर के लिये वे कितने ज़रूरी-अनिवार्य हैं कि जिनके बिना मंदिर चल नहीं सकता, हम कल्पना ही नहीं कर सकते। ऐसे सुहृदस्वामी कितनी महत्वपूर्ण विभूति होगी। 'विभूति' शब्द मैं इसलिये उपयोग करता हूँ कि काकाजी ने मुझे गुणातीतानंदस्वामी की एक बात पढ़वाई थी कि 'विभूति हो तो मंडल चलता है...' *वर्ना मंडल stable नहीं रहता, क्रिया नहीं कर पाता है। विभूति की सेरेछाया में मंडल की प्रवृत्ति चलती रहती है।* ***ऐसे सुहृदस्वामी के कारण ही ये मंदिर प्रवृत्तिशील है।***

मंदिर के ground floor के corridor में सुहृदस्वामी के कुछ photographs लगाये हैं। आज उनकी हीरक जंयती है, तो स्वाभाविक ही संतों-सेवकों को एक भावना होगी कि सुहृदस्वामी के कार्य की सबको थोड़ी झांकी हो जाए। वर्ना ***किसी भी जगह, कभी भी सुहृदस्वामी का photograph लगा हुआ नहीं देखोगे। ये बहुत बड़ी गहराई की चीज़ है। हमने तो उनकी photograph देखी नहीं, वो बात ही अलग है। लेकिन उन्हें भी कभी मन में ख्वाब नहीं आया होगा कि कोठारीस्वामी वगैरह सबके photo हैं, पर गुरुजी ने मेरा किसी जगह पर photo रखवाया ही नहीं। इन्हें कभी ये विचार नहीं आयेगा। ये इनका सबसे बड़ा बड़प्पन है और ऐसी कक्षा पर हम सबको रहना है, जाना है। सुहृदस्वामी आज सबके लिये ये प्रार्थना करें और आशीर्वाद दें। काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी से आजीजी-विनती करें कि दिल्ली के समाज में किसी को भी अपनी पूजा करवाने का संकल्प न उठे। ऐसा निर्मानीभाव आप हरेक को बख़्शीश में देना।*** *एक तो* ***ये बात कहनी है, जो बहुत ज़रूरी और बहुत अनिवार्य है।***

दूसरी बात, हम इनका ये गुण जितना दिल में रखेंगे, इतना हमारे अंदर वो गुण आयेगा। तो,

सुहृदस्वामी का गुण प्राप्त करने का आज सीधा-सादा आसान तरीका बता रहा हूँ, जिसे ***काकाजी*** *ने भी कई बार दोहराया है—*

कोई कहशे आ संत तो बहुत सारा रे, खरा कल्याणना करनारा रे,
एटलो ज गुण कोई लेशे रे, ए तो ब्रह्ममहोल जई पुगशे रे...

काकाजी तब समझाते थे कि गुण लेने में तुम्हारा क्या जाता है? तो, सुहृदस्वामी जैसे संत का भीतर में दिल से गुण लें कि ***स्वामी कैसे निर्मानी हैं कि इनके द्वारा सारा मंदिर चलता है, लेकिन उसकी इन्हें तनिक भी consciousness नहीं है, जिसे कहते हैं न कि उन्हें अस्मिता नहीं है कि मेरी अनुपस्थिति होने पर मंदिर में गड़बड़ हो जायेगी। वो मानते हैं कि मैं नहीं भी होऊँगा, तो गुरुजी सब संभाल लेंगे। इतना भरोसा अपने बड़े संत का होना, वो ही सेवक के लिये एक achievement-attainment है, ये इन्होंने अपने आप पा ली।*** *हम सब भी बड़े संत के ऐसे भरोसे के पात्र बनें, यही आज के दिन प्रार्थना...* ***सुहृदस्वामी बहुत अच्छे, बहुत अच्छे न करके, केवल इनके नक्शेकदमों यानि मूक रहकर साधु की मरज़ी के मुताबिक़ सेवा करते रहें,*** *यही महाराज, स्वामी, सभी गुणातीत स्वरूप हम सब पर आशीर्वाद बरसाएँ...*

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के बाद संतों व सेवकों की ओर से बनाया गया हार, **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी, पू. सरयुविहारीस्वामी, पू. आनंदस्वरूपस्वामी** और **पू. योगीस्वरूपस्वामी** ने **प.पू. गुरुजी** को अर्पण किया और फिर अपनी प्रसादी का यह हार प.पू. गुरुजी ने ही **पू. सुहृदस्वामीजी** को पहना कर, **गुरुहरि योगीजी महाराज** की स्मृति कराते हुए उनकी पीठ पर धब्बा लगा कर मानो अपने अंतर की प्रसन्नता व्यक्त की।

अक्षरज्योति की बहनों द्वारा बनाया गया हार **पू. हरिवदनभाई दोशी** व **पू. आशीष पुरीजी** ने पू. सुहृदस्वामीजी को अर्पण किया। प.पू. गुरुजी की आज्ञा से पिछले चालीस साल से पू. सुहृदस्वामीजी मंदिर में श्री ठाकुरजी का भोग बनाने की सेवा कर रहे हैं, सो सेवक **पू. नीरवदास** व **पू. नक्षत्र** ने सभी की ओर से उन्हें एक विशिष्ट उपहार दिया। मर्तबान के आकार की शीट में medium density fiberboard (mdf) Toffee बना कर डाली हुईं थी, इन पर कई मुक्तों ने पू. सुहृदस्वामीजी की विशेषताएँ लिखी थीं। हीरक जयंती के अवसर पर **प.पू. गुरुजी** ने **पू. सुहृदस्वीमीजी** को शाल ओढ़ा कर उनकी निरपेक्ष सेवाओं के लिए सम्मानित किया।

अक्षरज्योति की बहनों ने भी प्रार्थना रूप card बनाया था, जिसके मुखपृष्ठ पर उत्सव के लोगो के अनुसार, हाथ जोड़ कर **'हाँ जी'** का चित्र बनाया और backside में **रीढ़ की हड्डी**

बनाई थी, जो प्रतीक थी कि **पू. सुहृदस्वामीजी** मंदिर की रीढ़ की हड्डी के समान हैं। पू. सुहृदस्वामीजी ने जब रसोई की सेवा संभाली, तब **प.पू. गुरुजी** ने उन्हें सूत्र दिया था—

'रसोई करते हुए हमेशा स्वामिनारायण करके नमक डालना।'

प.पू. गुरुजी के उस वचन का आज भी वे लगातार पालन करते हैं, जिसके फलस्वरूप उनके द्वारा बनाया भगवान का प्रसाद सबको राज़ी कर लेता है। अतः card के अंदर के भाग में दिखाया था कि एक कढ़ाई में सब्ज़ी बन रही है और उसके ऊपर एक हाथ नमक डाल रहा है। गोलाई में उसके चारों ओर स्वामिनारायण-स्वामिनारायण लिखा था। साथ ही बहनों ने यह प्रार्थना लिखी थी—

प्रभु नाम का नमक डालो... काकाजी ने बताया!
प्रथम प्रभु फिर कदम बढ़ाएँ... पप्पाजी ने सिखाया!
आपकी तरह हम भी इस ही राह पर अग्रसर रहें,
ऐसी आपकी हीरक जयंती पर प्रभु चरणों में प्रार्थना!

प.पू. गुरुजी ने भी इस card पर आशीर्वाद लिखा—

तू मंदिर की backbone बना है! इसी रीति-नीति से काकाजी का पूर्ण रूप से सेवन करके उन्हें पहचानना...

मंदिर से जुड़े युवकों ने अपनी भावना प्रकट करते हुए पू. सुहृदस्वामीजी को हार पहना कर विशिष्ट भेंट अर्पण की। पू. सुहृदस्वामीजी के प्रति के प्रेम की फुहार यहीं समाप्त नहीं हुई, पंजाब, मुंबई, गुजरात, हरियाणा, यू.पी. एवं स्थानीय मुक्तों ने हार व स्मृति भेंट अर्पण करके उनकी निस्वार्थ भक्ति को वंदन किया।

दशहरे के अनुसार **पू. विजयकिशोरजी** व **पू. समीरभाई दवे** का जन्मदिन था, सो पू. सुहृदस्वामीजी ने पू. विजय बाबु को व पू. शैलेशभाई आचार्य ने पू. समीरभाई दवे को हार पहनाया।

9 अक्तुबर को पू. पूजा चावलाजी का भी 60वाँ जन्मदिन था, सो **पू. स्वाति दीदी** व **पू. दीक्षा दीदी** ने उन्हें हार पहनाया और माला पकड़े हुए प.पू. गुरुजी के हाथ के मॉडल वाली **स्मृति भेंट** उन्हें दी। जिस पर प्रार्थना लिखी थी—**हे भजनीक गुरुजी, भजनीक बना देना!**

पू. सुहृदस्वामीजी की सेवाओं का माहात्म्य केवल सभा तक सीमित नहीं रहा, पंजाब के भक्तों की ओर से विशिष्ट प्रसाद का सारा आयोजन किया गया था। सो, उत्सव पूरा होने के पश्चात् सभी मुक्तों ने प्रसाद लेकर अपने गंतव्य स्थान के लिए प्रस्थान किया।

व्रतोत्सव सूची

1. दि.13.1.'25, सोमवार – पौषी पूर्णिमा, लोहड़ी
   मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का दीक्षा दिन
   प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन
2. दि.14.1.'25, मंगलवार – मकर संक्रांति-भिक्षादान पर्व, धनुर्मास समाप्त
3. **दि.25.1.'25, शनिवार – एकादशी, व्रत**
   ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
4. **दि.26.1.'25, रविवार – प्रजासत्ताक दिन**
5. दि. 2.2.'25, रविवार – बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती
   सद्. निष्कुळानंदस्वामीजी, सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी
   एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती
6. दि. 3.2.'25, सोमवार – गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 73वीं वर्षगाँठ
   दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव
7. दि. 5.2.'25, बुधवार – अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामीजी की प्राकट्य तिथि
8. दि.15.2.'25, शनिवार – ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी का 90वाँ प्राकट्य दिन
9. **दि.24.2.'25, सोमवार – एकादशी, व्रत**
10. दि.26.2.'25, बुधवार – महाशिवरात्रि, व्रत
11. दि.28.2.'25, शुक्रवार – प.पू. गुरुजी की 88वीं प्राकट्य तिथि
12. दि. 7.3.'25, शुक्रवार – गुरुहरि काकाजी महाराज के शाश्वत् स्मृति दिन निमित्त
    सायं 6:30 से 9:00 'भजन संध्या'
13. दि. 8.3.'25, शनिवार – इस वर्ष 13-14 मार्च को होली व धुलेन्डी के कारण
    प.पू. गुरुजी का 88वाँ प्राकट्योत्सव सायं 5:30 से मनाएंगे
14. दि.13.3.'25, गुरुवार – होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की प्राकट्य तिथि
    प.पू. गुरुजी का 88वाँ प्राकट्य दिन
15. दि.14.3.'25, शुक्रवार – धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि
16. **दि.26.3.'25, बुधवार – एकादशी, व्रत**
17. **दि.30.3.'25, रविवार – चैत्र नूतनवर्षारंभ, गुड़ी पडवा**

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

Install Our Mobile Applications

Bhaav Samadhi - APSM

Bhaav Samadhi

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guruji's Blessings

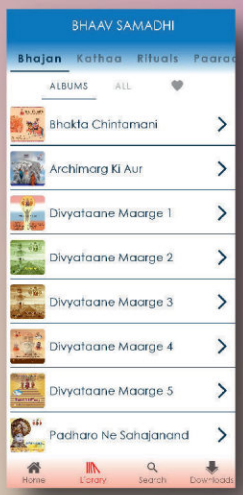

APSM

This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)

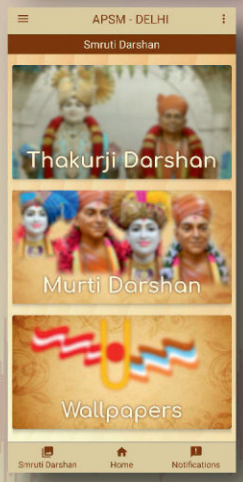

Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on WhatsApp.

Those who are not getting please save this number ***7011521488***

Save the above number by name – ***Our Temple Updates***
After saving, please send Jay Swaminarayan message on the above number and mention your name also. Thanks!

आप में से अधिकांश मुक्त ***WhatsApp*** द्वारा मंदिर में होते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया ***7011521488***

नंबर को ***Our Temple Updates*** के नाम से ***save*** कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।
धन्यवाद!

स्मृति मगन और महिमासभर हमको प्रभु बना दे
तुझ में हम में जो भी अंतर है तू उसे मिटा दे
तेरे सहारे पर ही निर्भर जीवन हो ये चाहें
ब्रह्मरूप होकर हम भक्ति करें जो शक्ति पायें
जय हो जय हो जय हो स्वामी सहजानंद की जय हो....